Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ।१७।
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

ज्येष्ठ शुक्ल ६ शुक्र] १० जून [ज्येष्ठ २७

आज देवोदासमय श्री बालकदास के डेरे
निवास अपने कमरे में पं. सन्तलाल [illegible]
कर आये थे. 'शीताभ' आया था. यह
हमारे पास ही रात को रहा.
२) बालकदास को दिये दूध के लिये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।

आज दो नोसमयभो- बालकरामकेडेरे
निवास अपने कमरे में 'श्रीनाथ'
आयाथा. रात को हमारे पास ही रहा.
आज 'डाक्टर' भी आयाथा. -

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥१३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥१४॥
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।

आजरोनोसमयभो. बालकराम केडे रे.
=) बालकरामको दिये. दूधके लिये. निवास
अपने कमरेमें. आज बुखारकी दूसरी
बारी दूटी. आज श्रीनाथजी आया था.
रातको यह हमारे पास ही रहा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।

आज दोनो समय भो. बालकरामके डेरे.
निवास अपने कमरेमें. आज पं. जीयाला
लाल कोलदार घर (मदन) गया. इसको
[illegible]ीके लिये १ [illegible] दिया.
) । साबुन. आज वे दलाल साहब आये
था. इसके साथ हमने उपेक्षा का ही
व्यवहार किया. आज [illegible] नन्दलाल
स्वार और साधु सर्वानन्दको देनेके लिये
जियालाल को दीं. श्रीनाथ आयाथा.
आजसे उन अकेले ही रहना है.

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते२२
तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।

आज सुबः यहां शौच स्नानादि किया.
दोनों समय भो. यहां.
आज टीकाश हवसे मुलाकातफिरकी
कुछ बात चीतभी हुई.
रात को उन्होने गाना भी सुनाया.
पं. वासुदेवसे भी आज खूब बातचीत हुई
एक उदासी यहां शास्त्रार्थ करने के लिये
आये हैं. उनसे सिर्फ परीचय हुआ.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा २३
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥२४॥
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।

आजसुबह ३ उठकर शौचस्नानादि यहाँ किया
[illegible]टीका साहबके दरबार में पहुंचे
फिर भोजन करनेके बाद राणासाहबने
बुलाया उनको मैंने श्रीजनेऊ और
५१ लोकोंका आशीर्वाद पत्र भी दिया.
वहाँ २ घण्टे बैठे थे. रातको टीका
साहबके पास भोजन किया. गानाभी
सुनी. २१ [illegible] देखकर राणा [illegible] ने सिर्फ
"वाह बहुत उमदा" कहा और पं. बाबु
देवने भी साथ साथ 'बहुत अच्छा' कह
डाला. राणा संस्थानके साधारण हाल
है. विशेष नहीं. निवास सन्तरी के डेरे ही.
[illegible] श्रीके पास

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥४२॥

ज्येष्ठ शुक्ल १३ शुक्र]   २६ मई   [ज्येष्ठ १४

आज प्रदोष. मौन. नियमानुसार [illegible]
आज सुबह उठकर ९ नौ बजे स्नान [illegible]
[illegible] ४ [illegible] है. [illegible]
[illegible] था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥४४॥

ज्येष्ठ शुक्ल १४ शनि] २० मई [ज्येष्ठ १५

आजसोमो वरिक्त भो- तथा मीनास पू. भीमाइंगदेमह
आज धीकालफूदव सेफुलाफालदुई. कै दासपात्र
दफाई. थोडे दि नकमार छीडडूने वाडईए.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् २५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥
प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।

आज सुबः शौचस्नानादि करके टीकासाहब के पास गया था. सितार सुनी, फिर आकर डेरे पर भोजन किया. शाम को आइ खेल देखा. रात को फिर टीकासाहब से मुलाकात हुई. आज टीकासाहब से बहुत बातें हुई. उनको कई पुस्तकों के नाम पते लिखा दिये हैं रात को फिर डेरे पर आकर भोजन.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।

ज्येष्ठ शुक्ल ९ शुक्र] २२ मई [ज्येष्ठ ७

दोनों समय भौ. डेरे मुन्शी के.
टीका साहब से शुबेरे मुलाकात हुई थी,
शाम को पं. भीमादत्त के साथ घूमने भी गया था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२९॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।

दीनों समय पं. भीमादत्त जोशी के घर भो.
और रात्री को निवास भी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥
अर्जुन उवाच
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।

दोनो समय ~~भो~~ और रात्रि निवास पं० भी- माधव ~~ओ~~ शी के घर, आज पं० वासुदेव जीसे भी बहुत बातें हुई. आजभी शामको घूमने गये थे.

आज पं० वासुदेव जीके बातोंसे यह मालूम हुआ यानें ऐसा आभास हुआ कि इनके हृदयमें कुछ ईर्ष्या का सञ्चार हो रहा है अस्तु.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥३४॥
श्रीभगवानुवाच
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

ज्येष्ठ शुक्ल ८ सोम] २९ मई [ज्येष्ठ १०

आज दोनों समय भुक्ति के कर भो·

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥३६॥
अर्जुन उवाच
अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।

(गङ्गादशहरा)
आज दोपहर भो-ठेरे मुन्शी के. और रातको पं.भीमा दत्तके यहां. कुमारदीवान सिंगसे खूब बातें हुई. रातको निवास भीमा दत्तके घर, मेरा यहां रहना पं.वासुदेवजी हृदयसे नहीं चाहते है. ऐसा आभास हुआ. पर बुद्धिमानीसे इसबातको छिपाकर ऊपरसे अखमलच ढाने की कोशिश करते है.

ami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ४६

आज [illegible] भो. [illegible] निवास पं. [illegible]
[illegible] के पर. [illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

प्रथम आषाढ कृष्ण १ सोम] १ जून सन् ३१ [ज्येष्ठ १७

आज दोनों [illegible] -
दों के घर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।

सुबः उठकर शिवमन्दिरके नीचे बागीचीमें
शौच स्नानादि किया. स्पहर भी. ...
आज भी नहीं. रात्रीमें निवास यहीं

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥५॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥६॥
जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।

सुबह उठकर शिव मन्दिर के नीचे वाली भीमे
" जा नादि किया. दोनों समय यहां भो-
जन.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥४॥

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।

श्रावण शुक्ल ४ सोम] १७ अगस्त [श्रावण ३१

आज सुबह उठकर चला सोपैदल १। बजे
नारकण्डा पहुंचा. ठ्योग से नारकण्डा २२ मील
है यहां एक दुकान मे (चाय-भी दाना खाया
)॥ चने खाये रात भर एक सराय के कमरे मे
सोया यहां करोडो पिस्सू थे और यहां ठण्ड भी
बहुत थी नींद नहीं आयी.
आज रोटी नहीं खाई.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥६॥
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।

श्रावण शुक्ल ५ मंगल] १८ अगस्त [वं० भाद्रपद १

(नागपञ्चमी)

आज सुबः उठकर चला सो पैदल 'नौला' में
१०॥ बजे पहुंचा रास्ते में -) चाय-बीड़ा ने
लिये थे. 'नौले' में स्नानादि किया यहां एक
कुमारिका मन्दिर है इसके बाहर ले बरामदे में ठह-
रा. -)॥ किसमिस -)॥ मिश्री लेकर खाई.
रात को वहे एक दुकानदार काला (रामगड अ
म्बाला) मोमी ... ब्राह्मण से रोटी ले जाकर खि
लाई. इसने 'सिस्मोर रियासत में 'कौ' में मुझे
देखा था. इसका नाम सरदार सम्मोहे इसने पहचा-
ना लिया. मैंने नहीं पहचाना. रात भर दुकान के एक
चौकी पर सोया था. 'नारकण्डा' से 'नौला' १५
मील है. उतराई बड़ी भारी थी.

ami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।

आज सुबः लाले के आग्रह से यहां रुका.
लाले का दामाद और लडकी कल रात को आयी है
आज दामाद की और ससुर की बडी लडाई हुई
बडे मुश्किल से समझौता हुआ. फिर हमने भी
भोजन यहीं किया. दोनों समय.
रात को मन्दिर में खुले बरामडे में सोया था.
आज यहां २। घण्टा खूब वर्षा हुई.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥९॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१०॥
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।

आज सुबः से ही वर्षा बडी जोर से शुरू हुई. आज भी दोनों समय भो. जा के घर सो ना मान्दिर मे. यहां आज एक ब्राह्मण ब्रह्मचारी छुट्टा आया था. इसको दो पैसे दिये थे. रात को इसके पैर रगड दिये सारा शरीर दबा दिया.

ami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGang

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाःसदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।

आज लाले की जन्मपत्री देखी १६- और थोडी मिश्री लालेने दी.
भो· दोनो समय लाले के घर लाले का नाम गोपालदास है.
आज दूसरे दुकानदार लाले के उसके बुलाने से दुकान पर गये थे· यहां से नखाई.
ब्राह्मण ब्रह्मचारी के पैर रगड दिये आज भी.
आज मशीन से बाल कटाये. इस लाले ने ही काट दिये नाई था नहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेष-

आज कोनो समय भो० जालेके पास: निकस मन्दिर में·

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

संधान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥१५॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्। नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥

आज सुबः 5 बजकर रामपुर पैदल १५ मील चलकर 11 बजे पहुंचा.
यहां एक ठाकुरद्वारे में ठहरा. यहां पुजारी एक बैरागी है. यहां एक परिया लेका बुढा ब्राह्मण ठहरा था. यह पैसे का मारा है. बैरागी ने आपा कढ़ा दिया. उस ब्राह्मण ने रोटी बनाई. फिर हम दोनों ने खाई. यह बैरागी खराब आदमी है. ब्राह्मण पैसे से बहुत दुखी है.))। चाय पीकर ना.))। किशमिश खाई. रात भर यहां सोये.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्। पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्॥१७॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं

आज सुब: उठकर चले सो १०॥ मील चलकर 'आटली' पहुंचा यहां शिव मन्दिरमें बैठा था. रास्तेमें ॥ (चायचीदाना)। छोहारा खाया. बटिलीमें १॥ घंटा बैठा था. यहां का ब्रह्मचारी भो-जन करके मेले को चला गया. ताला लगाकर बात-चीत कुछ नहीं की. फिर मैं भी उठकर यहांसे ११ मील और चलकर 'संरहान' में शाम को पहुंचा. यहां)॥। दूध-)। जलेबी खाई. यहां नरसिंह मन्दिरमें ठहरा. मन्दिरके पुजारीने रातको साग रोटी खिलाई. रातको मन्दिरमें निवास पुजारीने एक लोई बिछाने को दी थी.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

पुरुषो मतो मे ॥१८॥ अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्। पश्यामि त्वां दीप्त-
हुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥१९॥
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च

आज प्रदोष. दिनभर मौन.
कुछ से व एक ब्राह्मण के आया था वहखाः
एक चावल का दाना खाकर रात को पारण
किया. रातभर नृसिंह मन्दिर में सोया.
यहां सामने भीमाकालीका बड़ा मन्दिर है
पर बाहरी आदमी को दर्शन की मना ई है.
६ महीने राजासाहब भिशाहर का दरबार
यहां रहता है: और ६ महीने रामपुर में.
भीमाकाली की मा की बहुत है. उसका भ्रम
यहां वहीं के लोगों को है. साधु ब्राह्मणों का
इतना सम्मान नहीं है. पुजारी ने एक साई
भिक्षा ने दी थी. इसका नाम केशवराम है
यह टहलुआ है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सर्वाः । दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ।२०। अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति । स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः

आज सुबः ७ बजे सागरोटी खाई. दोपहर १०॥ बजे दालभात खाया रातको सागरोटी खाई. आज यहां ठहरा हुआ उदासी साधु और एक गढवाली पण्डित मिलने आये थे. यह उदासी क्यारकोटी में मिला था वहां इसकी दाल नहीं गली थी. यहां यहां परमहंस बनाकर बड़ा विद्वान कहलाकर अपना आडम्बर प्रचार रखा है. पं. चन्द्रमणि भट्ट यहां आया था. यह राज पण्डित है. इसने सिर्फ यहां कहां से आये: कब आये: कहां से आये: कौन हो: राजा साहब के पास रिपोर्ट की: इतना एकदम पूछा. जरा इरखाई भरी बात थी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पुष्कलाभिः २१ रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च। गन्धर्वयक्षासुर-
सिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे २२ रूपं
महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।

(श्रावणीकर्म)

आज जरा तबियत ठीक नहीं थी.
दोपहर भो. नृसिंह मन्दिरमें रातकोश ढवाली
पण्डितके पास धर्मशालेमें उदासी साधु
यहीं रहता है. इस को शास्त्रार्थ की बहुत इच्छा
रहती है. शुष्क वैयाकरण और तार्किक है.
अपने को बडा भारी समझता है. अस्तु.
न्यायका पंचलक्षणी माथुरीका क्रोड
बलदेवी पास लिख रखी है. परिभाषेन्दु
का क्रोड भी रखा है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथिता-
स्तथाहम् ॥ नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं
दीप्तविशालनेत्रम् । दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्त-
रात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४॥

(रक्षाबन्धन)
आज दोनो समय गढवाली पं. लीलानन्द
के पास भोजन
निवासस्थान है मन्दिर में. आज राजा की
तरफ से थोडा आटा गुड और १रु. आया
ब्राह्मणों को दिया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानल-
सन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद
देवेश जगन्निवास ।२५। अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य
पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसंघैः । भीष्मो द्रोणः

आज सुबः उठकर पैदल चलकर बटाली शिवमन्दिर में पहुंचा यहां स्नानादिकर के रोटी खाई. ऐसे टिकड कभी नहीं खाये थे. आज पहिले पहिल खाये. प्रसङ्ग है प्रायः ०५ है. नमक मर्च डालकर मोटे इतने बनाये थे कि मुझसे एक ही खाना मुश्किल हो गया. अस्तु. यहां के ब्रह्मचारी जी ने बात भी नहीं की टिकड एक बैरागी ने बनाये थे. बटाली से 'सरहान' १० मील है. यहां से पैदल चलकर शाम को रामपुर पहुंचा. यहां श्मशान के पास एक जगह में रात भर सोया था. (॥ (आज भी दाने जौरों में लिये थे.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः॥२६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्रा-
करालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशना-
न्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः॥२७॥ यथा

आज पुनः उठकर रामपुर से सतलुज पार करके
पैदल ५॥ मील चढाई चढकर एक दुकान में
)॥ मिश्री की काली मिर्च मिश्री खाकर यहां
आ भसेरल स्सी = धाध पीकर फिर २ मील
२ फरलांग चलकर एक राणीकारायपुर जि.
अम्बाला के बनिये के दुकान पर पहुंचा. यहां
अपने हाथ खिचडी बना खाई. फिर थोडा
विश्राम करके फिर यहां से पैदल ७ मील
३ फरलांग चलकर 'सिरहान' पडाव पहुंचा
यहां एक मान्दिर में (मैदान में) पडाव पर ठहरा.
इस रास्ते में ३॥ मील खडी चढाई चढ-
नी पडती है. रात्री में बडी जोर से वर्षा हुई.
बैठकर रात काटी.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

नदीनां बहवोऽम्बुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्य-
भिविज्वलन्ति ॥२८॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः । तथैव नाशाय

भाद्रपद कृष्ण ३ सोम] २१ अगस्त [भाद्रपद १४

आज सुबः उठकर चला सो पैदल २ बजे दोपहर
को 'बनजार' पहुंचा. 'सिरहान से बनजार' १९ मील है
४ मील सख्त चढ़ाई है और ४ मील उतराई है.
रस्ते में बड़े मुश्किल से एक जगह)॥ छाछ रे) रेव-
ड़ी मिली सो खाई बनजार में आकर)। मिश्री काली
मिर्च के साथ खाई. यह बड़ा गांव है. यहां तह-
सील है. यहां से रामपुर ३४ मील है. कुल्लू ३२ मील
सिमला ९० मील है (धूरी के रास्ते से.
यहां पर स्नानादि करके)॥ आलू धो लेप का यह
ए.)॥ बर्फी ली खाई. रात भर निवास यहां नये
ठाकुर द्वारे के बरान्डे में.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः २९
लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनै-
र्ज्वलद्भिः। तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः
प्रतपन्ति विष्णो ३० आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो

आज सुबः उठकर बनजारे से चला सो ९॥ बजे
उजीं पहुंचा यह जगह बनजारे से ११ मील
५ फर्लांग है यहां स्नानादि करके होटल में
आलू की पतली साग और ३ रोटी खाई. =)॥
दिये.)॥ मिश्री)। दाना चीनी. फिर यहां-
से शाम को औरमें पहुंचा यहां काश्मीर में
शुपियान में मिला हुआ बुड्ढा ब्राह्मण सीता
राम वैरागी मिला इसके साथ एक नाथ
भी था इसके आग्रह से मैं औरमें एक
खत्री के दूकान में रात भर रहा. खाया कुछ
नहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद । विज्ञातुमिच्छामि
भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥
श्रीभगवानुवाच
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समा-

सुबः उठकर चलासो १२ मील चलकर भुवन
पहुंचा. यहां))। मिश्री लेकर नाथ, बैरागी,
और मैने खाई. यहांसे बैरागी नाथ आगे चले
गये. मै भी थोडी देरबाद चला सो रास्ते में))।
चले))। मिश्री लेकर खाई. फिर सूर्यास्त
समय एक ब्रह्मचारी के स्थानपर पहुंचे यहां
सभी साधु इकट्ठा हूए थे. नाथने रोटी पकाई
हमने भी १॥ रोटी और दाल खाई. यह
जगह भुवनसे १० मील है. आज २२ मील
चला.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

हतुमिह प्रवृत्तः। ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥ तस्मात्त्व- मुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्। मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं

आज सुबः उठकर यहांसे चला सो अकेला
११ मील चलकर 'मनीकरन' पहुंचा यहां
एक बुढ्ढी पण्डाके मकानमें मैं ठहरा.
)॥ मिश्रीलाकर खाई. फिर बुढ्ढीने दाल
भात पकाकर खिलाया १ पाव चावल
)॥। १ छटाक दाल)१= की हुई. बुढ्ढीने
पैसे नहीं लिये. फिर नाथ और बैरागी
मिले इनको =) दिये थे. शामको
मैं भैनादेवीके मन्दिरमें आया. रातको
इसी मन्दिरमें निवास. नाथ और बैरागी
भी यहीं सोये थे.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भव सव्यसाचिन् ॥३३॥ द्रोणं च भीष्मं च
जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व
जेतासि रणे सपत्नान् ॥३४॥

(जन्माष्टमी व्रत)

आज उपवास जन्माष्टमी विभिन्न.
ताको =) कीसेव लाकर बैरागी, नाथ, और
मैने खाई. निवास इसी मन्दिर में.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः
किरीटी । नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं
भीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥

(जन्माष्टमी व्रत)

॥ मिश्रीखाई. ॥ आयची दाबाखाया.
सुबः शौचादिकरके 'मणिकर्ण'तालकुण्डमें स्नान
किया. नाथ और बैरागी चले गये. मैं बुढ़ी
माई के कहने से उसके घर आया. आज भी.
बुढ़ी के घर. यह बुढ़ी कान्यकुब्ज ब्राह्मण
कानपुर की रहने वाली है. ॥ ५. मिली.
आज भोजन के बाद बुखार आया था फिर
यहीं सोया सारा दिन और सारी रात बेहोश
~~[illegible]~~ पड़ा था. बुढ़ी ने ओटना बिछौना कर
दिया था. रात को खाना पीना कुछ नहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ।३६। कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्

आज सुबः उठकर शौचादि किया.
स्नान नहीं किया. बुढ़ी माईने खिचड़ी बनाई थी सो खाई. ?।। सेवा खा खाई. फिर यहां से चलकर ७ मील पर 'जरी' पर ठहरा रातभर यहां निवास सरायमें. यहां बुढ़ा बैरागी फिर मिला. रातको कुछ नहीं खाया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे । अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥ त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्त-

आज सुबः ३ बजे उठकर शौच स्नानादि करके ४॥ चले ६॥ बजे चाय पी दाने खाकर पानी पीकर ३ मील चलकर एक ब्रजवासी ब्रह्मचारी ब्राह्मण के डेरे पहुंचा. यहां एक टिक्कड़ रखा था वह खाकर पानी पीकर बैठा था ११ बजे ठंड लगना शुरू हुआ फिर बुखार जोर का आया. ६॥ बजे शाम को उतरा फिर कुछ नहीं खाया. ब्रह्मचारी किसी गांव में चला गया था. मैं रात भर यहां अकेला पड़ा रहा.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

रूप ॥३८॥ वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजा-
पतिस्त्वं प्रपितामहश्च। नमो नमस्तेऽस्तु सहस्र-
कृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३६॥ नमः
पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।

सुबः उठकर शौचादि करके चलासो आधमीलपर
एक हट्टीपर))। मिश्री ले खाई। फिर चलकर 'भुव-
नार' में हलवाई की दूकानसे -)। जलेबी और
)॥। दूध लेकर क्षुधा शमन किया। बुरवार आज
भी कुछ मालूम हुआ। फिर मन्दिरके पास चौ
तरेपर पडे रहे. ब्रह्मचारी की कुटीसे 'भुवनार'
१० मील है. फिर -) मही))। खाण्ड खाई.
यहांसे फिर ४ बजे शाम चला सो ८ मील
चलकर कुल्लू पहुंचा. यहां एक मन्दिरमें
एक साधुके धूनी पर ठहरा. रास्ते में 'कोटी
स्टेट' का कुंवर भरतसिंग मिला. वह
अपने सुसराल चलनेको कहता था पर
मैं नहीं गया. रात भर यहां निवास. बुरवार
आज दिन भर ही था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततो-
ऽसि सर्वः ॥४०॥ सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण
हे यादव हे सखेति। अजानता महिमानं तवेदं मया
प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥ यच्चावहासार्थमसत्-

आज प्रदोष. मौन. नियमाऽनुसार पारण किया.
धनिक भर खाया. -) चावल -) दूध)॥ चीनी
)॥ घी. आज बुखार इतना जोरसे आया था
जिसकी हद नहीं. प्राण केवल राम के कृपा
से ही बचे. रातभर यहीं निवास. लोग निर्दय
होगये हैं. समय बहुत बुरा आया है.
आज एक बड़ा दैवी चमत्कार हुआ—
आज जब प्राणान्त करनेवाला बहुत जोरका
बुखार चढा था मैं बेहोश था उससमय प्राण
निकलना चाहते थे. इतने में तीन पुरुष
मेरे दायीं ओर से आये. और मेरे पास खड़े हो
गये. मैं डर गया. यद्यपि वे सूरत शकलसे
भयानक नहीं थे. उनमें से थोड़ी देर के बाद
ऊपर की ओर से हाथ में त्रिशूल लिया हुआ.
बड़ी लम्बी जटावाला और बड़ी लम्बी कदका
एक आदमी बायीं ओर ही खड़ा होगया.
उसने महामृत्युञ्जयमन्त्रका उपदेश दिया
[illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु। एकोऽथवा-
प्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ४२
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरु-
र्गरीयान् । न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो

आज सुबः उठकर यहांसे पैदल चलकर
भुवनार आया. रास्तेमें -) मुनक्का लेकर
खाया. फिर भुवनार में -)।। बर्फी)।।।
नहीं खाया. फिर यहांसे चलकर शाम
को 'औट' में पहुंचा. आज १८ मील
६ फर्लांग चला. पैरोंमें खुजली भी नहीं है
यहां खत्रीकी दूकानमें उपर लेलवके में
रातभर निवास. रातको यहां २।।
पुलके खाये.

राकोई इससमय उपाय नहीं है. मैंने अपना शु
किया. एक [illegible] धोतीपर और दूसरा उसस्थपर रहा
घण्टों मैंने मातसजप कियाहोगा. फिर नेतीनो पुरुष

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥ तस्मात्प्रणम्य
प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि
देव सोढुम् ४४ अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन

भाद्रपद कृष्ण १४ शुक्र] ११ सितम्बर [भाद्रपद २५

(कुशाग्रहणम्)

आज सुबः उठकर यहां से पैदल चलकर
१३ मील पर पडाव पर एक दूकानदार के
छपरले धूतपर आसन लगाकर पडा था.
आज ठंढ नहीं आयी पर बुखार आया.
शामको ५ बजे बुखार उतर गया. इस
पडाव का नाम 'बिडो' है. यहां रात
को रोटी खाई -)॥ रोटी -) दूध.
)॥ मीठा रात भर यहां दूकान में सोया.
बाद त्रिशूलधारी भी कहीं चला गया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

अथैकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।

सुबः उठकर ११॥ मील पैदल चलकर
'मुण्डा' में पहुंचा यहां)॥ चीनी खाकर
पानी पीया. पीछे यहांके दुकानदार
पं. सीतानाथ ने रोटी खिलाई. रातको भी
इसने रोटी खिलाई. रातभर निवास यहां.
एक ब्रह्मचारी के धूनी पर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तःकमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।

आज सुबः उठकर पैदल 'मुण्डा' से 'कुफरी' होकर
ठ्योग पहुंचा. कुल १३ मील दफ्कर्गि
आज चढ़ी. ठ्योग बाजार पहुंचते ही एक
दूकानदार सूद (गर्जी का) ने भोजनको
कहा. हमने स्नानादि करके यहां पका भोजन
नाकिया और एक सूद दूकानदार के साथ
'नगौय' में एक महात्मा के दर्शनको गया
था. ये महात्मा बंगाली हैं. इनको बड़ी
सिद्धीज पाये हैं परम हंस हैं. रातको उस
एकसूदकी दूकानमें सोयाथा. आजकुफरीमें
-) का भीदाना लियाथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥२०॥
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।

आजसुबः उठकर एक झरनेपर शौचस्नानादि कि
या. फिर भोजनकरके घोडेपर शिमले गया.
घोडा जयासिंग ठेकेदारका था. साथ मुन्शी
शरणदास और उनका भतीजा थे. शिमला
देखा. यहां एक नाझर के यहां गये थे. इससे
खूब बातचीत हुई. फिर कैलास जाने वाली
पार्टी की खोज की. वह पार्टी १० मई को चली
गई है ऐसा पता लगा. फिर वहां से 'संजो-
ली' २ मील [illegible] कर गया. यहां टीका
साहब को [illegible]. इन्होंने व्यवहार
अच्छा किया. फिर यहां दूध पीकर '[illegible]'
आदमी [illegible] से 'मशोबरा' देखते हुए
[illegible] करके फिर २ मील पैदल
चलकर 'क्यार' में आया. मुन्शीशरण
[illegible]

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥१८॥
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।

आज सुबः उठकर स्फुरने पर शौच स्नाना-
दि किया. फिर यहां मुन्शी शरणदासके पास ही
भो. पं. भीमादत्त जोशी कूर्माचल [illegible] जीने एक
आधसेर मिश्री राणासाहबको टीका देनेके
लिये लादी. आज यहां पं. हरिचरण शास्त्री
प्रोफेसर ऑरिएन्टल कॉलेज लाहौर का लड़का और
मुन्शी शरणदासका भांजा आत्माराम मिश्र आये थे.
मैंने ५ श्लोक राणासाहेबको [illegible] टीकेआशीर्वाद के
लिये लिखके भेजे. उसकी नकल हरिचरण शास्त्रीका
लड़का ले गया. रातको भोजन और निवास
यहीं.

१८ मई — मुन्शी शरणदास ९॥ बजे
[illegible] से 'कांगड़ा' गये. मुन्शीने ५ रु. मुझे
दिये. आज एक पैसा मशोबरा में ठाकुरद्वारे
में (भद्रकाली) [illegible]
[illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१९॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं
प्रार्थयन्ते। ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति
दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥ ते तं भुक्त्वा

आज दो नो समय भो. तथा नि वास कोठी हाउस
में टीकासाहबके पास.
आज घूमने भी गया था. पं. वासुदेवके बारेमें
टीकासाहबसे बात हुई थी. उन्होने कहा कि
आने दीजिये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।२२।

आज दोपहर भो. कोटी हाउससे टीकासाहबके पास करके घोडे से शंओ... पहुंचे यहां रिकसा गाडीसे कसार गये. टीकासाहब भी साथ थे. आज यहां आतेही देखा. पं. वासुदेवजीका व्यवहार रूखाईसे भराहै. फिर रातको पं. वासुदेवजीने शुकदेवकी ओर पर टीकासाहबके सामने विवाद किया. और अन्तमें विजय हमारे तरफ हुआ. रातमें टीकासाहबके पास विवादके समय टीकासाहब पं. ...जी ...देवीसिंह, सोमदास, परसराम अनन्तराम, आदि कई लोक थे.
[illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ।२३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ।२४।

आज दो नो समय टीकासाहब के पास
रोटी खाई. पं. वासुदेव जी का व्यवहार
रूखाई भरा होरहा है. आज कर्कसङ्क्रा
न्ति हुई.
निवास भी मा दत्त के घर

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

(जगदीशरथयात्रा)

आज दोपहर का भो. टीकासाहब के पास
रातको भो. पं. भीमादत्त के घर. भीमाद-
त्त की माता देव प्रयाग से आज घर पहुं-
ची. पं. वासुदेवजी अब कुछ व्यवहार
सुधारने लगे. निवास भीमादत्त के घर

सुबः घूमने गया था. साथ कुंवर दीवान
सिंग थे.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।२७।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ।२८।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल ३ शनि] १८ जुलाई [वं० श्रावण १

आज दोनोसमयभो० तथा निवास पं. श्री. मादन के घर. आजसुब: टीकासाहबशिमले गये.
सुब: घूमनेगयाथा साथ कु. दी. सिं थे

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥२६॥
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥३०॥

द्वि० आषाढ़ शुक्ल ४ रवि] १६ जुलाई [श्रावण २

दोनोसमय भोजन तथा निवास पं. भीमा
जीके घर.
आज मै अकेले ही सुबः घूमने गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।

दोनों समय भो. तथा निवास पं. श्रीमाद त्त के घर. सुबः अकेले ही घूमने गया था. शाम को टीकासाहब के पास गया था. आज टीकासाहब शिमले से शाम को ७ बजे आये..

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

दो नो समय भो. तथा निवास पं. भी-
माऽजी के घर. सुब: अकेले ही घूमने गया था.

आज कानूगो पं. मोलकराम पण्डित का
लडका अपने घर ले गया. वहां दूध
पिलाया और आम खिलाये.
शाम को टीकासाहब के पास गया था.
पं. देवीदत्त जोशी (कूर्माचली) से जानप-
हचान हुई. स(अ)याणा जि. कांगडा त. पाल
मपुर का रहने वाला पं. मोहन बेड आ से जा
न पहचान हुई. यह कानूगो का लडका
लक्ष्मीचन्द का साला है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्या राज-
गुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

द्वि० आषाढ़ शुक्ल ८ बुध] २२ जुलाई [श्रावण ५

आज दोनो समय भो. तथा निवास पं. श्रीमा
दत्त के घर.
टीकासाहब के पास गया था.
सुब: अकेला ही घूमने गया था.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।

द्वि० आषाढ शुक्ल ९ गुरु] २३ जुलाई [श्रावण ६

दोनों समय पं॰ भीमादत्तजी के घर
भो॰ तथा निवास
आज पं॰ भीमादत्त शिमले से घर आये
टीकाराम के पास गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल १० शुक्र] २४ जुलाई [श्रावण ७

आज जन्म दिन तिथी के अनुसार.
दोनो समय भोग. तथा निवास
पं. भीमादत्त के घर.
टीकाराम हव के पास गया था.
आज २८ वर्ष पूर्ण हुए.
सांसारिक कोई भी सुख नहीं मिला आगे जैसा
प्रारब्ध.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल ११ शनि] २५ जुलाई [श्रावण ८

(देवशयनी)

आज एकादशी उपवास फलाहार पं. भीमसेन के घर तथा निवास भी.
आज टीकासाहब के पास गया था.
पं. वासुदेवजी के हृदय से बहुत ही ईर्ष्या पैदा हुई है. आज पं. अम्बिकाचरण (हरि-परशास्त्री प्रोफेसर of ओरिएन्टल कॉलेज लाहौर का लड़का) यहां आया था मुझसे भी मिलने के लिये आया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥६॥
एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।

दो नौ समय भो. तथा निवास पं॰ भी.मा
दत्त के घर. टीकासाहब के पास गया था.
पं॰ वासुदेवजी का व्यवहार रूखा होरहा
है अस्तु.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥८॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल १२ सोम] २७ जुलाई [श्रावण १०

आज भौम प्रदोषव्रत रातको नियमाऽ-
नुसार पारण. पं. भीमादत्त के घर.
टीका साहब के पास गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

दोनों समय भी· तथा निवास पर भी मा. कृष्ण के
घर. टीका साहब के पास गया था

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ।११।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ।१२।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल १५ बुध] २६ जुलाई [श्रावण १२

दोनों समय भो. (व्यासपूजन) तथा निवास पं. भीमा
दत्त के घर,
टीकासाहब के पास गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥

श्रावण कृष्ण १ गुरु सं० १९८८] २० जुलाई [श्रावण १३

दोनो समय भो० तथा निवास पं० भीमादत्त
के घर
टीकासाहब के पास गया था।

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि

दोनो समय भो॰ तथा। निवास पं. भीमा-
दत्त के घर. टीकासाहब के पास गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया।१७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्।१८।

दोनों समय भो० तथा निवास पं० भीमादत्त
के घर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ।१६।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

दोनों समय भो॰ तथा निवास पं॰ भीमाद ज के घर
टीका साहब के पास गया था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।

आज दोपहर का भो. पं. भीमादत्त के घर करके
शाम को टीकासाहब के साथ शिमले गया. साथ
पं. जयवल्लभ जोशी कूर्माचली और पं. तारादत्त
पुरोहित भी थे. पं. जयवल्लभ जी ने बहुत बुरा
व्यवहार किया. अस्तु. अब यहां रहना उचि-
त नहीं है. रात को शाकली में टीकासाहब के
पास रोटी खाई. रात को नेशनल ए.डी.सी.
का 'आदर्श मित्र' नाटक देखने गये थे.
टिकट टीकासाहब ने दिया था. साथ
जयवल्लभ और तारादत्त थे.
रात दो बजे आये. रात्री निवास कोटी हाउस
शाकली में.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ।२२।
रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।

आज दोनो समय भो. तथा निवास यही.
(कोठी हाउस राकरी में)

आज भरतसिंह ने भी बहुत बुरा व्यवहार
किया. अब यहां रहना उचित नहीं है.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ।२४।
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ।२५।
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

श्रावण कृष्ण ७ बुध] ४ अगस्त [श्रावण १६

आज दोनों समय भो॰ तथा निवास यहीं
(कोठी हाउस शाक्तीमें)

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ।२६।
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ।२७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।

श्रावण कृष्ण ८ गुरु] ६ अगस्त [श्रावण २०

आज दोपहर का भोः पं. प्रेमवल्लभ तिवाड़ी
जी के यहां रात को पं. भीमादत्त के पास.
निवास भीमादत्त के घर.
आज सुबः उठकर शाकली से क्यार गया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः २८
अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२९॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।

आज दोपहर का भो. पं. श्रीमादजा के घर.
शाम को शारकरी (शिमला) गया. रात भो. कुछ नहीं
दूध पीया.
आज मातृश्राद्ध दिन था. पर मैंने उसके निमि-
त्त कुछ भी दिया नहीं. कारण यह कि किसी-
को पता न लगे.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥
पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ३१
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।

आज सुबः उठकर 'जुणगा' गया शिमले से सडक के रास्ते ११ मील जुणगा है. जुणगे में क्यौंथल' स्टेट का दरबार है. यहां एक संस्कृत पाठशाला और एक मिडिल स्कूल एक अस्पताल है. पाठशाला का पण्डित अम्बिका चरण के पास ठहरा इसके पास भी. तथा निवास.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ।३२।
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः।३३
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।

श्रावण कृष्ण १० रवि] ६ अगस्त [श्रावण २३

आज दोनोसमय भो॰ तथा निवास पं॰ अम्बिका चरण पुरोहित (मध्यातु) के पास (पप्रोला बैजनाथ जि॰ कांगडा का रहनेवाला)

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।

आज दो नो समय भोः तथा निवास पं॰ आम्बि-
का चरण के पास.
आज यहां के राज पं॰ राघवानन्द के बुला
ने से वहां गया था. यह सिर्फ आडम्बरी
है. और पण्डितंमन्य भी है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया २०
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।

आज तबियत ठीक न होने के कारण दोपहर भो.
न होकिया. ~~आज पं. रघुनन्दन जोशी के घर~~
~~खाना यहां दूध पीया~~
~~ये कूर्मांचली ब्राह्मण हैं.~~
आज पं. जीवानन्द जोशी के घर गया था.
यहां दूध पीया.
पं. प्रेमवल्लभ तिवारी के डेरे उनके साथ इसे
१।। लड्डू जी का खाया था.
ये दोनों कूर्मांचली ब्राह्मण हैं.
सुबेरे मुन्शी रामदास का लडका रामनाथने
दूध पिला था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।२१।
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ।२२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

आज प्रदोष मौन रात को नियमानुसार
[illegible] पारण.
नियम स्वयं तथा रात को, श्री. पं. [illegible]मादत्त जी
[illegible]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि २३
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् २४
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।

आषाढ़ कृष्ण १३ रवि] १४ जून [ज्येष्ठ ३०

आज दोनों समयों तथा निवास
पं. भीमादत्त के यहां
आज पं. सर्वानन्द तिकू की चिट्ठी
मिली.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् २५
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ।२६।
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।

आषाढ कृष्ण १४ सोम] १५ जून [ज्येष्ठ ३१

दोनो समय भो. तथा निवास पं. श्रीमाधवजी के घर.
आज श्रीलालसडवसे मिला. आज इनके साथ इन
की बागीची देखने गया था.
आज एक श्री कन्हैयालाल ब्राह्मण (सारस्वत) कानैरा.
ज से आ तथा पहचान हुई. हिन्दी की मारवाड़ी
उर्दू कविता करता है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।

आषाढ़ कृष्ण ३० मंगल] १६ जून [बं० आषाढ़ १

आज दो नो समय भो. तथा निवास पं. श्रीप्रसाद-
त के पर. आज भी टीकालाल हास से मुलाकात

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ।२९।
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ।३०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञान-योगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

प्र० आषाढ शुक्ल १ बुध] १७ जून [आषाढ २

(पुरुषोत्तम मासः)

आज दोनो समय पं. भीमादत्त जोशी के घर भो. कथा
निवास. टिकाराम जी के साथ भजन भी सुनाका तहुई थी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥१॥

आज को पढ़ा भो. पं. भीमाजी के घर.
शाम को शिमला आया साथ [illegible] कासाहब के थे.
शिमले में [illegible] में [illegible] कासाहब के [illegible]
ठहरे. रात को भो. [illegible].

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।

आज दो नो [illegible] के पास गो.
[illegible] पढ़ी [illegible] में कोपी [illegible].
आज एक श्री [illegible] से
परिचय हुआ.
आज राधाकृष्ण को चिट्ठी लिखी.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

आषाढ़ शुक्ल ५ शनि]   २० जून   [आषाढ़ ५

आज दो को समय भो॰ यहां टीकाराम द्वन्द के पास.
आज भोजे में श्री देव देख ने गया था. ~~इसमें 1) टिकट~~
~~आपका कुंवर ने दीनानाथ ने लिया था.~~ 1) रामनाथ ने
२ गटरी में मेरा लिये दि पेथो आया कुछ नहीं.
ऐससे भैकासाहब को टीकाराम दोड़ गोलक ने पाई था
आया था. आज श्री लौनी सोतोर श्री नारायण के
दूकान में १ पंपा भरा था. लिनाल यहीं रहा कभी से.
ऐसमें टिकट 1) भेजा मं॰ श्री भाऊ ने मेरा लिया

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthah, New Delhi

यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः॥५॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।

आषाढ शुक्ल ६ रवि] २१ जून [आषाढ ६

आज दोनों समय भोः ठीका साहब के पास.
आज शाम को आखों [illegible] देखने गये
थे. यह पर्वत शिखर [illegible] पे स्थित है.
यहाँ राम सीता, हनुमान की मूर्ति है. ठीका साहब
व. ले. भीमादत्त जो पडत के और दूसरे भी साथ थे.
रात को निवास स्थान लौटने को विश्राम ने

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः

[illegible]
[illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः
परस्तात् ॥६॥ प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या
युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य
सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥

आज भि· दोपहर भी· दीनानाथ जी के पास
रात को पं· भीमसेन के पास कुंवर भवानीसिंह
के घर. तिवारी को [illegible] २ ता के पीछे
पं· भीमसेन के पास. आज दीनानाथ
[illegible] गये.
मिनाल कोठी हाउस में.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥११॥
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।

आषाढ़ शुक्ल ६ बुध] २४ जून [आषाढ़ ६

आज दोपहर भी. पं. भीमानन्द जोशी के पास
[illegible] गके पास [illegible]
शाम को पं. [illegible] दत्त जोशी आया था
इसके आग्रह से आज रात्री मैं भी [illegible]
इसके घर 'भराडी' में किया. यह पं. भीमा-
दत्त जोशी का बहनोई है.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।

आषाढ़ शुक्ल १० गुरु] २५ जून [आषाढ़ १०

आज [illegible]
रात को पं. [illegible]
[illegible]
[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।१४।
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ।१५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।

आषाढ़ शुक्ल ११ शुक्र] २६ जून [आषाढ़ ११

आज दोपहर भो॰ पं॰ भीमादत्त के पास
कुँवर भरतसिंग के घर ए॰ शतको भो॰ नही

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः॥१७॥
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।

आज प्रदोष मौन रात्रौ नियमाऽनुसार पारण पं. श्रीमादत्त के घर. आज सुबः उठकर क्यार पैदल पहुंचा टीकासाहब से मुलाकात की. अब तो टीकासाहब ज्यादा ही स्नेह करने लगे हैं. शाकलीसे क्यार पूरा मील है. साथ पं. श्रीमादत्त भी था. मुन्शी पं. शरणदास के घर गया था पं. बद्रीदत्त शर्मा अवस्थी का पत्र और रोशणा की चिट्ठी मिली.

रात को एक मरासी का गाना टीकासाहब के यहां सुना.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः

आज सुबह उठकर [illegible] पहुंचा
[illegible] अकेला [illegible] रास्ते में [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
मोकेन पहुंचा [illegible] जी के
यहां ठहरे [illegible] ब्राह्मण है इनके नाम
[illegible] और [illegible] चिट्ठी दी थी [illegible]
[illegible] कुंवर [illegible]
[illegible] मिले आज [illegible]
[illegible] ट्राम में [illegible]
[illegible] २८ दीवानसिंह ने [illegible] रात को
ड्रामा देखा उस [illegible] दीवानसिंह ने [illegible]
[illegible] में खर्च दीवानसिंह ने दिया
रात को पं. ज[illegible] के यहां [illegible]
[illegible] भी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।

आषाढ शुक्ल १४ सोम] २६ जून [आषाढ़ १४

आज रामनाथ और दीवानासींह शिमले चले गये
आज भी दोनों सूप पं. जगन्नाथ पाण्डेय के
पास. राजासाहब ने तरफ से रस्त आपी थी
आज राम आत्माराम से जान पहचान हुई
यहां के राजासाहब ने दुर्गासींह के पास जाना
था. पं. भूपसा[illegible]जी के साथ [illegible] आप[illegible] भी
इनको [illegible] राजासाहब [illegible] कोई बातचीत
नहीं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥२२॥
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।

आज भी दोनों समय भो. यहां पं. जमना दत्त पाण्डेय के पास. इस सरकारी (राजासाहब के यहां से) आयी थी. ज्वालाराम के यहां गये थे पं. भूधरामजी के साथ. ज्वालाराम रहने के लिये आग्रह कर रहा था. राजासाहब ने इसे हमको रोकने के लिये कह रखा था. यहां के पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित यहां नहीं थे. उनके आने तक हमें रहने के लिये आग्रह था. मतलब यह कि उनसे हमें लड़ाना था और मेरी परीक्षा देखनी थी. परन्तु मुझे इन बातों से क्या मतलब.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।

द्वि०आ०कृ०१बुध] १जुलाई सन् १९३१ [आषाढ़१६

आज सुबह [illegible]
[illegible] १ [illegible] ॥ [illegible] मिले आया
यहां [illegible] ठहरा पं० भीमा-
[illegible] के
[illegible]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं

द्वि० आषाढ़ कृष्ण २ गुरु] २ जुलाई [आषाढ़ १७

आज सुब: उठकर यहांसे पैदल प्रामीठ
प उठकर बयार पहुंचा. यहां पं. भीमादत्त
के घर ठेरा. दो पहर भो: आज मुन्शी
शरणदासके यहां रातको पं. भीमादत्तके
यहां. टीकासाहबसे मिलाथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रदिष्टम् अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी
परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्म-
योगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ३ शुक्र] २ जुलाई [आषाढ़ १८

आज अंग्रेजी तारीख के अनुसार जन्मदिन.
आज रोगो समय भो. पं. भीमादत्त के घर
टीकासा हवसो मिला था
आज २८ वर्ष पूर्ण हुए.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।

आजदोनोसमयभो.पं.भीमसेनजीकेघर.
आजपं. वासुदेवजीके व्यवहार से ऐसा
मालूम हुआकि इनकेहृदयमें ईर्ष्याका
सञ्चार होगयाहै. अस्तु।
टीकासाहबसे मिलाथा. आज यहां
टीकासाहब व्योग आयेथे. ये टीका
साहबकोटीके शालक है।

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् १
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥२॥
अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ९ रवि] ९ जुलाई [आषाढ़ २०

आज दोनो समय भी पं. भीमाशङ्करके घर
तथा रात्रि निवास.
टीकासाहबके पास गया था.
आज पं. जोगीश्वर दत्त जोशी पं. भीमा
शङ्करके बहनोई यहां आये थे.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥३॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥४॥
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।

आजदोनोसमयभो. पं. भीमादत्तके घर
तथा रात्रि निवास,
आज पं. भीमादत्त तथा पं. जोगीश्वरदत्त
शिमला चलेगये.
आज टीकासाहबके पास गया था
आज पं. मुकुन्दवल्लभमिश्रकराची
का भेजा हुआ रु. १५ पन्द्रह मानीआर्डर
मिला.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥५॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ७ मंगल] ७जुलाई [आषाढ़ २२

आज दोनो समय भो. पं. भीमादत्त के घर
सभा निवास
आज टीकासाहब के साथ उनके बागीचीपर्य
गया था. टीकासाहब रामलेगये.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥
न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।

आज भोजन पं. श्रीमाधव के घर करके
सवारी घोड़े पर श्री विद्व को (श्रीमाधव का
लड़का) लेकर शाकली (शिमला) में पहुंचा.
साथ पं. प्रेमवल्लभ तिवाड़ी भी थे.
शाम को आज रसभुले टीकासाहबने खिला
ये.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥९॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।

आज भो. पं. भीमादत्त के पास कुंवर भरतसिंग के घर. रात को सिर्फ दूध निवास था ह कोटी हाउस मे.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥१२॥
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।

द्वि० आषाढ कृष्ण १० शुक्र] १०जुलाई [आषाढ २५

भो. अपने हाथ बनारखाथा. रातको दूध
निवास यहीं कोठी हाउसमे.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥१३॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते १४
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।

भो० तथा निवास यहाँ को ठी हाउसमें
दोनासमय.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥
पितामहस्य जगतो माता धाता पितामहः ।

आज भी दोनों समय यहां तथा निवास भी. आज दीवान साहब के साथ एडवर्ड ए.डी.सी. के परशुराम नाटक देखने गया था.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।

आज प्रदोष मौन
आज ऐसी पं. अ घवल्लभजी के मुख से खबर लगी कि पं. वासुदेव मेरे 'एकबात पर चिढे है' और ५०४ रुपा लगाने को तयार है'. नहीं तो माफी मांगो' चाहता! मनुष्य अपनी बात भूल जाये और दूसरे की बात पकड ले. अस्तु
टीकासाहबके साथ २ जोली गया था. घोडेपर

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥

चैत्र कृष्ण ४ रवि] ८ मार्च [फाल्गुन २४

प्रो- दीनोवरवतयही

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥ २॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।

दोसोवरस्क पहीं भो.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

चैत्र कृष्ण ७ मंगल] १०मार्च [फाल्गुन २६

आजयहां भोजनकरके 'भवन' गया रास्तेमें पं. काव चौधरीके घर दूधपीयाथा.
सूर्यास्तसमय भवन पहुंचा। फिर भगवतीदर्शन किया. पं. बालकृष्णचुण्डीके घर रात्री भराति[illegible] भोजन.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥६
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।

आज बालकृष्णके घर दोपहर का भो. शामको पुराने कांगडे का भो. बिहारीलाल और श्र. गौरी शाह (भवनवाला) पुराने कांगडे लेगये.
रात्रीभरा बिहारीलालके घर रहे भो. यहीं रातको श्री. गौरीशाह तथा बिहारीलालके जन्मपत्र और सब देखे श्री. मनोहरलाल अर्जीनवीस कांगडा का जन्मपत्र नहीं देखा रात को ११॥ बजे तक बातें हुईं. मनोहरलाल आर्यसमाजी सा है. भगवतीका दर्शन किया.
आज एक वैद्य पं. रूपलाल शास्त्री डा. प्रागपुर त. देहराजि. कांगडा से परिचय हुआ.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ।८।
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।

आज सुबः उठकर यहां से भवन आया
रास्ते में १५० बिहारीलाल देता था पर मैंने लिया
नहीं. बालकृष्ण धूळी के घर था, आज रूपलाल रानी
फिर मिला था. इसका टिपडा भी इसने दिखाया.
शाम को फिर ठाणे ७ मील चल कर आये
साथ पं. पद्मनाभ कुई और र. रंगीला पण्डित था
आज श्रीकण्ठ ते हरू की चिट्ठी मिली.
शाम को पं. बदरीनाथ के घर तथा नीवास

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥१०॥
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

चैत्र कृष्ण १० शुक्र] १२ मार्च [फाल्गुन २६

आज दोनों वक्त भो. यहीं.
आज मनी आर्डर १५रु.(पन्द्रह) श्रीकण्ठ नेहरू ने भेजा हुआ मिला.

आज शामको 'नरोरा' गये पं. बद्रीदत्त साथ थे.
पं. केरु ज्योतिषी जी ने बुलाया था. रात को निवास
और भोजन उनके पर. आज रात करीब १० बजे
भूकम्प हुआ.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।

चैत्र कृष्ण ११ शनि]   १४ मार्च   [फाल्गुन ३०

आज सुबः शौचादि स्नानादि यहां एक कुण्ड पर किया
आज तक औषध खुराक नहीं हो जाने से रात्रि को रोटी
खाई दिन में दूध और थोड़ा सत्यनारायण प्रसाद.
आज इनके (केशव पण्डित के) इसलिये सत्यनारायण का
लोपोपन किया. पं. चौधरी के यहां गया था वहां भी
दूध पीया. निवास यहीं हैं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् १३
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।

चैत्र कृष्ण १२ रवि] १५ मार्च [वं० चैत्र १

आज सुबः शौचादि स्नानादि बाबतीपर। केमा
केरूपण्डित के यहां भोजन कर [illegible]
से पं. बदरीदत्त के साथ बदरीदत्त के घर,
आज केरूपण्डित ने १रु. और १ धोती मुझे दी.
रात को बदरीदत्त के घर [illegible] भोजन न.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ।१६।
यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।

आज प्रदोष आज दिनभर मौन क्रिया था।
रातको नियमानुसार पारण

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥
तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।

दोनों वक्त यज्ञ भोजन

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।

दीनोपरक्त यहां भी.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।

आजभोज नकरके शामको नगरोटा होकर 'अमुवाडी' जोगीश्वर के घर १० मिनिट बैठकर पठियारमें पं. पद्मनाभकेघर रात्रीभररहा दूध पीया भो. नहीं.

चामुण्डा —

यह कांगडाभवनसे ११ मील पूर्वमे बाणगङ्गाके उत्तर तीरस्थानहै. यहां श्मशानहै. चामुण्डादेवीकीमूर्ती है. मन्दिरछोटासा पक्काहै. यहमन्दिर 'हिलणा=भूकम्प मेंगिरानहीं. मन्दिरको एकही दरवाजा है पूर्व की तरफ नीचेथोडी पौडियां उतरकरनान्दिकेश्वर कामन्दिर पक्का भूकम्पके बाद बना हुआ है-यहमन्दिर आधाहै और आधा तो एक पहाडी बडाभारी पत्थर है. ४-५ छोटी छोटी धर्मशालाएँ हैं. नीचेबाणगङ्गा बहरहीहै. बस्ती आसपास आधमील उत्तर 'बडोई' १मील जिआंगब तथा दक्षिण बाणगङ्गा केपार 'डाडा' है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः२४
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।

(नवरात्र्यारम्भः)

आज सुबः उठ कर चामुण्डा पहुंचा यहां स्नानादि कर के नन्दिकेश्वर में कोठरी में ठहरा.
आज सिर्फ गाय का दूध १ सेर पक्का पीकर रहा. दूध का बन्दोबस्त पं. जोगीश्वर कुई तथा पं. पद्मनाभ के जिम्मे लगाया है. भगवती को ।-चढाया
आज महामातङ्ग निरञ्जन ने यज्ञ (भोजन) कराया था. यहां आज पं. पुलस्त्यराम भवन के आये थे इनसे परिचय हुआ कुछ सम्भाषण भी हुआ. ये नैयायिक हैं. कांगडे में बडे पण्डित समझे जाते हैं
रात्रीमें निवास यहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥२५॥
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।२६।
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।

आज भगवती का दर्शन ।। चढाया
नारिकेश्वर दर्शन
आज लडु निरञ्जन के पास गया था.
इन्होने १ रु. दिया.
पं. पद्मनाभ ने दूध गाय का भेजा था.
पं. जोगीश्वर कुई भी दूध ले आया
दुग्धाहार किया.

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥
प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।

(गौरीव्रत)
वुग्या हार. भगवती दर्शन। चक्राया.
श्रद्धानिरञ्जनके पास भी गया था.
पं: पृथ्वीनाथने दूध मायका भी आया था.
पं: जगीश्वर भी दूध ले आया था.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् २९
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः३०
ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।

भगवती दर्शना। चढा या
(ठ्ठ निरंजन के पास गया था.
पं. पद्मनाभ ने दूध भेजा था
पं. जोगीश्वर कुई भी दूध ले आया था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः॥३२॥
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।

भगवतीदर्शन को चढाया
आज ध्रुव: लक्ष्मीनिरंजन हरिद्वार चलागया.
यह मैथिल ब्राह्मण जगन्नाथ झा नामका
अब लक्ष्मीनिरंजन नामसें कहलाता है.
करीब ८० वर्षका बूढा है. चामुण्डामें रहनेवाले
महात्मा आत्मप्रकाश का शिष्य अपनेको
बतलाता है. इससमय अवधूत है. यहां के ग्रा
मीण मूर्ख इसको बडा सिद्ध समझते हैं. अस्तु.
पं. पद्मनाभने दूध भेजा था.
पं. जोगीश्वरने भी दूध लाया था.
आज एक राजपूतने भी १पाव दूध भेजा था.
आज जोगीश्वरजी थोडे बादाम देगया
पर नवरात्रिभर दूध के सिवा कुछ नही
खाने का संकल्प किया है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ३३
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ३४
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।

भगवती ट्शनिजा चढा या ४ बादामों के साथ.
नान्दिकेश्वर ४ बादाम.
आज पद्मनाभ पण्डित का भी दूध जोगीश्वर
ले आया था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥
अर्जुन उवाच
अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ३६

भगवतीदर्शन। च्छटायाःचदाम. नन्दिकेश्वर।
आज जो गौशिवर दूध ले आयाथा.
आज एक मटन का गौर यहां आयाथा
रात्री भर के लिये मैने इसको यहां रोकलिया
इसके इच्छानुकूल कडमका साक और भात
खिलाया. यह पं.नंदलाल खार मास्टर of
मिशनस्कूल अनन्तनाग काश्मीरका पुरोहित है.
इसका नाम ठाकुरदास है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ।३८।

(दुर्गा-पूजन)

भगवती दर्शन ४ बादाम)। चढाया नन्दिकेश्वर ४ बद.
आज १रु. मदन के गोई ठाकुरदास को
दिया थोडे बादाम भी दिये.
।।।≡) जलेबी मंगाई. कुमारी बटुक पूजन
के लिये. आज ११ कन्याओं को हरेक को ९ बादाम
तथा बटुकों को ५ बादाम.
४ कन्याओं को ४ जलेबी १ पैसा हरेक को
२ बटुकों को. रात को १ पैसा ४ जलेबी भगवती को
ओगारि बर दूध ले आया था.
आज रात को भगवती की कृपा से पारमहंस्य का
साक्षात्कार हुआ.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥

(श्रीरामनवमी)

भगवतीपर्शनको जलेबियां ४ बादाम ५
नान्दिकेश्वरको। जलेबियां ४ बदाम ४
आज ९ कुमारियोंको ४ जलेबियां। पैसा
४ बटुकको ४ जलेबी हरेकको.
ओगीश्वर दूध घी शक्कर चावल १ सेर बास
मती पका ले आया था और
आज ठाकुरदास खण्डमल फिर आया.
फिर हमारे भात मे ही इसका भोजन हुआ
-) ६० दिया. कुछ जलेबी इसको भी दी
औरोंको भी एकेक दोदो जलेबी दीं.
पारण हुआ.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

आज सुबः शौच स्नानादि करके भगवती दर्शन
तथा वंदा मध्य घटा कर 'अगुवाडी' पहुंचा उन्होंने
'सेमो' के स्थानापन्न (पाठ पार में) डा. टीबनवाल।। सेमो
ने नाटक को दिया.
ओनीटर कुई ने परभो. आजसे बुद्धी सेवन शुरु
आपको नगरो [illegible] होकर 'ठाणा' [illegible] २०
[illegible] पहुंचा. रात को रोटी वहीं [illegible] के घर.
तिथी के अनुसार आज उपनयन दिन
१९ वर्ष पूर्ण.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ ४३॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चैत्र शुक्ल ११ सोम] ३० मार्च [चैत्र १६

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥

चैत्र शुक्ल १२ मंगल]　　३१ मार्च　　[चैत्र १७

प्रदोष नियमा: एकादशी को पारणा. मौन

आज 'कल्याणसौगन्धिकटीका' 'कलौ' की प्रेसकापी सम्पूर्ण तैयार हो गई.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ३

चैत्र शुक्ल १२ बुध]   १ अप्रैल १९३१ [चैत्र १८

भो. दोनों वरक नहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

अर्जुन उवाच
अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४॥
श्रीभगवानुवाच
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।

(हनुमत्-जयन्ती)

आज रात खग्रास चन्द्र ग्रहण रात को हुआ. इसको देखा नहीं था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

वैशाख कृष्ण १ शुक्र] ३ अप्रैल [चैत्र २०

आज भी दोनों वक्त यहीं,

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।

वैशाख कृष्ण २ शनि] ४ अप्रैल [चैत्र २१

भो. दोनो धरलायहीं.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्
आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥७॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विक-

दोनों समय भो. तथा निवास यहीं.

ता. ९-१-३२ श. — आज सुबः ५ बजे गाडी अमृतसर से चली सो ९ बजे 'जस्सड़' पहुंची. यहां स्टेशन पर भोजन करके 'जस्सड़' नगर में आध मील पर पहुंचा. यहां पं. काशीराम ज्योतिषीजी के पास पहुंचा इनकी रचित्तियाँ का गड्डे में आया था, अभी ... के पूर्व ब्राह्मण के घर से पं. कृष्णदत्त ब्रह्मचारी रोटी दोनों समय ले आये. परन्तु ता को रोटी नहीं रक्खा है. सुरवार आया था.
पं. काशीनाथ जी ... इनके माता है. ... रहने वाला है. गृहस्थ है २८ वर्ष उमर है. एफ. ए. पास है संस्कृत में भी अच्छा

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रियाः ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदा-
हिनः। आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।

कार्तिक शुक्ल ११ शुक्र] २० नवम्बर [मार्गशीर्ष ३

(प्रबोधिनी ११ व्रतम्)

आज दोनों समय फलाहार यहीं तथा निवास भी.
व्युत्पन्न है. योग की तरफ बहुत प्रवृत्ती है.
भोजन [illegible] है. दूध रात को पीया.

१०-१-३२ र. — दोनों समय हां उसी
ब्राह्मण के घर से रोटी आयी थी. निवास
[illegible] के पास. दूध.
११-१-३२ सो. — दोनों समय उसी
ब्राह्मण के यहां से रोटी आयी थी. निवास
यहीं. दूध.
१२-१-३२ मं. ✓ आज उस ब्राह्मण ने एक [illegible]
[illegible] रात को भात खिलाया दिन में
१॥ सेर पक्का दूध रात को आध सेर [illegible]
[illegible] गया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥

आज दोनो समय भोजन तथा निवास भी यहीं.

13-1-32 बु. — दोनो समय उसी ब्राह्मण ने रोटी [illegible] दी. निवास भी यहीं. दूध.

14-1-32 गृ. — आज मकर संक्रान्ति आज कूपो [illegible] स्नान किया. फिर उसी ब्राह्मण ने भोजन [illegible] था. रात को पं. कृष्णदत्त [illegible] के पास भोजन किया. दूध.

15-1-32 शु. — आज [illegible] उसी ब्राह्मण ने दी थी. दूध आप [illegible] पीया था. दिन को भोजन नहीं. रात को पं. कृष्णदत्त के पास दूध भात भोजन. फिर रात को दूध [illegible] बुखार फिर भी [illegible] था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥१५॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।

कार्तिक शुक्ल १२ रवि] २२ नवम्बर [मार्गशीर्ष ५

आज प्रदोष नियमानुसार रात्रीको पारण. दिनभर मौन. आज वेदपाठी पढिया रंगपा.

आज शङ्कराचार्यकृत श्रीमानसपूजन स्तोत्रकी टिकासमाप्तकी इसमान्यास लिखकर रखा है.

१६-१-३२ शनि. ~ आज दोपहरका भोजन पं. कृष्ण दत्त ले आया था किसी ब्राह्मणके घरसे. रात्रीमें कृष्णदत्त के पास भो. दूध कृष्णदत्त के पास दूध रोजका

१७-१-३२ रवि. ~ दोपहरका भो. उसी ब्राह्मणके घर से कृष्णदत्त ले आया था. रातको कृष्णदत्त के पास भो. निवासस्थानपर दूध.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥

अजदो नोसमयभो. तथा निवासभीयही.
)॥ किशमीशखाई.

१८-१-३२ सोम — दोपहर उसी ब्रा-
ह्मणके घरसें कृष्ण दत्त ले आया था. रात-
को कृष्ण दत्तके पास भो. निवासादि
स्थानपर. , दूध.

१९-१-३२ मं. — दोपहर उसी ब्राह्मण
के घरसे भो. कृष्ण दत्त ले आया. रात
को कृष्ण दत्त के पास भो. निवास
स्थानपर. दूध.

२०-१-३२ बु. आज दोपहर भो. कुछ नही
रातको कृष्णदत्त के पास
निवास स्थानपर दूध आज कृष्णदत्त प्र

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् २०
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।

आजदोनोसमयभो. तथा निवासभी यही

२१-१-३२ बृहस्प. — आजप्रदोष मौन नियमाऽनुसार रातको पारण कृष्णदत्त के पास. दूध.

२२-१-३२ शु. दोपहर उसी ब्राह्मण के घरसे रोटी आयी थी. रातको कृष्ण दत्तकेपास निवास स्थानपर. दूध.

२३-१-३२ शनि पौष शु. पूर्णिमा — आजदोपहर उसीब्राह्मण के घरसे रोटी आयी. रातको कृष्णदत्तकेपास. निवास स्थानपर — दूध. आज पं काशीरामने एक बुरी बात कह दाली जिससे चित्त हमारा

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥

(कार्तिक पूर्णिमा)
आज भोजन के शामको यहांसे खमलोटी' गया
सूरज डूबते समय खमलोटी पहुंचा. त
अगस्ताउ' पं. बदरी दत्त के घरसे खमलोटी'
पं. गोपाराम का घर २॥ मील है रातको
पं. गोपाराम के घर भो. तथा निवास.

बहुत दुखी हुआ.

२४-१-३२ ई. आज जानेको रेलवे
स्टेशनपर गया था. वहांसे कृष्णदत्त के साथ
न जलेकी प्राति इच्छा के कारण लौट आया,
आजभो. एक ब्राह्मण के घर, रातको रोजका
दूध. कृष्णदत्त ने आज बहुत बरगलाया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः ।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥
तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।

आजयहां बावडीपरशौचस्नानादिकरके
दोनोसमय भो. तथानिवासथी.

हमारेजानेका आज कामुहूर्तसभोंने मिलकर
नक्की किया.

२५-१-३२ सो. ~ आज दोपहर उसी
ब्राह्मणके घरसे रोटी आयीथी. रातको कुछ
नहीखाया. दूध. निवासादिस्थानपर

२६-१-३२ मं. ~ आज उसीब्राह्म-
णके यहांसे रोटी आयी थी. रातकोनही
खाया. दूध. निवासादिस्थानपर.

२७-१-३२ बु. — आजउसीब्राह्म-
णकेयहांसेरोटी आयीथी. रातको

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥२६॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते ।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥२७॥

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।

आज यहां बाउलीपर स्नानादि किया तथा दोपहर भोजन यहां.
आज डाढी हजामत ॥ दिये ॥ -) क्लिसिस
फिर शाम को ठणे आया शाम को रोटी खाता ता
त पाति नास पट्टी.
पं. जगदीशराम जी के यहां गया था इसका लड़का बड़ा बीमार है.

कुछ नहीं खाया. दूध. निवासादि यही.

२८-११-३२ बृ - आज सुबः रेल से स्यालकोट गया. ॥।)- टिकट उसी ब्राह्मण ने दिया. ३रु. पं. काशीराम ने दिये. उस ब्राह्मण का नाम पं. केसरनाथ

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥२८॥

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
आज भी नगर हरि हांम के यहां गया था. इसका नया
[illegible] मरगया.

गाडीसे उतरनेके बाद यहां तेजा सिंह का मन्दिर
देखकर फिर कणकमण्डी के मन्दिर में आकर
ठहरा. सन्यासियों के अधिकार में यह मन्दिर
है. दिन में कुछ नहीं खाया. तबियत बीमार
थी इसलिये. रात को ≈॥ दूध ≈। मीठा.
रात भर निवास यहां मन्दिर में.

२९-१-३२ शु.
आज सुबः शौचादि करके बाजार गया.
आज यहां हडताल थी. ≈जलेबी एक अधखुले
दूकान से ली. पर बहुत खराब होने से

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

अष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ४ रवि] २९ नवम्बर [मार्गशीर्ष १२

आज दोनों समय भोजन नहीं

फें कदी. फिर दोपहर यहांके बडे डेरेमें
रोटी खाई. रातको कुछ नहीं खाया
निवास यहीं.

30-1-32 श: — आज सुबः शौचा
दिक रके दो पहर बडे डेरे रोटी खाई.
एक नागर ब्राह्मण से जानपहचान हुई.
इसकी जन्मपत्री देखी थी. इसने ।) दिये
-) रेवडी मैंने खाई रातको कुछ नहीं.
निवास यहीं.

31-1-32 र. — आज सुबः शौचादि
करके ॥) देकर नजीराबाद आया यहां -)॥
... खाकर एक मन्दिरमें बैठकर

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥२॥

त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥३॥

दोनो समय भो. तथा निवास यहीं

आया. यहां एक मन्दिरमें ठहरा यहां का बैरागी
साधु मजाबालिनाथ रहै. यहां रात को रोटी खाई.
निवास भी यहीं. रात को एक ब्रह्मचारी ने दूध पिलाया.

१-२-३२ सोम — आज यहीं मन्दिर में
दोनो समय रोटी खाई. एक खत्रानी ने
आज बहुत आग्रह से ठहराया था. उसके
दोनो लडकों की जन्मपत्रिकाएं देखीं. रात को
उसने दूध भेजा था. एक लोई एक तलाई
(गादी) भेज दी थी. रात को निवास मन्दिर
में ही. आज एक कार्ड डेराइन भेजा.

२-२-३२ मं. — आज यहीं खत्रानी
... आटा २ सेर चावल १ सेर माष की दा...

...mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः ॥४॥
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।

आज गौरी शङ्कर के पर भो. दो ।। एर. रा. । को
डेरे पर से टी रवाना तथा निवास.
गौरी के उके का पत्र आदि लेना
७।। बजे निकास

आधसेर मूंग की दाल १।। पाव घी और
१५. दे गई. आज दोनोसमय खाना तथा रात
सोना यहीं. दूध. यह सब सेने मन्दिर के साधुको
दे दिया. रुपया भी दे दिये

ता. ३-२-३२ बु. ~ आज दोनो समय भो.
तथा निवास यहीं. रातको दूध.

ता. ४-२-३२ बृ. ~ आजप्रदोष:
दिनभरमौज रातको नियमाऽनुसारपारण.

ता. ५-२-३२ शु. ~ आज वंजीर देवी
स्वरूपानीके पतिकी जन्मपत्री देखा दिया,
दोनोसमय मन्दिर में भो. तथा निवास.
रातको दूध.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥६॥
नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥७॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥८॥

दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

६-२-३२ श. ~ आज भौजी अमावास्या स्नान यहां कुए पर किया. दोनो समय भो. यहां निवास भी यहां. रातको दूध.

७-२-३२ र. ~ आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रातको दूध.

८-२-३२ सोम आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. जुलाब (?) लिया. आज रातको फिर बुखार आया. आज शहरमें घूमने गये थे.

९-२-३२ मं. ~ दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रातको दूध. तबियत ठीक नहीं रही.

१०-२-३२ बु. ~ आज श्रीकृष्णने हरखकी चिट्ठी लिखी. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः।१०।
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।

दोनों समय भो. तथा निवास यहीं.

११-२-३२ बृ. ~ आज श्रीकण्ठ नेहरु का भेजा ११५. (ग्यारा) रु. नाभि आर्डर मिला. १५. माति रमें समर्पण किया. दोनों समय भो. तथा निवास यहीं, रात को दूध. आज यहां पधारे गयाथा
नसिंग पञ्चमी
शरीर आलीशा आज

१२-२-३२ शु. — आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं. आज रात बुखार आया. रात दूध.

१३-२-३२ श. रथ सप्तमी आज दोपहर भोजन यहीं आज पुरण पोली खाई. रातको भोजन नहीं किय

१४-२-३२ र. ~ दोनों समय भो. तथा निवास यहीं. आज रात बुखार आया. रातको दूध पीया.

१५-२-३२ सोम — दोनों समय भो. तथा निवास यहीं रातको दूध पीया.

१६-२-३२ मं. -आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥११॥
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् १२
पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥

आजयहां भोजनादि करके शामको 'शमली' पहुंचा. साथ पं. जोगीश्वर कुर्था भांघियाल तक. रातको रोटी नहीं खाई दूध पीया
पं: निहालचन्द पाण्डितके घर निवास.

१७-२-३२ बु. आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

१८-२-३२ बृ: ~ आज भागपत [illegible] में. दोनो समय भो. तथा निवास. रातको दूध

१९-२-३२ शु. ~ आज मेरे [illegible] नियमानुसार रातको पारण. दिनभर मौन.

२०-२-३२ श. ~ आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. आज हमारे कोई [illegible] जूते कोई चुरा लेगया आज ही [illegible] हुए थे. नये के नये थे. अस्तु.

२१-२-३२ र. ~ आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रातको दूध पीया.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥१४॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१५॥
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।

आज सुबः शौचादि करके बाउडी पर स्नानादि किया. यहां पं. उमादत्त अवस्थी मिला इससे बातचीत हुई. बाद दोनो समय पं. निहालचन्द के घर दोनो समय भो. तथा निवास. आज यहां रेलवे स्टेशन 'समजोटी' घूमने गया था. साथ निहाल पण्डित था. वहां से आकर समलोटी बाजार देखा एक महाजन के दूकान पर बैठे थे.

२२-२-३२ सो. माघ २५. पूर्णिमा – आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. ॥रेवडी.

२३-२-३२ मं. – दोनो समय मन्दिर में भो. तथा निवास. आज बुखार आया. ॥ किशमिश खाई. ॥ रेवडी [illegible] भी मर [illegible] होने से सब [illegible]

---

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रवि] ६ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १६

आज सुबः बाउडी पर शौचादि कर के स्नाना-
दिकरके एक महाजनणीके घरगयाथा
यह 'भवन' के ढुण्ढी ब्रह्मचारी की शिष्या है
यहां हलवा खाया दूधपीया। फिर पं. नि-
हालचन्द के घर भोजन करके शाम को
आसुबाडी पं. जोगीश्वरकुर्द के घर पहुंचा
रातको भोजन। निवास यहीं. बैजनाथ में
मिला हुआ ब्रह्मचारी फिर यहां मिला. अपनी
गऊ थी पं. निहालपाण्डित के घर भेजा था

२४-२-३२ बु. आज दोनो समय भो. तथा
निवास यहीं. दूधपीया ।" बरफ.

२५-२-३२ वृ.- आज दोनोसमयभो. तथा
निवासयहीं.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः ।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि॥१९॥
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते ।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्॥२०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्

आज प्रदोष मौन । नियमाऽनुसार रात को पार
ण. आज चामुण्डा गया था शौच स्नाना-
दि करके नन्दिकेश्वर दर्शन किया । ।
पश्चात् चामुण्डा दर्शन । पढाया
शाम को अमुवाडी आया. रात्री में यहां
निवास. रात को बुखार आया.

२६-२-३२ शु. दोनों समय भो. तथा निवास यहीं

२७-२-३२ श. ~ आज दोनों समय भो. तथा
निवास यहीं. आज भंग पी था. अपचान दूध गंगाजल ने

२८-२-३२ र. दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
रात को दूध पीया था. एक रवबी दे गया था.

२९-२-३२ सो. भो. एक समय. रात को कुछ नहीं
खाया दूध दे गया था और दवा भी. पर आज बुखार
[illegible]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

[illegible]

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥२१॥
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥२३॥

मार्गशीर्ष कृष्ण १४ मंगल] ८ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २१

आज सुबः शौचास्नानादि यहां करके
दोपहर भो॰ यहीं. फिर नगरोटा गया.
रातको भो॰ तथा निवास पं॰ किरूजो तसीके घर
रातको बुखार आया.
जोगीश्वर कुई से एक गाउ वीती.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥
अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।

आजसुब: यहां शौचादिकरके एक बाउडीपर
स्नानादिकरके पं. चौधरीकेयहां दोपहरका
भो. करके पं. केशवश्रोत्रियसे मिलकर 'भवन'
गया. १५- चौधरीने जबरदस्ती दिया
शामको ७ मील पैदलचलकर 'भवन' पहुंचा.
भगवतीदर्शन ७। चढाया. रात्रीमें निवास
श्रीलक्ष्मणकुण्डीके घर. रात रोटी नहीं खाई
रातको बुखार आया. जोगीश्वरकुईसे
ली हुई गडवी फूटी। निकली उसको पं. किट्ठ
जोतसीके घर रखकर वहांसे दूसरी गडवी
ली.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सिद्धयसिद्धयोर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः॥२७॥
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥२८॥

आज शौचस्नान। देवीरभट्टमें करके
भगवतीका दर्शन किया.
७॥ पे ७॥ दही खाया.
।फिर बालकृष्णकेघर भो. करके गौरीशा
के दूकानपर बैठा था।फिर दुर्गी ब्रह्मचारी
के पास गया था. वहां दूध पीकर पद्मनाभ
कुई के साथ ।फिर शामको ठाणे आया।
रातको पं. बदरीदत्तके घर निवास,
रोटी नहीं खाई रातको बुखार आया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं श्रृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी
यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।

आज भो. एकसमय.
रात को नहीं क्यों कि बुखार की शिकायत
आजस्नान नहीं किया.
)॥ किशमिश

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥३१॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२
धृत्या यया धारयते मनः प्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ शनि] १२ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २५

आज भी- यहीं. एकसमय
स्नान नहीं किया. रातको कुछ नहीं खाया
रातको बुखार आया
ॐ शिवशिव.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ३५
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।

आज भी एक समय. रात को कुछ नहीं
))॥ कि शान्ति रा आजस्ना नाकिया.
आज बुखार जडीका रातको बहुत
जोरसे आया.
४ रु. रंगाईके कोदिये जूते और
२ कमीजें सीनेको

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥३६॥
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ।३७।
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ५ सोम] १४दिसम्बर [मार्गशीर्ष २७

आज भी एकबार. रात को कुछ नहीं.
आज बुखार नहीं आया. पर पसीना आया.
आज स्नान नहीं किया.
ऐसे तबियत नहीं थी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३६॥
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः॥४०॥
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।

आज भी • प्रातःसमय रात्रि सिर्फ एक रोटी
स्नान नहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ७ बुध] १६ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २६

आज भी· एकबार रातको नहीं खाया.
आज बुखार आया रातको.
स्नान नहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।

आज भो. [illegible] के घर
भगवती के दर्शन)। चढ़ाया
आज पुनः शामसे भवन पहुंचा.

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः।२०।
निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।

आज भी दोनो समय भो. यहां बालकृष्ण के घर. भगवती दर्शन।।

आज ढुंढी ब्रह्मचारी के यहां गये थे. दूध पीया. धनिया के पकौडे खाये. बंगाली सन्यासी से खूब बात चीत हुई यहां (वीरभद्र आ) जहू पण्डित पं. उमादत्त पं. पोलीराम भी यहां आये थे इनसे बातें हुई.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।२२।
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।

भो. बालकृष्णके घर भगवतीदर्शन
बंगालीसन्यासीके साथबातें करके दुण्डी
ब्रह्मचारी केयहां दूध पीकर ४बजे शामको
चलेसो ६॥बजे ठाणा पहुंचे. साथ
बंगालीसन्यासी, पद्मनाभकुई, माधवकु
ईभीथे. आज सुबः हरिद्वारघाटपर
बाणगङ्गामें स्नानादिकियाथा.
रातको भो. ठाणेमें पं. बद्रीदत्तकेघर
रात्रिभर निवास.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते । २३ ।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना । २४ ।
दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।

वैशाख कृष्ण १० रवि] १२ अप्रैल [चैत्र २६

भो॰ दोनों समय तथा निवास यहां.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।२२।
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।

भो. बालकृष्ण के घर भगवतीदर्शन
बंगाली संन्यासी के साथ बातें करके दुण्डी
ब्रह्मचारी के यहां दूध पीकर ४ बजे शाम को
चले सो ६॥ बजे ठाणा पहुंचे. साथ
बंगाली संन्यासी, पद्मनाभ कुई, माधव कुई थे. आज सुबः हरिद्वारघाटपर
बाणगङ्गा में स्नानादि किया था.
रात को भो. ठाणे में पं. बद्रीदत्त के घर
रात्रिभर निवास.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

आज भो. धर्मशाला में एक टोपी ब्राह्मण के घर
~~ठे...~~
आज सुब: आगराउ से चले सो सिद्धबाडी
में शौचादि करके घंजरमहादेव पहुंचे.
यहां स्नानादि करके एक ब्राह्मण के घर भोजन
किया =) दक्षिणा जबरदस्ती दी. साथ
बंगाली सन्यासी और शतानन्द भी था.
बंगाली सन्यासी घंजर में ही ठहर गये.
मैं यहां देखकर ३॥ बजे निकला सो
६ मील चलकर धर्मसाल पहुंचा साथ शता
नन्द भी था. (यहां से ६ मील धर्मसाला है.
ठाणे से घंजर ८ मील पडा. धर्मसाल से २ मील
पर सेटगंज में नैपाली मा... ...नन्द के घर
पहुंचे. रात्रि निवास और भो. यहां. आज कुल १७
मील चले

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ।२७।
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ।२८।
अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।

भो· अपने हाथ दालभात बनाकर
नैपाली पं· देवानन्द के घर खाया.
सुब: उठकर नैपाली साधू के साथ
यहां से 'मकलौडगंज' देखके भागसूना
ग में स्नानादि करके 'धर्मकोट' देखते हुए
डल देखकर परसेट गंज मे देवानन्द के
आये यहां भोजनादि करके २ बजे ति
काला सो धर्मसाला देखकर 'डाडी' होकर
'तंगलोटी' आकर 'गोपा पण्डित'
के घर रात [illegible] पास और भोजन किया.
यहां आते ही पं· [illegible]

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आज प्रदोष नियमानुसार जी को पारण की (समें)
आज पुनः उठकर तमुओटी से 'भगाल्लाड' = [illegible]
२॥ बीते चलकर पहुंचा. यहां पं. [illegible] के घर पहुं
चते ही यहां 'स्वामी सोतानन्द तीर्थ' [illegible]
बैठे हुए देखे. इनका आज प्रथम ही दर्शन हुआ.
आज मौन. मैं स्नान को जा रहा था. सो पं. [illegible]
[illegible] गया. इनके यहां 'कोठी' का युवराज [illegible]
[illegible] सिंह आया था इसके साथ २५-२६ आदमी थे
इन को मेरे दर्शन की बहुत इच्छा थी. [illegible] इनको
आर्य भक्तों से अभिनन्दन पुस्ती [illegible] की
तरफ से लिखकर दिया. बाद इसके (युवराज के) बहुत
आग्रह से फिर उनके साथ भवन' गया. यहां
रात को [illegible] में भात बना [illegible]
रात को फिर बातचीत हुई. इनके साथ एक [illegible]
[illegible] का पं. वासुदेव है. यह बड़ा ही भोला
है. और पंडित भी अच्छा है. बुद्धिमान है.
भगवती दर्शन [illegible] चढ़ाया. रात को [illegible]
पं. [illegible] के डेरे सोया साथ पं. [illegible]
और पं. [illegible]

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ३१
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ३२
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।

आज पुनः उन कर धोरभद्रमे जाशिष्ठसे दसोमिरा
इसनेकोटोथत तूकोलिपेलडाही आग्रह किया. ब्यासी
नागनन्दके ठाठानि हुए चलते समय १रु. मुझे पुनः
राजभीतरफसे मिलता था मैंतसेनेसे इनकार कर दिया.
फिर वहां से झाड़खाड ग्रामीण जाकर पहुंचा.
सा. प. बद्रीनाथ पं. जगदीशराम उर्दू पं. पद्मना-
भजुई पं. कुं॰ नारहारी थे. जहां पं. पद्मनाभके
घर गये. इसने आज बहुत आग्रह किया इस-
लिये आज हमने भोजन यहीं किया शाम
को पं. बदरीदत्तके घर भो. निवास.

मुनताजने अपनी दस्तखतसे दो पत्र जोगीन्दरनगर
के दो ठेकेदार 'अहमदहुसेन' और 'अब्दुलसलाम'
के नाम दिये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।३४।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।

आज दोनों समय भो. यहीं (बदरीनाथ केघर)
आज यहां मैंने आलमारियों को तस बीरों को
बारानिशल गाया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि।३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि।३६।
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।

आज सुबः शौचस्नानादि करके रोटी खा कर 'नगरोटा' पहुंचा यहां पं. केशवदत्त श्रोत्रियके पास गया था पर वह मिला नहीं. फिर पं. केरू ज्योतिषीके यहां पानी पीकर पं. चौधरीके यहांगया यहांसे 'बैडू' को साथ लेकर स्टेशन रेलवे पर जाकर १रु. =) का टिकट 'जोगीन्द्रनगर' ले ३।। बजे पहुंचा. यहांसे ५ मील पैदल चलकर 'टण्डल' पर पहुंचा यहां ठेकेदार 'मिर्जा बदरुद्दीन' से मिला उसको चिट्ठी दी उसने दुकान में रहने का बन्दोबस्त कराया. रातको एक ब्राह्मणसे रोटी हलवा आलू बनवाया. वहां

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा। ३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ३८
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

आज यहां एक झरने पर शौच स्नान आदि करके फिर
हलुआ खाया. ठेकेदार आया था. उसने 'ट्रक'
का दो आदमी का पास और एक आदमी भी
साथ कर दिया. फिर इसने एक सिख मिस्त्री
साथ कर दिया था. उसने 'टनल' = सुरङ्ग अन्दर
से सारा दिखलाया. यह दुकान भी ठेकेदार और
लाला ह्कामल की साझे की है. फिर यहां से आद-
मी को साथ लेकर २ मील चलकर 'ट्रक' पर चढ
कर ऊपर उतरे. फिर यहां से २ मील चलकर दूसरे
'ट्रक' के स्टेशन पर आये. पर यहां के स्टेशन मास्टर
ने बहुत बुरा व्यवहार किया. इसलिये हम पैदल
ही [illegible] बरोट चले इस जगह से बरोट कोई
३॥ मील है. बरोट में आते ही लाला ह्कामल की दुकान पर
पहुंचे यहां थोडे बैठकर फिर यहां की टण्डलें खाने ग-
या था साथ में लाला ऊधोराम था. यहां दूध पीया.
[illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३६
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।४०।
योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।

आनखुन: शौचस्नानादि करके यहां रोटी खाई
आज ठेकेदार अब्दुलसलाम 'दुकान पर आया था.
इसके ताम फोटोके लिफाफा हमको भी दुई थी हल
को देदी. यह बहुत तारीफ है. इसने अपने साथ ले
जाकर बहुत का नाहर और सारी मकानों खूब
दिखलाई. रोटी इसी दुकान में खाई. लालो
कूरामल ने बनाई थी. यह बहुत तारीफ है. दूध
पीया. फिर ठेकेदार अब्दुल सलाम ने अपनी
घोड़ी पहाड़ पर जाने के लिये मंगाई थी. उसपर
बैठकर ऊपर आया. वहां से पैदल २॥ मील टेक
के स्टेशन पर आया. यहां से फिर ट्रक में बैठ-
कर नीचे आया. रात होजाने के कारण फिर
दण्डे पर इसी दुकान में पहुंचा. इसमें लाल
सिंह राम और राम भजु नौकर है. रात को
भी तथा निवास यहीं. बरोटे से आते
समय ठेकेदार अब्दुल सलाम ने ५ रु.
दिये. और कूरामल ने ५ रु. दिये.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।४१।
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ।४२।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यास-
योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

(अक्षयतृतिया)

आज सुबह उठकर यहां झरने पर शौच स्नानादिक के दूध पीया. फिर ठेकेदार बदरुद्दीन दुकान पर आया था. इससे बातचीत होने के बाद इसने एक आदमी साथ कर दिया. फिर ट्रक से हम सकरौटी आये. एक बाबू ने पास ले लिया और फिर दिया नहीं. इसका नाम 'शर्मा' है. यह बड़ा ही धूर्त है. पता लगाने पर मालूम हुआ की यह बहुत ही शरारती है. अस्तु. सेठ सूरजमल की दुकान पर पहुंचा. इस दुकानदार के नाम 'बूरामल' ने चिट्ठी दी थी. इसने होटल में रोटी खिलाई. ४ फुलके मैंने खाये. यहां ३॥ बजे तक था. फिर यहां से पैदल चलकर 'ऐरू' पहुंचा. 'कोटोमन्डर ओवार' से यह ८ मील है. यहां महात्मा 'तुलसी [illegible] रामजी' के भतीजे के दुकान में रात भर निवास. महात्मा के भतीजे ने रोटी खाई थी वह हमने खाई.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

आज सवेरे यहां एक बावड़ीमें शौचादि करके
स्नानादि किया. फिर 'सना' यहांके महात्मा
'तुलसीराम' जीके पास ले गया. इनके पास कोई
ब्राह्मण था बातें भी बहुत हुई. ये ब्राह्मण हैं
[illegible] रमना, विद्वान, और विरक्त महात्मा हैं.
ये अपने घरमें ही रहते हैं. अभी इसी वर्ष कि
इनके स्त्रीको शरीरान्त हुआ. लोग कहते हैं कि
इनको रामचन्द्र दर्शन हुए हैं. मुखपर भी तेज
है. यहांसे ।।। =) टिकट लेकर गाड़ीसे नगरोटा
आया यहां पं. केशवदत्त श्रोत्रियके यहां भोजन
किया. फिर रामको 'पठियार' में पं. पद्मनाभ
के पास गया था. यहांसे रातको चामुण्डामें पहुं-
चा. रातको रोटी यहां खाई. आटा २ रु. शिव
रामसहदेने दिया. रात्रिभर नाईके शरके
कोठरीमें निवास. चामुण्डा।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्॥१॥

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते॥२॥

आज सुबः शौचादि करके स्नानादि क्रिया
आज पं. बद्री दत्त के पुत्र प्रियंवद का उपन
यन संस्कार यहां चामुण्डा में हुआ, सो मैं यहां स्वा.
शापको पं. हरदत्त दीक्षित के साथ जिदरांगढ़
गया यहां रात को भी. तथा निवास
पं. बद्री दत्त ने एक धोती एक कमीज एक टोपी
और ४ रु. नगद दिये.
चामुण्डा दर्शन तथा नन्दिकेश्वर दर्शन किया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञेयः स नित्यसन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ३
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥४॥

आज पुनः श्री [illegible] के [illegible] लाल [illegible] (डाक्टर) से
[illegible] पहुंचा. भो. यहां (पं. बद्री दत्त के घर)
आज यहां भी वनीर भी. रातको पाठ बजा गाना
बजाना हुआ.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ।५।
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ।।६।।

पुनः शौचस्नानादि करके यहां भोः
घरांमारे मां व वालो से ३१ रु. मिले.
१रु. प्रियंवद को दिया यहां से चलते समय गांधवे
२०-२५ आदमी स्कूल तक पहुंचाने आये थे.
पं. बद्रीदत्त और इनके दोनो पुत्र वेदराम
तथा प्रियंवद रोने लगे. अस्तु. प्रेमका बन्ध
न सबसे बडा बन्धन है. यहां से ६।। मील छ.
चलकर अपरान्ह समय भवन पहुंचा साथ
'डसोह' का पं. कृपाराम गया था. बालकृष्ण
धूण्डी के घर रहे. रात को रोटी पर घर खाई
भगवती दर्शन हुआ चढाया रात्रि को यहीं
निवास.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्

आज सुब: शौचादिस्नानादि बाण गङ्गापर हरिद्वारघाट में किया.

कृपाराम भुग्गाको समझा बुझाकर घर भेज दिया. यह मेरे पीछे मेरे साथ चल ने के लिये पड़ा था. भो॰ बालकृष्ण के पास दोनो समय शाम को पुण्डीब्रह्मचारीके पास गये थे वहां दूधपीया, उन्होने ५ रु॰ दिये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥९॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

तिथीके अनुसार आज विवाह दिन ४ वर्ष पूर्ण.
आज शौचादि करके 'वीरभद्र' में स्नानादि क
रके वीरभद्र दर्शन करके भगवती वज्रेश्वरीका
दर्शन किया ।) और ।) बतासे चढाये ।) कुमा
री । भाजा. बालकृष्णके घर भोजन करके.
रेल्वे स्टेशन पर ११। बजे पहुंचा. स्टेशन व
भवनसे २॥ मील है. बालकृष्णने १रु. ।) दिये
१रु. ।।।=) कांटिकट पठानकोट का खरीद कर
१॥ बजे गाडीपर सवार हुआ ५।।। बजे
पठानकोट उतरा फिर यहांसे ३रु. १ आनेका
रोपड का टिकट लेकर रेल पर सवार हुआ.
९ बजे अमृतसर उतरा. ~) लड्डू ।।। गं
डेरी ~) शरबत. १२ बजे फिर यहांसे रेलपर
सवार हुआ

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ११
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते १२

आज सुबः ५ बजे सरहिन्द पर उतर कर रोपड़ के
गाडी में बैठे. ८ बजे रोपड पहुंचे यहां
शतद्रु में जाकर स्नानादि कि फिर २) गायत्री
खाना खा कर पानी पिया. फिर १-२) टिकट ले
कर फिर गाडी से 'कुराली' उतरा यहां
पं. मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषी के यहां पहुंचा.
यहां आज रोटी खाई. यहां आज श्रीगोपाल शा-
स्त्री से परिचय हुआ. पं. मुकुन्दवल्लभ
मुझ पर बहुत प्रेम करता है. रात को दूध ही
पीया. रात को निवास यहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

आज प्रदोष नियमाऽनुसार रातको पारण. मौन दिनभर.

कुराली— यह जि॰ अम्बाले में एक अच्छा कसबा है. तहसील खरड में है. १० मील पर यहासे रोपड है. जहां सतलुज-सरहि कीनहर निकाली है. ०या पार यहां [illegible] बाढ रहा है. ३-४ हजार घरों की आबादी भी है. २-२॥ सौ घर ब्राह्मणों के है.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥

(नरसिंह जयन्ती)

भो. पं हरदेव तिवारी के यहां. यह पं. मुकुन्द वल्लभ का शिष्य है. उदयपुर की तरफ का है. शाम को घूमने गये थे. साथ पं. मुकुन्द वल्लभ हरदेव तथा श्री गोपाल शास्त्री थे, यहां से सहित सेरोपड तक फेरे लवे लाइन के ड्रिटियस पं. हसन लाल से बात चीत हुई. रात को दूध पीया.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः ।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ।१७।
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।१८।

भो॰ पं॰ मुकुन्दवल्लभके यहां. रात को हरदेव के यहां
आज बाजार में गया था. पं॰ अयुध्याराम के
दूकान पर घडी भर बैठा था. इनका नया मकान
नहीं देखा. इनका लडका पं॰ आर्यानन्द और
मे दोनो अच्छे आदमी हैं.

mi Amrit Vagbhay Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः १६
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः।२०।

आज पं. आर्यानन्द के घर भो. =) ८.
रात को पं. मुकुन्द [illegible] के घर.
आज एक अमृतसर के अन्धे शास्त्री से जान पहचान
हुई. इसका नाम [illegible] है.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

आज पं. हरदेव के घर भोजन.
फिर यहां से मोटर से खरड ≈) किराया.
खरड से ॥≈) चण्डी मोटर से. चण्डी से
रेल से कालका किराया। ≈) कालका से
पैदल ७॥ मील चलकर रात भर एक दुकान
में सोया जाबली में
आज १५. ≈) पं. मुकुन्दवल्लभ ने दिये थे.
रात को भोजन कुछ नहीं
१५ ।≈) का जूता भी इसी ने खरीद दिया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥

आज सुबः यहाँ से चलकर 'धर्मपुर' ६॥ मील चलकर पहुंचा. यहां से १॥। मील 'सिपाटू' की तरफ चलकर एक नाले पर शौच स्नानादि किया. फिर वहां से १॥। मील चलकर एक गांव मे 'अभान्च' मे ठहरा. धूप बहुत हो गई थी. यहां जाते ही एक ब्राह्मण ने खराब व्यवहार किया. फिर यहां एक दूसरे ब्राह्मण ने सरबत पिलाया. यहां के लोग बहुत खराब है. एक ब्राह्मणी ने साग खिलाया पर यह भी बहुत खराब है. एक दरख्त के नीचे यहां छाया मे बहुत देर ठहरा था. यहां के ब्राह्मण बडे दुष्ट और बदतमीज और खराब है. इसका कारण अंग्रेजी राज और कुसंगत है. यहां से मै फिर ५ ||| मील 'सिपाटू' पहुंचा यहां एक मन्दिर मे ठहरा. रात्रीभर निवास यहां. खाया कुछ नहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ।२६।

आज सुबः शौचादिकरके स्नान किया.
यहां एक जि. अम्बाला . त. खरड 'सुहाली' गांव
का एक पण्डित रहता है. 'परमानन्द' इसका नाम है
आज इस पण्डितके आग्रहसे भांग पीया.
सपादू बाजार देखा. —)।।। की बर्फी आध पाव
लेकर खाई. फिर मन्दिरमें आया. यहां एक पड़ो
सा कामिठाई ले आया था. वह लेकर हमने
खाई. फिर शामको बाजारके सड़कके मुहाने
परके ठाकुरद्वारेमें बिस्तर लेकर आया.
यह एक बिलकुल चारों तरफ सड़कोंसे घिरा
एक ब्राह्मण का स्थान है. एक रामचन्द्रका एक
महावीर का एक शम्भुका मन्दिर भी है. इस
ब्राह्मणने इस जगहको खूब चेताया है. इसका
नाम पं. आसाराम है. इसका नौकर 'रामरत्न'
एक ब्राह्मण मुझसे प्रेम करने लगा. रात निवा

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः॥२८॥

आजसुबःउठकरनीचेबाउडीपरशौचस्नानादिकर
के दोपहरपरभोजनाकिया. रातको भी
यहीं रोटी खाई. रात्रीभरानिवासभी
यहीं. रामरख'रसी पहाडीपर अच्छे
ब्राह्मणकुलभ्राहे. इसका व्याहनहीं हुआहै.
यह बहुतही प्रेमकरनेलगा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ओंकारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यास-
योगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ज्येष्ठ कृष्ण ५ गुरु] ७ मई [वैशाख २३

आजसुबः उठकर एकशिवमन्दिरके बागीचेमें हारने
परशौच स्नानादि क्रिया. दोनोवक्त यहां भोजन:
रात्रीमें निवास भीयहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र] ८ मई [वैशाख २४

आज सुबह उठकर [illegible] के तीन [illegible]
में [illegible] ध्यान [illegible] किया दोनो समय
भी यहां कि या तथा रात्रि [illegible] निवास भी।

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो
नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

भो-दोनो नरुल यहीं

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति
यद्वत् । तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥७१॥

चैत्र कृष्ण २ शुक्र]　　६ मार्च　　[फाल्गुन २२

श्री · दोनोश्वरत्वपष्ठी

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता६८
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः६६

चैत्र कृष्ण १ गुरु सं० १६८७] ५ मार्च [फाल्गुन २१

आज दोनो वख्त भो- पढ़ी.
उग

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।

आनन्दोनो वरतन्मो · धवीं .

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४२॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूति-
योगो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

आज यहां पं. आम्बिकाचरण के पास भोजन करके पैदल चायल गया जंगली राहसे १० मील पडा. यहां ठाकुरद्वारे में ठहरा था. रात्री भर. यहां पटियाले के राजपण्डित काल डका रहता है. पर वह बम्बई गया है. इसलिये मुलाकात नही हुई. पटियाले का राज पण्डित पं. मुकुन्द झा बक्शी है-(मैथिल) 'चायल' यह महाराजा पटियाला के स्टेट में है. शिमले से भी ऊंची जगह है गर्मी में यहां राजा साहब रहते हैं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।

दोनोसमयभो. तथा निवास पं. आम्बिका
चरण केपास. यहां पुराने जगमे में एक
सन्यासी महात्मा ठहरे हैं वहां गयाथा.
ये बंगाली हैं. अंग्रेजी के विद्वान मालूमहो
ते हैं. अच्छे हैं परंतु कुछ आडम्बर भी है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New De

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New De

याददाश्त

सन् १९२३ मे [illegible] अनुसार
सन् १९२६ में [illegible] को नूतन
सम्पादन.
सन् १९२७ में [illegible]
को सम्पादन
सन् १९२७ में शार्ङ्ग [illegible]
[illegible] प्रदीप [illegible]
सं. १९८५ मार्ग. कृ. ३ शु. को घर से
निकल जाता.

[illegible]

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यादداश्त

जन्म सं॰ १९६० आषा॰ शु॰ ९ शुक्रवार परन्तु
जन्मकालमें दशमी सूर्योदयसमयमें.
अंग्रेजीतारीख ३ जुलाई १९०३ सन् जन्म.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यादद्दाश्त

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

याद्दाश्त

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

याददाश्त

= अमीरचन्द रत्नजी और शर्मा ये दो तो
आदमी [illegible] नीच हैं।
[illegible] नहीं [illegible] हैं और [illegible]
ऐसे [illegible] में [illegible] शर्मा [illegible]
[illegible] मालूम होगा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यादद्दाश्त

बरोट —

यह जगह बहुत रमणीक है. यहां दृश्य देखने
योग्य हैं. यहां उहल से [illegible]. इस
पानी को [illegible] = जोगिन्द
नगर से बिजली निकाली जाती है. यह जगह
मण्डी स्टेट में है. यहां से कांगड़े की हद शुरू
होती है. [illegible] आब
हवा [illegible] अच्छी है.

साधारण

जोगिन्दर नगर

यह मण्डी स्टेट में है. यहां बिजली का बड़ा भा-
री कारखाना [illegible] है. बाज़ार छोटा सा है.
आबहवा अच्छी है. बरोट के रास्ते पर
[illegible] सुन्दर नहीं. [illegible]
है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

याददाश्त

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

याददाश्त

[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

याददाश्त

पं. बालकृष्ण छुट्टी भवन कांगड़ा
पं. [illegible] शर्मा अनसुनी पो. [illegible]
[illegible] (जालन्धर) कांगड़ा
पं. [illegible] [illegible]

स. मिहर नाथ
रियासी [illegible] [illegible]
सुमेरगीर [illegible]
कठुआ प्रेमनाथ [illegible] मकान
सन्तराम [illegible]
तहसील [illegible]
पं. ईश्वरीप्रसाद शर्मा.
[illegible] डा. [illegible]
[illegible] पालमपुर
कांगड़ा.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

/ क्र० द्यां

यादृदाश्त

ता. १-१-३२ शु. —
आजदोनो समय भो. तथा निवास
दीनानाथ के घर. बुखार आया था.
ता. २-१-३२ श. — ✓
आज दीनानाथके पास खाकर चला
चलते समय दीनानाथने १ रु. दिया
मै गततौर से पैदल 'सीबोकाथाना' शामको
पहुंचा यह १६ मील है.
यहां एक महात्मा बूढे ब्रह्मचारी से मुलाकात
हुई. इन्होने बडे प्रेमसे आग्रह पूर्वक रक्खा.
रातको बृजलाल ब्राह्मणके घर भोजन तथा
निवास महात्मा के साथ.
ता. ३-१-३२ र. आजभी यही महात्माके
साथ एक ब्राह्मण के घर भो. रातको बुखार.
ता. ४-१-३२ सो. आज यहां बृजलाल ब्राह्मण
के घर रोटी खाकर यहां से पैदल ९. मील आकर
'नूरपुर मोड़' पर टांगे पर सवार होकर 'पठानकोट'
[illegible] टांगा ने मीठा रात भर धर्म [illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास-
योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

पौष कृष्ण ७ गुरु] ३१ दिसम्बर [पौष १९

आज दीनोसमय भो-तथानिवास
दीनानाथ के घर. आज बुखार आया.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥

पौष कृष्ण ६ बुध] ३० दिसम्बर [पौष १४

आज दोनों समय भो-तथा निवास दीनानाथ के घर आज 'पड़ुआ' गए थे. एक साधू के डेरे पर बैठे थे.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।

आज सुबः पं. बंशीदत्त कांगडा चले गये.
मैं कनौर' दीनानाथके घर आया.
आज दोनों समय भो. तथा निवास
दीनानाथके घर.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥
अर्जुन उवाच
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।

आज यहां (दीनानाथ के घर) भोजन करके ध्रुवपुरोहित के घर पं. बदरीदत्त के साथ गया. रातको निवास यहीं. भो. कुछ नहीं किया. रातको बुखार आया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥
अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।

आज यहां खापीकर 'डुमेटा' गये साथ पं. आ, दीक्षित और पं. दीनानाथ थे. वहां आधघण्ट ठहरकर फिर लौटकर 'कतनौर' आये. रास्ते में अंधेरा हो गया 'गजनदी' को लांघ जाना बहुत तकलीफ पाई. कतनौर से 'डुमटा' ढाई मील पक्का है. रातको दीनानाथ के यहां। दिनको 'ध्रुवपुरोहित' के यहां भोजन किया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ६६
इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥६७॥
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥६८॥

आज यहां (जगतराम के यहां जिणोटा)
रोटी खाकर 'कतनौर' आये. फिर शाम
को पुरोहित 'ध्रुव हेपाड़' मे होके आये.
साथ पं. बदरीदत्त थे. रात को भो. तथा
निवास यहां ध्रुव के घर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सर्वगुह्यतमं भूयः श्रृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।६४।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥६५॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

आज यहां (दीनानाथ के घर)
खा पीकर 'जिणोटा' गये थे. साथ
पं. बद्री दत्त और दीनानाथ थे.
आज रात को दीनानाथ के ससुर के घर
'जिणोटा' में ही रहे हमको बुखार आया,
इस कारण हमने कुछ खाया नहि.
दीनानाथ के साले नाम पं. जगतराम पाले
त है. आज 'प्रभाव' 'माण्डिलेड' होकर
फिर जिणोटा ही आये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥

आज यहां (दीनानाथ पाधा मास्टर of कन्या पाठशाला हटाड) भोजन करके भगरो टस्करियां यहां से ४ मील गये थे साथ पं. बद्रीदत्त, दीनानाथ, तुलाराम, थे. आज दीनानाथ ने सत्यनारायण पूजा की पं. बद्रीदत्त ने कथा बांची. रात को भो. तथा निवास यहीं.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति५९
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।

आज सुबः उठकर सूर्योदयके पहिले नगरोटे आये. यहां स्टेशनपर जाकर बौने नौकेरे गाड़ीमें बैठे साथ पं. बद्रीदत्त थे टिकट मंगवालका १रु. का मेरा पं. बद्रीदत्तने ही लिया. फिर ११॥ बजे हम पठानकोट मंगवालउतरे यहांसे ३ मीलहरयाड़ों में दीनानाथ से मिलकर। फिर उसके घर कदनौर गये. रास्तेमें गाडीमें 'तुलाराम पुरोहित' भी मिलाथा. रातको यहांही टीस्वाई रातमें निवास यहां.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् । तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥ न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च

आज सुबः उठकर पैदल ११ मील चलकर .
एक दूकान पर बैठा. उस समय बुखार चढ़ रहा
था. दूकानदार ने पानी तक नहीं दिया.
इधर के लोग बहुत निर्दयी होगये हैं.
यहां से चलकर पक्के बावली पर बैठा था.
फिर सोया था. यहां बुखार पूरा चढ़ गया.
फिर आगे एक दूकान पर ।॥ दूध मीठा पी
या. फिर आगे ।॥ पेडे ।॥ खोहरे ।। दूध
खा पीकर यहां से पैदल चलकर शाम
को ओरछा में पहुंचा. यहां एक बन्द दूका
न के बाहर के पास रात भर सोया. यह
जगह मण्डी से २३ मील ५ फर्लांग है. यहां
आधसेर दूध ~)। मीठा ।। पीया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥ किरीटिनं गदिनं
चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव। तेनैव
रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ४६

आज सुबः यहांसे गौचादि करके चला सो
८॥ मीलपर एक ब्राह्मणकी दूकानपर
रोटी खाई. -)रोटी ॥ पेडा)॥ छोहारा
)। खाण्ड. फिर यहांसे विश्राम करके ३ मील
चलकर 'मण्डीराहत'में पहुंचा.
यहां भूतनाथके मन्दिरमें पडा था.
यहां पानीकी तकलीफ होनेसे पारकी
मण्डीमें एक मन्दिरमें रातभर सोया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥४५॥
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ गुरु] १७ दिसम्बर [वं० पौष १

आजको तो समपभो. किया.
बुखार नही आया.
स्नान नही किया.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।४६।
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥४७॥
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥

आज एक समय भी· रातको कुछ नहीं.
रातको बुखार आया.
)॥ किसमिस)॥ छोहारे खाये.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ४६
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्धया विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।

आज दो कमीजें और जूता रंगीया
ले आया. दो कमीजों में ६ गज कपडा
१रु.॥।=) का ॥) सिलाई -) बटन १रु.॥-
जूता क्रेपसोल ३६ नं. का जापानी.
आज एक समय भो.
रातको बुखार आया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ११रवि] २० दिसम्बर [पौष ४

(गीता-जयन्ती)

आज एकसमयभी रातकोकुछनही
रातको बुखार आया.
आजगीतापारायण कियाथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥
भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥५५॥
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।

आज एक समय यहां भो·
शाम को कान्हू पण्डित के घर गया था रात में
वहीं रहा. रात को भोजन भी नहीं किया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥५७॥
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ५८

आजसुबः उठकर बदरीदत्तके यहां आया.
आजप्रदोष नियमाऽनुसार पारणरात को.
रातको फिर बुखार आया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे
तराष्ट्राः॥ कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि
त्वां धर्मसंमूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि

जिप्रदोष रात्रीको नियमानुसार पारण.
प्रातः उठकर २ मील 'चिरवाल' पर्व
'भोम' का भाग पर आया यहां शौचादि कर
निपारा में स्नानादि करके नावसे पारउतर
का मार्ग कराया. यहांसे 'नपाणा' में शम्भु
दर्शनकरके 'ओका' में मास्टर पं. दीनानाथ से
इसी स्कूल में मुलाकात हुई इसके साथ पर्वतीय
के 'गांव में आया था. यहां इसका मित्र पं. तुलसा
ने बड़ा मान से श्रीखंड दूध पिलाया. यहां से ५
पैदल चलकर पं. दीनानाथ के साथ उसके गांव कित
नौर' में पहुंचा. पं. बद्रीदत्त शर्मा अवस्थीत था
ने दुग्धादि भी पहीं. आज सभी ने महापुनीत
किया. खीर बनाई भी. पं बद्रीदत्त शर्मा

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषण-
मिन्द्रियाणाम् । अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥८॥

माघ शुक्ल १२ रवि] १ फरवरी सन् १९३१ [माघ १८

आज दोनों वक्त भो. प. ही
और फिर शाम को 'पुराति[illegible] पढ़े

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥४॥
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥५॥
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।

आज दो नो समय श्रो. तथा निवास यहीं . .
आज पं. शिवराम वेदपाठी यहां आये इनसे
शिमले का समाचार मालूम हुआ. ये यहीं ठहरे.
ता. ८-१-३२ ई. — आज नारसिंहदयाल के
आग्रह से यहीं रहा. सुबः यहां से २ फर्लांग
पर एक बागमें बावड़ी पर शौचादि करके
स्नानध्यानादि किया. यहां एक श्रोत्रसनातनिवालय
है स्थान बहुत उत्तम है. फिर [illegible] नारसिंहदया-
लके यहां से टीरवा कर ६ मील चैदल चल
कर 'अघरत्यक' रेलवे स्टेशन पर
शाम को पहुंचा. नारसिंहदयालके घरके
और लोग सब अंगली हैं. सिर्फ एक यह आ
दमी समझदार है. स्टेशन पर ७॥ = बजकी
गाड़ी कर रातभर गाड़ीमें सोया॥ टिकट

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

[illegible]

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु२
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥३॥

दोनो समय भोजन न. भा निवास यहीं.

भजन शुरु किया. फिर ठंड बन्द होगयी. और बुखार बिलकुल मामुली आया. रातभर निवास यहीं.

ता.७-१-३२ई. ~ आज यहां शौभादि करके पैदलचला ७॥ मीलपर एक गांवमें एक ब्राह्मण लंबरदार के यहां भो. करके फिर पैदल शाम को 'शेरपुर' में आया. यह 'फ़ठ एसे १९ मील है यहां रातभर निवास और भो. लंबरदार ब्राह्मण नरसिंह दयाल के घर. [redacted] यह आदमी स्वभाव का अच्छा है

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः॥१॥

कार्तिक शुक्ल ७ सोम] १६ नवम्बर [कार्तिक २६

आजदोनोसमयभो. तथानिवास यहीं.

ता. ५-१-३२ मं. – आज सुबः उठकर पैदल १० मील के टुआ आये. आज प्रदोषथा. पर आज मौन रहना रहस का. यहां एकनाथके पास शिवालेमें ठहरा. प्रदोष दोपहले पावनपर किया –) बफी –)। पेडे)।। दही –) नकुती।। किशमिश –)। खांड.)।। दूध रातमेंनिवास यहींनाथकेपास

ता. ६-१-३२ बु. – आज एक दूकानपर –)। फुलका दाल)।। चायपी दालखाकर यहांसे ~५ मीलचलकर 'पौड़ीधारी' में सडक पर ही एक नयेबनेहुए स्कूली में ठहरा रातमें कुछ

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥२४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

कार्तिक शुक्ल ६ रवि] १५ नवम्बर [कार्तिक २८

आज पं. पद्मनाभ के आग्रह से यहीं भोजन
किया. फिर शाम को स्वर जद्बते समय ठाणे
आये साथ पं. बदरीदत्त थे. आते हुए रास्ते में
अनुनाडी में पं. जोगीश्वर जी के यहाँ गये थे. पर यह
मिला नहीं. रात को भो. यहीं. (बदरीदत्त जी के घर)

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥३८॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ३९
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।

दोनोसमय भो- तथा निवास पं: आम्बिका
चरण के पास.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।

आज प्रदोष मौन नियमाऽनुसार रात को
पारण तथा निवास
अम्बिका चरण के पास.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ६
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।

माघ शुक्ल १४ सोम] २ फरवरी [माघ १६

आज भी २ यही. पौर्णिमा आजही हुई.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ११

फाल्गुन कृष्ण १ मंगल सं० १९८७] ३ फरवरी [माघ २०

आज भी (तुलाराम 'परतियाव' ग्रा वसे.) के यहां
आज सुबः उठकर यहांसे 'परतियाव' होकर 'विपाशा'
में स्नान करने गये. यहां शौचादि स्नानादि करके
फिर 'कततौर' आये साथ में देवगर्भ अ. वस्थी था.
तुलाराम भी साथ था. स्नान करके परतियाव आते हैं
'कततौर' से 'विपाशा' ७ मील है. तुलाराम एक
अच्छा आदमी है. फिर यहां वापी कर 'कततौ
र' पहुंचे रात्री में भी. निवास यहीं.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।६४।
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।

फाल्गुन शुक्ल १४ मंगल] २ मार्च [फाल्गुन १९

(होलिकादहन)

होलीपरनभो॰ यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

फाल्गुन शुक्ल १३ सोम] २ मार्च [फाल्गुन १८

[illegible]
प्रदोष [illegible] पारणा [illegible]
आज [illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।६०।
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।६१।

फाल्गुन शुक्ल १२ रवि] १ मार्च सन् १९३१ [फाल्गुन १७

दोनों पाल भों-पर्ण

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ५८
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।५६।

दोनों वक्त भो- यहीं

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।५७।

फाल्गुन शुक्ल १० शुक्र] २७ फरवरी [फाल्गुन १५

दोनों वक्त भोजन पाली.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ५५

फाल्गुन शुक्ल ९ गुरु] २६ फरवरी [फाल्गुन १४

भो· दोनोसमयपढी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ५२
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ५३
अर्जुन उवाच
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।

भो॰ दो नौसमनयदें.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

आज श्री मुन्शीशरणदास के घर भोजन. रात को भोजन तो निवास यहीं (पं. बदरीदत्त के घर)

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

सिद्ध्यसिद्ध्योःसमो भूत्वा समत्वं योग उच्यते
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ।४६।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।

फाल्गुन शुक्ल ६ सोम] २३ फरवरी [फाल्गुन ११

आज मुंशी गणदास के घर दो जो नरक भो.
निवास पं. वीरेन्द्र के घर.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ।४६।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।

आज सुबः शौच स्नानादि करके भाइ वालों के यहां भोजन करके शाम को ठाणे आया. साथ पद्मनाभ भी था.

रात को नहीं खाया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

व्यवसायात्मिका बुद्धिःसमाधौ न विधीयते ४४
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।

आज सुबेरे यहां शौचादि करकर के बाउली पर स्नानादि
करके बाइलाओं के पहा रोटी खाई. रात को ९ाम थी मैन
होगया सिर्फ दूध पीया.
यहां एक संन्यासी परमहंस रहता है. इस गांव से
इसकी कुटी १ मील दूर है. परमहंस यहां आये हुए
नहीं ए. अच्छे हैं शायद ये ने पाली हैं

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।४२।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।

आज भो. मुरलीरणदासके घर
शामको बरातमे 'भीगारागां' मे पं. बृजलाल अवस्थीके घर
गया साथ पं. बद्रीदत्त अवस्थी (ठाणा) पं. केशवदत्त ज्योति
य और उनका लड़का त्रिभुवन विक्रम (नगरोटा) थे ठाणेसे तिपा
र ११ मील पश्चिम है. रात्रिको व्याह हुआ मैने भोजन नहीं
किया दूध पीया. पं. बृजलालकी [illegible] पुत्री मुरलीरण
दासके लड़केको ब्याही गयी है. ये लालडे लाखैं धनी हैं
नहीं कृपण हैं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ४०
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ४१
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।

दोनों वक्त भो. तथा निवास यहीं (पं. बद्रीदत्त के घर)
आज मुंशी पं. शरणदास अपने पुत्र पद्मनाभ के विवाह
का निमन्त्रण मुझे करने आये थे. यह रियासत कोटा में
मुन्शी हैं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।३८।
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धियोगे त्विमां शृणु ।
बुद्धया युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ३९
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

आज सुबः शौचादि करके गरम पानी से स्नानादि करके जोगी-
श्वरके घर भोजन करके 'नगरोदा' आये पाठशाले में गये थे यहां
से पं. मोती राम जी के डेरे पे उनके साथ गया यहां उन्होंने दूध पि-
लाया. फिर यहां से शाम को ठाणे पहुंचा.
रात को ठाणे में. पं. बद्रीदत्त के घर सो रहा रात निवास यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ३६
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।

आज सुबः श्री-चादिकर के बाणगङ्गा की कूलमें स्नानादिकर के भो. निवासयहीं. पं. पयागभी आयाथा यहां आज शामको 'नगरोटी' गयेथे. पं. कृपाराम पुरोहितके कुटीमें दूधपीया यह अकेला ही है. कुछ हिकमतभीकरता है. फिर यहांसे 'अमुवाडी' चलेआये साथ जोगीश्वर भीथा. रात्रीको रोटी खाई.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ३५
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।

(महाशिवरात्रि)

आज पुनः शौचादि कर के 'ब्राणपाडा' में स्नानादिक
के पं. पद्मनाभ के आग्रह से 'पाठियार' गये. यहां उन के घर
भोजन कर के फिर चामुण्डा में गये. यहां से ठाणे जा रहे
थे कि इतने में पं. जोगेश्वर कुई मिल गया. उसके
आग्रह से फिर 'अमुवाडी' गया. पं. बदरी दत्त ठाणा
चले गये. रात्री को यहां रोटी खाई. इसका भाई
[illegible]धीराम है. पर यह बड़ा ही साधारण स्थि-
ति में है. इसका बाप पुरोहित वृत्ती करता है.
आज मुन्शी पं. शरणदास 'बेदुआठाणा' से परिचय
हुआ. ये कोठी के राजा के मुन्शी हैं. शरीफ हैं
रात्री में निवास यहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ३२
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततःस्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ३३
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

आज शिवरात्रि. यहां 'ठाणे में शौचस्नाना
दि करके फलाहार करके यहां से ५ मील भ्रमण
[illegible] में गये यहां शिवपूजनादि रात्री को
किया जागरण भी किया ~) खर्च हुआ साथ में
पं. बदरीदत्त सपत्नीक सपरिवार थे. [illegible]
शिवरात्री

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ३०
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ३१
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

फाल्गुन कृष्ण १२ शनि] १४ फरवरी [फाल्गुन २

आज सु: १० बजे तक पं. चौधरी के पास था.
दूध पीकर यहां से चल [illegible] पहुंचा [illegible]
कर के स्नानादि करके 'ठाणा' पहुंचा. आज प्रदोष
नियमानुसार सौ पारण.
पं. चौधरी के पास मन्त्रशास्त्र के ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है. ये आत्मध्यानी ज्यादा हैं. पर मुझसे अच्छा व्यवहार किया. ये वाममार्गी शाक्त कहे जा सकते हैं.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति
तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२६॥
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।

फाल्गुन कृष्ण ११ शुक्र] १३ फरवरी [बं०फाल्गुन १

आज सुबः शौचादि करके यहां की एक
पक्के कुण्ड पर स्नानादि किया. यह कुण्ड स्ना-
नादि करने के लिये बड़ा ही अच्छा है.
औ: दोनो समय तथा रात्रि निवास भी यहीं
चौधरी कुई के पास.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

सुबः यहां शौचस्नानादि करके 'पं. पदनाभ तुगणेत' के घर भोजन किया. फिर 'ओगेअ के घर गया पर यह घर नहीं मिला अतः फिर नगरोट' आया. यहां पं. 'श्री धरी कुर्द म-न शास्त्री' के घर गया रात्री भोजन और निवास यहीं पर हुआ. यहां कांगडे के पं. 'पोलो राम' से भी मुलाकात हुई. इसके साथ खूब बात-चीत हुई. यह कांगडे में बडा नैयायिक कहलाता है. कुछ थोडा न्याय पढा हुआ है. बात-चीत बडे प्रेम की हुई. सुजानपुर के पं. राम कृष्ण का यह दामाद है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥

आज निहाल पण्डितके घर भोजन
का. कू पण्डित ने हता' अपने घर ले गया था
इसके यहां दूध पीआ डा... हजामत कराई
भोजन करके लगरोय होकर 'अमुवाडी' में
'जोगेश्वर पुरोहित' के घर गया था यह मिला
नहीं. फिर 'पाठियार' गया यहां एक सूद की
दूकान पर रात्री भर निवास. रात को बूंदी की
कढ़ी खाई दूध पीया. इस सूद लडके का नाम
'सेसो' है. अच्छा है.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२४॥

आज भोजन कर के यहांसे शामको 'नगरोटा' हो कर 'शमशोटी' पहुंचा रात्रीमें पं. निहाल पण्डितके घर भो. तथा निवास.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥२१॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति
नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

आज बालकृष्ण धुणी के घर आज भोजन करके
शाम को 'ठाणा' पहुंचा रात्री भोजन निवास
पं. बद्रीदत्त के घर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा
भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।

फाल्गुन कृष्ण ६ रवि] ८ फरवरी [माघ २५

आज सुब: शौचादि करके 'सर्पकुण्ड' में स्नाना
दि करके वीर भद्र दर्शन किया. आज भोजन:
(लाला नारायण का संकेप हो किया. रात 'श्री आजानकी
प्रसाद' के घर रो टीखा है. धर्मशाला में रात्री भी रात्रि-
वास.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥१९॥

आज सुबः उठकर ७ बजे चले रास्ते में शौचादि कर के १२ मील चलकर 'रानीताल' पर स्नानादि करके 'वेदगर्भ' की दूकान से रोटी खिलाकर 'ज्वालामुखी रोड' रेलवे स्टेशन पर भेज दिया. इससे १=) लेकर मैं पैदल चलकर ११ मील चलकर 'भवन' पहुंचा, ४ बजे. रास्ते में 'दौलतपुर' में =) भी ठी सेव -) पेडा -) दही खाया. मोटर रोड से आया. भवन में लाला जानकी प्रसाद के दूकान पर ठहरा यहां धर्मशाले में श्री भरा निवास. जानकी के यहां रात को रोटी खाई. बिस्तरा जानकी ने ठीक करा दिया था. रास्ते में वर्षा के कारण बिलकुल भीग गया था.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः १६
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥

आज सुबः ४ बजे उठकर पैदल ९ मील चल कर ब्वालाजी पहुंचे. भगवती के मन्दिर से ऊपर के चश्मे पर स्नानादि करके भगवती के दर्शन करके भैरवदत्त भोजकी के घर गये. वह भी घर में था. यहां अपने हाथ भात और आलू का रस्सा बनाया था 'वैश्वगर्भ' और मैंने खाया. फिर यहां 'पं. बाबूराम गौड़' मिल गये शाम भर यहां रहे. शास्त्री को रोटी खाई. 'शयनार्ति' देखी 'नागार्जुन' 'अम्बिकेश्वर' 'कपिस्थान' गया था. साथ 'वैश्वगर्भ' और पं. बाबूराम था.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत १४
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

सुबे: उठकर यहांसे ३॥ मील चलकर 'मौजे खैरियां में 'एन्हाल' के पास एक कुंए पर खड्डु के पास शौच स्नानादि क्रिया यहांसे मियां शेरसिंह के यहां रोटी खाई. यह काश्मीर में शारदामें मिला था. यह गुलेर के राजा के यहां वणन-जीर है. इसका स्वभाव रूखा है. आदमी अच्छा नही मालूम हुआ. यहांसे ७ मील चलकर 'देहरा' पहुंचे. रास्ते में 'विपाशा' के किनारे 'कौडा महादेव' आता है यह स्थान अच्छा है. देहरे में पहुंचतेही 'बेडा भ' के बारेमें पुलिसने खूब तहकीकात की. पुलिस को मेरे बारेमें 'मैं नेदाम को भगा रहा हूं' ऐसा शक था. बादरात्री में सूदों के ठाकुरद्वारे में ठहरे थे. यहांका पुजारी अच्छा नही है. यहां तहसील है थाना है 'विपाशा न-दी है पर किनारा बहुत गहरा है. पानीका बडा जोर है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥

फाल्गुन कृष्ण २ बुध] ४ फरवरी [माघ २१

आज यहां दीनानाथ के घर रोटी खा पीकर
वेदगर्भ को साथ लेकर पैदल ८ मील चलकर
'हरिपुर' पहुंचे कसबा अच्छा है. यहां बाजार
में तालाब पर एक साधु के पास कुटी में रात
काटी. भोजन आदि कुछ नहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः । आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

(गणेश चतुर्थी)

आज सुबः शौचादि करके विनोदा नदीमें
स्नान किया। फिर डेरेपर आनेपर यहांके पं.
दुर्गाप्रसादने देखा और पहचान भी लिया.~
आज भी दो पहर भो. उसी ब्राह्मणके पास
किया. फिर वहींसे आसन उठाकर पं. दुर्गाप्रसा-
दके आग्रहसे दूसरे कुटियामें लगाया.
आज बुखार नहीं आया पर सिर भारी रहा.
और नाताकती बहुत होगयी है. रातको
पं. दुर्गाप्रसादके घरसे इसके भाईने (महेशा
नन्दने रोटी साग लाई वह खाई.
रात भर यहीं सोया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः। एवंरूपः शक्य अहं नृलोके
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥ मा ते व्यथा मा च
विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्। व्यपेतभीः
प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥

भाद्रपद शुक्ल ३ सोम] १४ सितम्बर [भाद्रपद २८

आज सुबः उठकर चला ही था कि वर्षा शुरु
होगयी। फिर यहांसे ३ फर्लांग पर एक दूकानमें
बैठ गया. फिर यहांसे ओगिन्दरनगर पहुंचा
यहां एक हलवाई के दूकानमें -)॥ जलेबी)॥।
दूध लिया. खापीकर उस दूकानमें एक मेज़पर
३॥ बजे तक पडा रहा. आज भी थोडा बुखार
आया था. फिर ४ बजे यहां पैदल चलकर
रात को करीब ८ बजे 'बैजनाथ' पहुंचा
यहां तारापुर में धर्मशाला में ठहरा यहां (तैल.
ऊ ब्राह्मण रेलवे इञ्जिनियर दफ्तर में नौकर)
एक ठहरे मुसाफिर ब्राह्मण के पास रात को
भोजन किया. यहीं रातभर सोया. यहां के
साधु बेअक्ल ने हमको पहचाना नहीं.
आज २६ मील चला.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ।२२।
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।२३।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।

कार्तिक शुक्ल ४ शनि] १४ नवम्बर [कार्तिक २७

आज सुबः उठकर चामुण्डा गया यहां शौचादि करके बाउली पर स्नाना दि करके भगवती का दर्शन किया) १ चढाया. फिर यहां से पाठियार पं॰ पद्मनाभ के घर आया. यहां भो॰ किया आज पं॰ पद्मनाभके लडकेका प्रथम वार्षिक जन्म दिन था. रातको दूध पीया. रातको यहां खूब गाना बजाना हुआ. रातभर यहीं थे.. आज कुमरयावैद्य पं॰ लीलाधर तैवाडी मिला यह भी पं॰ पद्मनाभके घर आया था. रातको दूध पीया. एक पं॰ कृपाराम नामका अपने घर ले गया था. इस ने दूध भी पिलाया था. उन्‍ने लेखके [illegible] कहा कि - पं॰ विश्‍नदास कुई कहता था कि 'हां मैं उनको जानता हूं मुझे फलाने जगह जाना है टिकाने जगह जाना है ऐसा कहकर लोगों से पैसे मांगता है और लोगों को [illegible] ता है'

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् २०
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् २१

आजयहांभोजनकरकेशामको पठियारगया साथपं.बदरीदत्तभीथे. यहां पं.पद्मनाभके घरगये रातकोभी.निवासयहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः॥१८॥
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।

आज दोनो समय भो. यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥१४॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

कार्तिक शुक्ल २ बुध] ११ नवम्बर [कार्तिक २४

दोनोसमयभो· यहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।

(अन्नकूटम्)

दोनो समय भो. यहीं
आज से सीतोपलादि चूर्ण खाना शुरू किया.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ६ ॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः १०
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥

कार्तिक कृष्ण ३० सोम] ६ नवम्बर [कार्तिक २२

(दिपावली) (सोमवती अमावस्या)

आज दोनो समय भो. यहीं
आज रात को खीर खाई

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते॥७॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।

आज दोनों समय भोजन नहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥४॥
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥५॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

~~आज...~~

आज प्रदोष मौन रातको नियमाऽनुसार पारण
आज पं. रंगीलाराम केसाथ फतेसिंग शिष्य
हमसे मिलने आया था. इसको संसार से
वैराग्य हो रहा है. यह भागसू धर्मशाला में
ठहरा है.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।

आज दोनों समय भो· यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥

कार्तिक कृष्ण १० गुरु] ९ नवम्बर [कार्तिक १८

आज दोनो समय भोजन यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत२०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

कार्तिक कृष्ण ९ बुध] ४ नवम्बर [कार्तिक १७

आज दोनों समय ओ.यही

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

चाहम् ॥१५॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव
च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते १६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

कार्तिक कृष्ण ७ सोम] २ नवम्बर [कार्तिक १५

आज दोनों समय भी नहीं. आज यहां से ११मी-
ऊंचलकर 'नयना' देवीका दर्शन किया)।
पढा था

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः। अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥१४॥ सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव

दोनो समय भो० यहीं

आज एक पत्र को टीके टीके को नत्थू पण्डित के हाथ भेजा इसीमे पं. भीमादत्तजोशी की भी चिठ्ठी लिखदी है.

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः॥११॥
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥१२॥
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।

दोनों समय भो. यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥

आज सुबः शौचादि यहीं के एक बाड़ ऊपर करके फिर कान्हू पण्डितके घर आया. यहां भोजनकरके फिर स्कूल में थोडे देर बैठकर पं. बदरीदत्तके घर आया. रातको भो. यहां.

ता. २०-३-३२ र. – आज प्रदोष मौन. आज हरिपर्वतदर्शनको गया था. दिनको [illegible] मिश्री और [illegible] खाया. रातको नियमानुसार धारणा. आज श्रीमाताजीने मेरे लिये १ डायरी (गीताडायरी) खरीद कर [illegible]

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥६॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥७॥
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।

आज दोपहर भोजन तारियहां करके राम को घूमने गया था. वहां काव्य पंचौधरी का लड़का मिला इसके आग्रह से आज इसी के घर रात्री भर रहे. और भी रात्री का इसी पण्डित के घर किया. निवास भी यहीं.
जिसको मैं काव्य समझता था वह काव्य नहीं बल्कि काव्य का लड़का रामरस है.
दूध पीया था. कथा का कार्य जड़ के भी भाजन व ठिठोली तो स्वागत अच्छा किया. भीयालाल मनोपदेश के लिये पीछे लगा हुआ है. कुछ काव्य भी प्रेम करते हैं. पं. प्रेमनाथ सन्धी भी मिला था. इसका भजन हार कुछ दुबला सा हो था.

१९-3-32 ५ - आज मुझ ..... = रात्री

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः । तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥४॥ निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः । द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥५॥

आज दोनो समय भो. यहीं निवास भी.

गुलमार्ग में बाजार में रात भर सोया. पुलपर मह सदला दिया था. लारीमें (दोनों) ३ मुसल मान और एक अंग्रेज औरत और उसके दो बच्चे थे. ७ माल इतना भरा था कि बैठने को भी अच्छी जगह न थी. बड़े मुश्किल से पहुंचा. लारी पिण्डी मोटर ट्रान्सपोर्ट सर्विस की थी.

१८-३-३२ शुक्र. एकादशी (फा. शु. ११९८८ ...) आज सुबः [illegible] के यहां से (दो मेल से) लारी पर सवार होकर शामको ५ बजे श्रीनगर काश्मीर पहुंचा. ... मे ... कि ... सिधु रना है. यहां लारी से उतर कर पं. ... के ... आया ... श्री नगर में ... रात भो. ... आज

...mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan...

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषय-
प्रवालाः। अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानु-
बन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥ न रूपमस्येह तथोप-
लभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा। अश्वत्थमेनं
सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्वा ॥ ३ ॥

आज एकसमयभो. दूसरे समयकुछ
नहीं खाया. प्रकृती ठीक नहीं थी.

१६-३-३२ बु. आज सुबः 'कोहो' (बावलीयां) पर
शौचादिक्रिके महात्मा नंदु निरञ्जनजी के रसोई
मे भो. दोनों समय. यहां की लाइब्रेरी देखी.

१७-३-३२ बृ. आज सुबः शौचादि करके लारी
मोटर की टिकट ८रु. देकर 'ताराचन्दसे लिया.
जाते समय रु. 'नंदु निरंजन ने ६ पे. आना=)
को पे खाये (रावलपिण्डी मे) फिर लारीपर सवार
होकर काश्मीर को लिये रवाना हुए. १० बजे लारी चली.
लारी नं. १२९८ था. ३॥ बजे 'कोहाला' पहुंचे. यहां
जेहलम का पुल टूटने के कारण लारी से उतर पुलपार
पैदल गये. वहां दूसरे लारी मे बैठे. इसका नं. १३४४
था. यह ५। बजे चली. ७॥ बजे 'दोमेल' पहुंचे.
यहां ~)॥ ≡ दूध (~) ॥ जलेबी खाकर एक

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥१॥

आश्विन शुक्ल १५ सोम] २६ अक्टूबर [कार्तिक ८

(शरद पूर्णिमा कार्तिक-स्नानारम्भ)

आज दोनो समय भो. यहीं.
आज रात को खीर भोजन यहां.
आज पं. बदरी दत्त ने दिये हुए कपडे की दो लंगोटी
और दो बन्धन बनाये.

मन्दिर मे सराफों के बाजार के पास रहते हैं.
यहां शौचादि करके दोनो समय भो. तथा
निवास किया. शाम को घूमने गया था
॥ बरफ खाया.

१५-३-३२ मं.~आज दवा ली थी. दवा डा. सेन
की की बनाई है. दस्तुराक की शीशी है.
॥=) दाम है. पैसे महात्मा ने दिये थे. रात को
रोटी नहीं खाई. =) दूध ला पीया.
[illegible] आया. भो. [illegible]जन के पास

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च २७
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभाग-
योगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

आश्विन शुक्ल १४ रवि] २५ अक्टूबर [कार्तिक ७

आज दोनो समय भो. यहीं.

१३-३-३२ र. आज सुब: उठ कर शौचादि करके किला आ रहा था. यहां के घड़ों में प्रेम नहीं है. यहां भोजन करके पैदल ५ मील चलकर गुजरात स्टेशन पर आया यहां मन्दिर में थोड़ा हलुआ खाया. पानी पीया. फिर स्टेशन पर गया. १५.॥=) काटकर खेवार ९ बजे तक के गाड़ीसे रावलपिण्डी रवाना हुआ. मुकुन्दी लाल ने दी हुई धोती यहां के महन्त द्वारकादास को दे दी. लालामूसा स्टेशन पर ।। गंडेरी ।। केले खाये.

१४-३-३२ सो.— आज सुब: ५ बजे रावलपिण्डी स्टेशन पर उतरा ।। खो-चातिया. ८। बजे तक मुसाफर खाने में था. फिर स्नान करके शहर में यहां

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥

आश्विन शुक्ल १२ शनि] २४ अक्टूबर [कार्तिक ६

एक समय भी यहीं रात को कुछ नहीं

पण्डितों का स्थान है. यहां एक धूनी मन्दिर है. यह एक ... आगा है. माल ... का ... पण्डितों ... दर्शन करके एक गुरुद्वार में गया था. पूछ ... खवाने ने दवा दी थी. फिर जो ... आया. अपने हाथ बनाकर दूध भात खाया ... शंकरदास ने भी दवा दी थी पर बुखार आया है ... दूध पीया. कि ... का स्थान ... के साथ ... के ... है.

१०-३-३२ ... आज दवा खाई थी अपने हाथ बनाकर भात दूध के साथ खाया रात को दूध ...

११-३-३२ ... आज दवा खाई थी. अपने हाथ बनाकर दूध भात खाया. आज मुकुन्दी जी ... ... आज तो खरीद कर दिया. रात को कुछ नहीं

१२-३-३२ . आज दवा पं. शङ्करदास की खाई अपने हाथ बनाकर दूध भात खाया. रात को दूध नहीं बुखार आया.

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi
Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः२४

आश्विन शुक्ल १२शुक्र] २३ अक्टूबर [कार्तिक ५

आजप्रदोषमौन नियमाऽनुसार पारण
आज १ रु० जगुकुईने पुस्तक पर कथानिमित्त
चढाया.
आजतबियत बहुत बीमार हुई थी.

ता० ७-३-३२ सोम आजदोपहरआ मुकुन्दीलाल
आलकेयहां भो. आज जेठजम के नहर पर गये थे.
यहां स्नानादि किया. आज कजसोमवती अमावा-
स्या हुई. शालको हमने अपने हाथ दाल भात मन्दि-
र में बनाया. स्वामी, नाथ, और हम ने खाया.
रि वास स्वामीके कमरेमें. रात दूध मुकुन्दीलाल[illegible]

ता० ८-३-३२ मं० आज सुबह शौचादि करके अपने
हाथ बना खाया. आज मुकुन्दीलालने एक
धोती दी रात को दूध पीया.

९-३-३२ बु० आज सुबह 'कियाधार' गया साथ यहां
[illegible]

ni Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥

भो. एकसमय रातको कुछ नहीं.

चंबकसे 'शाहीनाल' पहुंचा. यहां नये शिवमन्दिरमें ठहरा यहां एक लाहौरका पण्डित बैठा था. इसको वेद पाठी भी कहते हैं. यह लाहौरमें सनातनधर्म स्कूलमें उर्दू पढाता है. स्वभाव तथा आचार उत्तम है. इसने आधसेर दूध पिलाया. यहां एक सन्यासी साधूसे जानपहचान हुई. यह भी यहां की रहने वाला है. स्वभाव इसकाभी अच्छा है. आज शिवरात्री, रात्रीभर जागरण किया. ।चढाया। शामको बादाम ठंडाई पीया. इस पण्डितको लाहौर में 'शिवहर' कहते हैं. वाटरवर्क्स के पास इसका घर है. इसका नाम सोहनलाल है.

५-३-३२ र. आज यहां पुनः शौचादि करके यहांके जो गोंकी आग्रहसे यहीं रहा. पं. सोहनलालका जनेरसो ई बनाई थी उसमें भो. शामको कुछ नहीं खा
या. आज [illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥१९॥
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।

आजभी एकसमय रातको कुछ नहीं.
बुखारदिनभर अबरहता है, अन्दर.
बाहरथोडाआता है.
जीर्णज्वरहोगयाहै.

१-३-३२ मं - आज स्वश्रीदूधदेगयाथा उसको पीया. दोनोसमयभो. तथा निवासयहीं.

२-३-३२ बु.- आज. स्वश्री दूधदेगयाथा. दोनोसमय भो. तथा निवास यहीं.

३-३-३२ बृ. - आजसुबः शौचादिकरके नारायणगिरिके कुटीपरगया. भो. यहीं किया. दालरोटी गंगापुत्रनेबनाईथी. ५ ४ बजे शामको मन्दिर आया. रातबुखार आया अतः खायानहीं स्वश्री दूधदे गयाथा.

४-३-३२ शु.- आजप्रदोषभोज. नियमअनुसार रातभोजन.
१) खर्च हुआ

५-३-३२ श.-
आजशिवरात्रि सुबः शौचादिकरके रेलसे स्टेशन १ मील गया. २) टिकट 'कनाला' यहांसे एक मील चलकर

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः १८
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।

(विजयादशमी)

आज दोपहर भो· यही रसोई मैने ही बनाई
आज रात बुखार बड़ा फिर आया
आज रहस्यत्रय कथा समाप्त.
आज सप्तशती कथा समाप्त. कुल ४ रु· ॥।≡)
पुस्तक पर आये थे. इसमें १ रु· और धोती १
अंगोछा चरखानी १ और एक कपड़ा ने दाम
१ रु· पण्डित बद्रीदत्त १ रु· गौरीपण्डित ।≡)
कन्हैया ब्राह्मण १ रु· पद्मनाभ कुई.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

आश्विन शुक्ल ८ सोम] १९ अक्टूबर [बं० कार्तिक १

(दुर्गापूजनम्)

आज भो· दोनो समय येही
११,१२,१३, अध्याय कथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।

आज दोनो समय भो. तथा निकासयही
आज स्नान नही किया
आज नवम तथा दशम अध्याय

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१०॥
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥

आज दोपहर भो. यहीं रातको आज
फिर बुखार आया. खाया कुछ नहीं
रात्रौ निवास यहीं.
आज सप्तम तथा अष्टम अध्याय कथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥
सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।

दोनो समय भोजन यहीं तथा निवास भी.
रसोई दोपहर की मैने बनाई थी.
आज पञ्चम तथा षष्ठाध्याय.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥४॥
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥५॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥६॥

आश्विन शुक्ल ४ गुरु] १५ अक्टूबर [आश्विन २८

दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
रातको कथा
रसोई दो पहर की मैने बनाई
आज तृतीयाध्याय और चतुर्थाध्याय

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥२॥
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥३॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।

दोनो समय भो. तथा निवासयहीं.
रात को कथा.
दोपहर रसोई मैने बनाई
आज द्वितीया ध्याय सप्तशती कथा

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ।१।

दोनो समय भो॰ तथा निवास यहीं.
कथारामको
आज दोपहर रसोई मैने बनाई
आज प्रथमाऽध्याय सप्तशतीकथा.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग-योगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

(नवरात्र्यारम्भ)

आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं आज जालंधर गया था साथ पं. बद्री दत्त भी थे. वहां बालक रवाये डाढी बनवाई. पैसे पं. जी ने दिये. आज शङ्कराचार्यकृत 'देवी मानस पूजास्तोत्र' पर व्याख्या लिखना प्रारम्भ किया. रात्री को दुर्गा पाठ साथ कथा बांचना शुरू किया.

आज कन्यार्थीजा कीलक कथा.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा।

(पितृविसर्जन)

आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं..

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२६॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥३०॥
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥३१॥

आश्विन कृष्ण १४ शनि] १० अक्टूबर [आश्विन २३

आज दोनो समय भो. तथा निवासयहीं.
आज दोपहर खानेके बाद फिर थोडी
बुखार की हरारत मालूम हुई थी.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ।२७।
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्२८
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।

आज प्रदोष मौनादिन भर रात को
नियमाऽनुसार पारण तथा निवास यहीं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥२५॥
यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥२६॥

आश्विन कृष्ण १२ गुरु] ८ अक्टूबर [आश्विन २१

आज दोनोसमय भो· तबीयत निकासे यहीं
आज बई आया ही नहीं·

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥२२॥
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।

आजको मौसम यभो : तथा निवास यही.
आज भी बड़े को थोडा तर्कसंग्रह पढाया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥१६॥
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥२०॥
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥

आज दोनों समय भो० तथा निशास्नान यहीं.
आज बाई पुरोहित (पं० कन्हैयालाल जोशी ज्योतिषाचार्य के जानकार) को तर्कसंग्रह पढ़ाना शुरू
किया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।

आज दोनों समय भो० तथा निवास यहीं.
आज सिर्फ हरारत सी हुई थी. सिरदर्द थी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥१५॥
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥

आश्विन कृष्ण ७ रवि] ४ अक्टूबर [आश्विन १७

आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.
नाताकती बहुत हो गयी है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।

आश्विन कृष्ण ६ शनि] ३ अक्टूबर [आश्विन १६

आज दोनोसमयभो. तथानिवासयहीं.
आजभीथोडाबुखारआयाथा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥९॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥११॥

आज कुमैयावै घपठिआर सुबेरे हीचलागया
दोनो समभ भो· यहीं निवास भीयहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।

आज सुबः शौचादि कर यहीं बठोरू खाये फिर
गौरी के घर भोजन को जाना था परं तु आज फिर
बुखार आया. फिर रात्री को भी कुछ नहीं
खाया कुमैया वैद्य आज यहीं रहा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥४॥
महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥६॥

आश्विन कृष्ण ४ बुध] ३० सितम्बर [आश्विन १३

आजसुबः उठकर शेरा ठाणा पं.बदरीदत्तके घर २॥मील चलकर पहुंचा चलतेसमय १ धोती एक अंगोछा ॥) जनेऊ पं.गोपाराम ने दिया. दोनासमय भो.तथा निवास पं.बदरीदत्तके घर.शामको यहां कुमैया वैद्य लीलाधर तिवाडीभीआया .यह भीरातभररहा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥२॥
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् ।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥३॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।

आज सुबः उठकर शौच स्नानादि करके यहीं (गोपालपण्डित के घर) दोनों समय भो. तथा निवास. तबियत आज खराब होगयी थी. रातको शुण्ठीका काढा पीया था.

यहीं.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGar

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥१॥

आज सुबः उठकर वर्षा में ही लोई ओढ कर २॥ मील चलकर 'तंगलोटी' पहुंचा. यहां गोपा पण्डित के घर गया. कुमैया वैद्य लीलाधर और विशनदास सूद आ गये. मैं बिलकुल भीग गया था. तंगलोटी में शौचादि स्नानादि किया. दोनो समय भो. तथा रात्री में निवास यहीं. वर्षा की झड़ी लगी रही. पं: कृपाराम पुरोहित कुई मिलने आये थे.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥ १६॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥२०॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

आश्विन कृष्ण १ रवि १९८८] २७ सितम्बर [आश्विन १०

आज सुबः ग्रहणघट्ट नेका स्नान तथा रोज
का स्नान एकलव्येणा किया.)।।। ब्राह्म
णों को दक्षिणा दिया फिर सन्ध्यादि करके
उस वैद्य के आग्रह से और उसके साथ के राज
पुत्र के सुपुत्र विशनदास के आग्रह से 'जिंद·
रांग्को' गये. यहां 'सहदेव' सूद के घर गये
दोनों समय यहां भोजन किया. इसका
हमारा पहिले से ही परिचय था. आज पं. पद्म
नाभ की मनीषा अपने घर ले जाने की नहीं
सी देखने में आई. वैद्य का नाम 'मुरलीधर'
है. वृष्टि के कारण आज यहीं रहना पड़ा.
रात्रि निवास यहीं. दोपहर रसोई [illegible]'
ने बनाई थी.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥१७॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।

(श्राद्धारम्भ) (चंद्रग्रहणम्)

आज सुबः उठकर चामुण्डा गये साथ
पं. पद्मनाभ तथा पं. बदरीदत्त थे. यहां
भो. किया. इन्हीं के पास. फिर पद्मनाभ अप
ने घर पठियार चला गया. पं. बदरीदत्त भी
अपने घर शोराठाणा चला गया. हम यहीं
चामुण्डा में रहे. पद्मनाभ तो रात को फिर यहां
आ गया था. रात को चन्द्रग्रहण हुआ पर
बादल के कारण देखने नहीं आया. अन्दाजे
से 'बाणगङ्गा' में स्नान किया. रात्री में यहां
एक कुमंदयाल तिवाडी ब्राह्मण आया था इस
[illegible] से परिचय हुआ. यह बैरागी करता है
अविवाहित है. ३५ वर्ष की इसकी उमर है
[illegible]ता बहुत है. पर अच्छा है. चामुण्डा के

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥१६॥

भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्र] २५ सितम्बर [आश्विन ८

(अनन्त चतुर्दशी)

आज दोपहर भो. बद. घर.
शामको पार्टियार गये साथ पं. बद्रीदत्त
पी भे. यहां पं. पद्मनाभके पास गया
साव सद के यहां रातको रोटी खाई.
तथा निवास पं. पद्मनाभके घर रात
भर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।

आज प्रदोष, मौन नियमानुसार
रात्रीपारण और निवास पं. बदरी
दत्त के घर.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥

भाद्रपद शुक्ल १२ बुध] २३ सितम्बर [आश्विन ६

(वामन जयन्ती)

आज पत्रोवेके पास पञ्जाबी खत्री पुराने
कश्मीरके दिवान खानदानवालेके यहां
स्वामी तारानन्दके साथ गया था वहीं रोटी
खाई. इस खत्रीने १रु. किरायेको जियेदिया
फिर बैजनाथ स्टेशनपर आकर वहासे
111) देकर नगरोटा का टिकट लिया और
१२ बजकर १५ मिनिट पर गाडी में सवार हो
२॥ बजे नगरोटा पहुंचा. आज सुबः तारास-
गवतीकी तथा केदारनाथ की पूजा मैंने नहीं
कीथी. नगरोटे में एक दूकानमें २ घंटे बै-
ठा था. यहां =)॥ बर्फी ≡)॥ दही लेकर खाया.
)॥ = दूध पीकर शामको पं. बद्रीदत्त अन-
स्थीके घर शेराठाणामें पहुंचा. रातको यहां
रोटी खाई तथा विश्राम किया

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥८॥
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।

आज भी दो पहर तारापुरमें. आज पुजारीको आशौच आया इसलिये ताराभगवतीकी और केदारनाथ शम्भूकी पूजा शामको आरती आदि हमने किया तथा रसोई भीहमने ही की ५ आद मियोकी. आज श्रीस्वामीजीसे बात चीत बहुत हुई रातमें क्षेत्रमें फुलके खाये रात भर निवास यहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥४॥
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥६॥

आज भो. महेशानन्द के पास -) बजे
॥ बजे तक [illegible] ई. रात को रोटी महेशानन्द
के आ पाया. आज स्वामी तारानन्द यहां आये
थे शिमले थे मिले थे. स्वामी जी से रात को
११ बजे तक बातचीत हुई.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।

भाद्रपद शुक्ल ९ रवि] २० सितम्बर [आश्विन ३

आज दोपहर भो. पुजारीमहेशानन्दकेपास
पं. माधोप्रसादके घरसे कोईबुलानेनहीआया
इसलिये. मैंगयानहीं. दूध -)।)। मठा
)।। जलेबी खाई. दूध और =)
ब्रह्मचारीने दियेथे. रात्रिमें रोटीयहीं
खाई महेशानन्दने घरसे लाईथी.
रात्रीमें निवासयहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

भाद्रपद शुक्ल ८ शनि] १६ सितम्बर [आश्विन २

दोपहर शान्तिकृष्ण अन्नक्षेत्रमें ओ. रात को
पं. दुर्गाप्रसाद के घर. रात भर निवास यहीं.
आज सुबः -)। दूध)। मीठा शाम को भी
-)। दूध)। मीठा सुबः)।। जलेबी भी
पैसे और दो दवी ब्रह्मचारी को दिये.
पं. माधवप्रसाद (वजीर) कल को भोजन
का निमन्त्रण दे गया. इसके बाप दादे मण्डी में
तथा, और भी किसी स्टेट में वजीर थे.
यह तो कहीं कुछ नहीं है. बाबा मुंगा जी. गुरु
दासपुर के हाई स्कूल के पण्डित से जान पहचा-
न हुई. यह पंजाब का शास्त्री है. त. पाले
पुर जि. को गढ़ दिखा गुरु कार हने जाता है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

भाद्रपद शुक्ल ७ शुक्र] १८ सितम्बर [बं० आश्विन १

आज दोनो समय भो. यहीं तथा रात्रि निवास भी. आज एक ब्रह्मचारी ने घने स्वामी जी और दूध को दिया। भोजन ये,

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः॥५२॥
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा॥५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप॥५४॥

भाद्रपद शुक्ल ६ गुरु] १७ सितम्बर [भाद्रपद ३१

आज दो पहर पं. दुर्गाप्रसाद के घर भो.
रात को महेशानन्द ने रोटी खाई थी. सो खाई.
रात भर निवास यहीं. आज सङ्क्रान्ति हुई.
कन्या सङ्क्रान्ति.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।

भाद्रपद शुक्ल ९ बुध] १६ सितम्बर [भाद्रपद ३०

(ऋषिपूजनम्)

भो· यही दोनो समय महेशानन्द के पास
और निवास भी यही
आज बैजनाथ दर्शन) । पढाया
)॥ ÷ दूध ÷ मीठा.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।१।
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ।२।
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।

आज सुबे उठकर शिवमन्दिर के नीचे नालीसे झरने पर शौच स्नानादि क्रिया. दोनो वख्त यही क्रिया. रात्रीमें निवास यहीं.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥३॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥४॥
उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।

ज्येष्ठ कृष्ण ८ रवि] १० मई [वैशाख २६

[illegible]
[illegible]
निवास भी यहीं [illegible]

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥
पुण्यो गन्धःपृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।

आषाढ़ कृष्ण ६ शनि] ६ जून [ज्येष्ठ २२

दोनों वजता भो. तथा निवास प्रं. श्री माधवके
घर.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥१०॥
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।

आषाढ़ कृष्ण ७ रवि] ७ जून [ज्येष्ठ २३

[illegible]
घर,

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ।१७।
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

आषाढ़ कृष्ण ११ गुरु] ११ जून [ज्येष्ठ २७

आज [illegible] दोपहर भोजन पाना था ... को
निवास पं· भीमादत्त जोशीके घर.
लेकिन पेट ठीक न होने के कारण हमने भो· जन छोड़ दिया.
आज पं· जयवल्लभजी जोशी के यहां गया था.
यहां दूध पीया. ये कूर्मांचली ब्राह्मण हैं

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।

आषाढ़ कृष्ण १० बुध] १० जून [ज्येष्ठ २६

आज शोभी सं. मय भी तथा तिवारी पं. भीमनाथ के घर.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥१३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥१४॥
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।

आषाढ़ कृष्ण ६ मंगल]   ६ जून   [ज्येष्ठ २५

आज डो. [illegible] भोज. तथा निवास पं. भीमदत्त के घर. आज श्रीकण्ठ की चिट्ठी मिली.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि॥१२॥
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।

आषाढ़ कृष्ण ८ सोम] ८ जून [ज्येष्ठ २४

आज दोनों समय भो- तथा निवास भी भाभाजी के घर.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं
भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥५॥ न चैतद्विद्मः

माघ शुक्ल ११ शुक्र] २० जनवरी [माघ १६

आज सुबः उठकर शौचस्नानादि करके हलकारे
के साथ चलकर १ घण्टे 'डाउ' पहुंचा यहां राधाकृष्ण के
मन्दिर में ठहरा था. गढ़वाल वाले पं. पौड़ि [illegible]
ज्योतिषी ने दूध पिलाया. फिर यहां के पुजारी ने फला-
हार कराया. फिर शाम को 'चौक' की दुकान पर गढ़वाली
पण्डित के साथ गया था. यह डाउ से १ मील है.
दूध पीया. रात्रि भर डाउ में मन्दिर में निवास.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥३॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।

माघ शुक्ल १० गुरु] २१ जनवरी [माघ १५

आज भी 'धर्मसाज़' से ऊपर १ भी एक ब्राह्मण के घ
म इन्द्रपं. लक्ष्मीधर भोजन को लाया था. चोटे पर गाय
था. रात को महिला ने एक रुपया दिया था.
वर्तमान में [illegible]
[illegible] व यात्री [illegible]
[illegible] इसका स्थान दे दिया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥

आज भो. यहां.

आज सुबः उठकर चला सो ३ मील चलकर
'धर्मसाज' पहुंचा. यह एक साधुओं का स्थान है.
महात्मा 'निकोदरदास' एक बडा तपस्वी ब्राह्मण
वैरागी था. उसके बाद 'निर्भयराम' हुआ. इनको और
॰ जोबने माफी करदी. स्थान में पक्के मकान हैं.
धर्मनिर्णय यहां इनके कथनानुसार होता है.
इस समय गद्दीपर पं. लक्ष्मीधर है. पढ़ा लिखा है
बुद्धिमान है 'शास्त्री (आचार्य की) पास है अंग्रेजी
हेडमास्टरी की तय्यारी कर रहा है. बडा सज्जन है.
बस्ती १००, १५० घर की आसपास है. २०-२५
आदमी यहां रोज भोजन को आ जाते हैं. २०-२५
हजार की सालाना आमदनी है. परंतु पर
शिष्य भी बहुत हैं यह जगह जिले होशियार
पुर में है. यहां से २ फर्लांग गढ़शंकर, जिले की ताडा है

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्।

माघ शुक्ल ८ मंगल] २७ जनवरी [माघ १३

आज भो. यहां भोजन किया. [illegible]
[illegible] प्रागपुर [illegible] चिन्तपूर्णी में पहुंचा प्रागपुर से चिन्तपूर्णी ७ मील है
पर मैं मोटर रोड से गया १२ मील चलना पड़ा.
यहां एक कुंड पर स्नानादि करके भगवती का दर्शन
किया. [illegible] ॥ [illegible] दिखाई [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] मालूम होता है. [illegible]

ता. २६-१-३१
[illegible] ३॥ बजे दोपहर चल के 'प्रागपुर' २॥ मील
चल कर पहुंचा. यहां एक ठाकुर द्वार में ठहरा था.
यहां कारभारी [illegible] पं. [illegible]
[illegible] और [illegible]. इन के आग्रह
से [illegible] पास [illegible] भोजन पाया. यहां का
पुजारी पं. [illegible] बहुत [illegible] है.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

आज भी यहीं
आज यहां काउ सबसे माघ हुआ. 'भैरवद-
त्त और 'हनुमन्तजाऊ' यहीं ठहरगये.
ये रवदत्त भोजकी ज्याजाओं का पण्डा है.
यह 'प्राजन' पास है. परन्तु सियाकत अच्छी है
बुद्धिमान है. बहुत ही सज्जन है. आजसुब:
'रथसप्तमी' के लिये 'कालेश्वर' में स्नानको लिये.
गये थे. 'विपाशा' में स्नान किया.) । ब्राह्मण) ।
कालेश्वर) । कुमारी और ब्राह्मण. 'हनुमन्तजाऊ'
२,२॥ [illegible] कालेमें इसका [illegible]
था. लेकिन इस समय कुछ भी इसके पास नहीं है.
सारापन [illegible] आगया. मिजाज भी कुछ [illegible]
सा गया है. गाना बजाना अच्छा जानता है. प्यार
इसका बड़ा मधुर है.

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

माघ शुक्ल ६ रवि] २५ जनवरी [माघ ११

प्रो. एच. वरुण राव कौशिक ए.प.
आज भी यह उत्तर था. आज भी थोड़ा
व्याख्या नहीं पाया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः॥४३॥
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

आज भी यहीं रात को। सिर्फ दूध.
यहां एक गेरुए कपड़े का वस्त्रधारी निधि
[illegible] का मिला यह स्वार्थिया मालूम हो
ता है पर आज शाम को यहां से चला गया.
आज भी उदास था इससे मैंने यहां के सब
[illegible] दिया था. आज [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्तिकुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

माघ शुक्ल ५ शुक्र] २३ जनवरी [माघ ६

(वसन्तपञ्चमी)

आज सुबः कपिस्थल से शौचस्नानादि कर
[illegible] भगवती का दर्शन किया। बतासा) २.
चढाए. फिर भैरवदत्त के यहां रोटी खाकर
चले सो ७ मील चलकर 'कालेश्वर'
पहुंचे यह बड़ा ही सुन्दर स्थान है 'विपाशा'
नदी यहां बहती है. [illegible] घाट बना हुआ है
ऊपर कई मन्दिर हैं. धर्मशाला है. कालेश्व
र शम्भु का दर्शन किया। [illegible]
है जरूर यहां से [illegible]
पहुंचे यहां 'संस्कृत पाठशाला' [illegible]
[illegible] आया था. आज [illegible] न था. पाठशाला में
[illegible] भोजन न [illegible] इसके [illegible]
[illegible] हैं. इन्हीं ने २-३ [illegible]
[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

आज सुबह: ओंकारनाथ के नागरकोटा स्टेशन से रेल में
बैठकर ज्वालामुखी रोड स्टेशन पर उतरे साथ पं. बद्रीद-
त्त थे. किराया भी था. ये दोनों 'मंगलवाले' गये. मेरा
यहां तक टिकट का किराया था ।।=) बद्रीदत्त ने दिया.
और १ मि. मोटर किराये के लिये दिया. ।।।-)
किराया मोटर का ... से ... ज्वालामुखी
तक का ... ।-) कहीं गिरगया. पुजारी भैरवदत्त
शास्त्री के नाम चिट्ठी पं. बद्रीदत्त ने दी थी. ज्वा-
लाजी के दर्शन किये. फिर भैरवदत्त के घर गये
भैरवदत्त को चिट्ठी दी थी. यह बहुत ही सभ्य और
व्यवहार कुशल हैं. संस्कृत भी पढ़े हैं, बड़े मान-
न और चतुर भी हैं. ... की ... तीस
रुपये ... शाम को सिद्धनागार्जुन 'अ-
म्बिकेश्वर' 'गोरखधाम' देखने गया साथ
साथ 'भैरवदत्त' और हनुमानलाल ये दो-
नों थे. भो. दोनों वक्त भैरवदत्त के घर
हुआ निवास भी यहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ।३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

[illegible]

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ३५
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥

माघ शुक्ल २ मंगल] २० जनवरी [माघ ६

दोनोवरस्तायही भो·

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

माघ शुक्ल १ सोम]   १६ जनवरी   [माघ ५

आज भौम्य में कुम्भ में [illegible] के [illegible]
भोजन भाव [illegible] धूणी के पर. आज भोजन.
रामको ठाणा' पहुंचे. रात को पहुं भोजन.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ३२

आज श्री आदित्य के 'सूर्यकुण्ड' में स्नानादि कर के
भगवती का दर्शन किया 'पाठ' भी किया
[illegible] भोजन. '[illegible]' को
'[illegible]' [illegible] '[illegible]' [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible].
[illegible] .

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२६॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

माघ कृष्ण १४ शनि] १७ जनवरी [माघ ३

आज भोजन कर के चले सो ७॥ नील
कण्ठ भवन पहुंचे. साथ शान्तानन्द नैपाल
था. रास्ते में पं. पद्मनाभ कुई पुरोहित मिला
फिर इस को भवन ले गये. रात्री को भोजन
और रात्रि वास्ते इस के डेरे.
भगवती वज्रेश्वरी का दर्शन किया. नीलकण्ठ का
दर्शन किया.
पं. पद्मनाभ के डेरे में एक राजपूत रहता है जो कि
तहसील कांगड़ा में (खास वाकिनवीस) मुलाजिम है.
यह बहुत अच्छा है और श्रद्धावान भी है. यह ब्राह्मणों
के पास रहने वाला है 'उधम सिंह' इस का नाम है.
इसने खाना खिला हम से बहुत अच्छा व्यवहार किया.
सुधाजल देवता का निवास पुराने कांगड़े का रहने वाला
'प्यारेलाल' मिला था.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

माघ कृष्ण १३ शुक्र] १६ जनवरी [माघ २

[illegible]
~~[illegible] मो०गा.~~
~~[illegible].~~
~~[illegible].~~
आज प्रदोष नियमाऽनुसार रात्रौ पारण.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।

माघ कृष्ण १२ गुरु] १५ जनवरी [वं०माक १

~~[illegible]~~
आज पं. राधाकृष्ण पाण्डित चौधरी [illegible]
के यहां भोजन को गया था. [illegible]
[illegible] यहां.

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२४॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।

माघ कृष्ण ११ बुध] १४ जनवरी [पौष २६

दोनों वरुत भो· यहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

माघ कृष्ण १०, मंगल] १३ जनवरी [पौष २८

(मकर संक्रान्ति)

दोनों नाश्ते भी. यहां
आज मकर सङ्क्रान्ति अगस्त्य कुण्ड में स्नान.
आज नगरोटा में भी गये थे.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।

माघ कृष्ण ६ सोम] १२ जनवरी [पौष २७

दोनोपरवत भो. यहीं.

आजओगेरभर कुई कोशि. १०) .२ रापठा या.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

दोनो वक्त भो. यहां.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् १८

माघ कृष्ण ७ शनि] १० जनवरी [पौष २५

दो नौकर कल भी यहां

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

माघ कृष्ण ५ शुक्र] ६ जनवरी [पौष २४

दोनो वक्त भो. यहीं
आज उर्दू सीखना शुरू किया.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥१४॥

दोनोंवरक्त भो. यहां

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१२॥

दीनोवक्त भो· यहीं.

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

माघ कृष्ण २ मंगल] ६ जनवरी [पौष २१

दोनों वख्त भो. यहीं.
यहां पं. जोगेश्वर पुरोहित (कुई) 'अणुवाडी' का रहनेवाला यहां आया हुआ था इसको एक श्लोक पढाया. माघकाव्यका.
पं. बद्रीदत्तको मुक्तावली पढाना शुरू किया.

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥

भो. दोनो वरत्न यहीं. आज बालवनवाए
लाटेउपाख्यबुधराजसुतानुद्रूप
जो पाल भट्ट विबुधः कमलाऽभिधानात्
श्रीरामकृष्णविबुधं जनयाम्बभूव ॥
पौराणिकप्रवरपाण्डितसार्वभौमं
नानानिबन्धरचनानिपुणः कवीनां
चूडामणिर्विकराऽन्वयपद्मसूर्यः ।
श्रीबालकृष्ण इति बुध प्रथितः समासीत् ॥
वाग्देवतासमविबुधमण्डलमण्डनं यः ।
नाम्ना सदाशिवबुधस्य सुतानुरूप
लक्ष्मीति नाम कान्तां महतीं कुलीनाम्
कन्यात्रयं सुतचतुष्टयकं सतस्यां
वंशाऽनुरूपचरितं जनयाम्बभूव ॥

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

सुबह शौचादि निपटकर यहांसे चले सो रास्तेमे
'मधुयाल' देखतेहुए 'जलविम्न' पहुंचे यहस्था-
न बडाही रमणीय है. यहां एक छोटाकुण्ड है स्रो-
त तो यहांसे कई निकलते है १ पक्का शिवमन्दि-
र है २-३ कुटियां भीहैं. यहस्थान रेलवे स्टेश-
नसे सटा हुआ है. 'नगरोटा' यहांसे आधमील है.
यहांसे नगरोटा पहुंचे यहां एक पक्के कुण्डमे स्ना-
नादि करके पं. कृपाराम ज्योतिषी के यहां भोजन
किया. इनके भाई पं. चौधरीसे भी बातचीत थोडी
हुई. इन्होने यहां अपना मकान … बडा आ-
डम्बर पचार रखा हुआ है. पं. कृपाराम ज्योतिषी
बडाही सात्विक पुरुष है. यहां से फिर 'ठाणा'
पहुंचे शामको भो. यहां साथ पं. बद्रीदत्त भी थे.

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

आज दोपहर यहां भोजन करके चले सो धमीक
भरकच धामको 'समलोटी' गांव में पहुंचे.
यहां पं. विठ्ठल पण्डित के घर रात्री भर थे.
रात्रीको यहां भोजन किया. साथ पं. बद्रीदत्त जी
30-४० घरोंका यह गांव है यहां एक नाला है.
२ बावडीयां हैं एक मन्दिर है धाटी २२-३
धर्मशालाएं भी हैं. २२-२३ घर ब्राह्मणों के हैं
बाकी और जाती के है. कसबा 'नगरोटा' से
यह गांव ... दक्षिण पश्चिम को बीच ३ मील
है. पढेलिखे तो ... हैं.

अन्यस्तु शेषमाणितो परमः प्रवीणो-
प्यल्पायुरेव कुजआस्वय ... नि हाय॥
निभुन्न एव ... गजोनि पापगो ... नीना ...

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥

[illegible]
आजप्रदोषनियमोऽनुसमरात्रीकोपारण.
का भाणसोमन्थीकरीका "का(ऊ)" सम्पूर्णकी.
तत्सूनुरत्नयुगुलं श्रुतिशास्त्रनिष्ठं
वंशाऽनुरूपचरितं विदुषां वरिष्ठम्॥
ज्येष्ठं स्वतो वरकलं तमनन्तरामं
[illegible] तकान्तरेच हृदये कलयामि बालम्॥
सद्वंशजाततनयां परिणीय हृष्टां
सीतां यथा रघुपतिः स रमाऽभिधानाम्।
[illegible]सूनुयुगुलं स्वसनन्तरामौ:
पत्यैव
स्वःपुरेव सुरभोगमलञ्चकार॥
पञ्चाशदुत्तरशतद्वयरूप्यकाणां
वर्णाशनं प्रचलितो गृहलोग्रहीतुम्॥
तातेन नाकमयमध्वानि मिहमार्गे - १६
वर्गेन [illegible] घातित इति प्राधितं कृतम्॥
आसीद्वयं तदमित प्रांतिभंगुरणयि यात्नदीक्ष-
प्रभिर्वरभिन्नचमानम्॥ तथाऽपिवेदवचन
[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

पौष शुक्ल १ २ गुरु सं० १९८७] १ जनवरी सन् १९३१ [वं० पौष १६

१

कातिरिस्थसान्वयबुधवंशमुरन्धराणां
पद्मालिणां वरकलोलुसडस्थसानाम् ।
गोपालभट्टविबुधो जेमपुङ्गवानां
पादौ स्मरामि निजवंशविभूषणानाम्

भो॰ यहिं दानोवत्स (वदरीदत्त शर्मा)
तत्सूनुयुङ्गवमुदारविचारभावं
वाणीनिवासविलसद्रसना भिरामम् ।
पौराणिकप्रमुखवन्द्यपदारविन्दं
रामाऽभिधं वरकलं हृदये चिन्तयेऽहम् ॥ २ ॥
विख्यातहोलकरराज्यमहामहिष्या
हेमाङ्गपत्रवरधाम्नरमुख्यकेन ॥
यः सत्कुलोऽभवदपारपुराणविचा-
णोभस्मृतिर्जगतिभूपितस्यार्भो.मः ॥ ३ ॥

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

इस विशेषताके सिवा शेष बातें १।) वाली गीताके अनुसार ही हैं। मू०॥≡) सजिल्द ॥।=)

बंगला गीता

बंगलामें भी गीता छप गयी है पदच्छेद अन्वय अन्वयार्थ, प्रत्येक श्लोकका भाव दिया गया है, पृष्ठ ५४० चित्र ४ मूल्य १) सजिल्द १।)

गीता-साधारणभाषाटीकासहित सचित्र ३५२ पृष्ठ =)॥ सजिल्द ... ≡)॥

गीता-केवल भाषा, मोटा टाइप, सचित्र मूल्य ।) सजिल्द ... ।=)

गीता-मूल, मोटे अक्षरवाली, सचित्र मूल्य ।-) सजिल्द ... ।≡)

गीता-मूल, तावीजी साइज सजिल्द =)

गीता-मूल, विष्णुसहस्रनामसहित सचित्र =)

गीता-केवल दूसरा अध्याय अर्थ सहित)।

गीता-का सूक्ष्म विषय पाकेट साइज -)।

तत्त्व-चिन्तामणि

कर्म, ज्ञान, भक्ति और सदाचार-सम्बन्धी आध्यात्मिक विषयोंका बड़ा सुन्दर निरूपण किया गया है, इस ग्रन्थके पढ़ने,मनन करने और

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

गीताप्रेस गोरखपुरकी पुस्तकें

श्रीमद्भगवद्गीता

मूल, पदच्छेद, अन्वय, साधारणभाषाटीका और टिप्पणियोंसहित

१–इसकी टीका ऐसी सरल है कि साधारण मनुष्य भी थोड़ी मेहनतमें समझ सकते हैं।
२–श्लोकोंका ठीक अनुवाद रखा गया है।
३–हर संस्कृत शब्दके सामने उसका अर्थ दिया गया है, हाथ कर्घेके बुने पूरे कपड़ेकी अच्छी मजबूत जिल्द लगायी गयी है। ५७० पृष्ठ हैं। किताबका आकार डिमाई ८ पेजी है। चार तिरंगे चित्र हैं। दाम सिर्फ १।)

इसी प्रकारकी गीता साइज और कुछ टाइप छोटा करके सोलह पेजीमें छापी गयी है। इसमें गीताके सूक्ष्म विषय हर श्लोकके साथ किनारेपर रखे गये हैं। वह एक प्रकारसे हर श्लोकका सारांश है। प्रधान विषय हर अध्यायके आरम्भमें रखे गये हैं। पृष्ठ ४६८,

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

गीता-जयन्ती-उत्सव

गीता-सरीखे महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थकी जयन्ती—प्रतिवर्ष 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्'—मि०मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को प्राणीमात्रको घर घरमें अवश्य ही मनानी चाहिये। जिसमें गीता-ग्रन्थ, इसके वक्ता और रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण और व्यासदेवकी पूजा तथा इसका पारायण, अर्थकी चर्चा और तत्त्व समझने, प्रचार करनेके लिये स्थान स्थानमें सभाएँ, व्याख्यान आदि हों, गीता-ग्रन्थोंका प्रदर्शन हो, गीतांक निकाले जायं, गीतापर पुरस्कार निबन्ध लिखाये जायँ।

श्रीगीता-परीक्षा-समिति, बरहज

श्रीगीता ही एक ऐसी पुस्तक है, जिसको प्रायः सभी आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। इसलिये समितिने गीताद्वारा धार्मिक शिक्षाके अभावको दूर करनेका निश्चय किया है, समितिने परीक्षाके अभ्यासक्रमका और पुरस्कारादिका भी प्रबन्ध किया है। परीक्षा लेनेके लिये स्थान स्थानपर केन्द्र भी स्थापित किये जाते हैं। विशेष जानकारीके लिये, 'श्रीगीता-परीक्षा-समिति' बरहज, जिला गोरखपुरसे लिखापढ़ी करें।—संयोजक

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

एक दिनके वेतनका नकशा।

मासिकवेतन रुपये	२८ दिनका महीना तो १ दिनका			२९ दिनका महीना तो १ दिनका			३० दिनका महीना तो १ दिनका			३१ दिनका महीना तो १ दिनका		
	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.	रु०	आ.	पा.
१	०	०	७	०	०	७	०	०	६	०	०	६
२	०	१	२	०	१	२	०	१	१	०	१	०
३	०	१	९	०	१	८	०	१	७	०	१	६
४	०	२	३	०	२	२	०	२	२	०	२	१
५	०	२	१०	०	२	९	०	२	८	०	२	७
६	०	३	५	०	३	४	०	३	३	०	३	१
७	०	४	०	०	३	१०	०	३	९	०	३	८
८	०	४	७	०	४	५	०	४	३	०	४	२
९	०	५	२	०	५	०	०	४	९	०	४	८
१०	०	५	९	०	५	६	०	५	४	०	५	२
२०	०	११	५	०	११	०	०	१०	८	०	१०	४
३०	१	१	२	१	०	६	१	०	०	०	१५	६
४०	१	६	१०	१	६	१	१	५	४	१	४	८
५०	१	१२	७	१	११	७	१	१०	८	१	९	१०
६०	२	२	३	२	१	०	२	०	०	१	१५	०
७५	२	१०	११	२	९	४	२	८	०	२	६	९
१००	३	९	२	३	७	२	३	५	४	३	३	७
१५०	५	५	९	५	२	९	५	०	०	४	१३	७
२००	७	२	३	६	१४	४	६	१०	८	६	७	३
५००	१७	१३	९	१७	३	१०	१६	१०	८	१६	२	१
१०००	३५	११	५	३४	७	८	३३	५	४	३२	४	२

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

१२ वर्षका १ युग
१०० वर्षकी १ शताब्दी

डाक्टरी वजन

२० ग्रेनका १ स्कुपल
३स्क्रुपलका १ ड्राम
८ ड्राम या २॥ भरीका १ औंस
१२ औंसका १ पौण्ड
१८० ग्रेनका वजन १ तोलेके समान होता है।

डाक्टरी माप

६० बूंदका १ ड्राम
८ ड्रामका १ औंस
१६ औंसका १ पाइण्ट

वैद्यक वजन

४ धानका १ रत्ती
८ रत्तीका १ माशा
१२ माशेका १ तोला

कागजका माप

फुल्स्कैप–१७ × १३॥ इञ्ची
डबल फुल्स्कैप–१७ × २७ „
क्राउन–१५ × २० „
डबल क्राउन–२० × ३० „
डिमाई–१८ × २२ „
डबल डिमाई–२२ × ३६ „
मिडियम–१८ × २६ „
रायल–२० × २६ „
डबल रायल–२६ × ४० „
सुपर रायल–२२ × २६ „
डबल सुपर रायल–२६ × ४४ „

द्रव द्रव्योंका अंग्रेजी वजन

४ पिंटका १ कार्ट
२ क्वार्टका १ गैलन

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

अंग्रेजी और देशी वजन
प्रायः२॥ तोलेका १ औंस
३६॥ तोलेका १ पौंड
।ऽ३॥= (तेरह सेर दस छटाकका) १ कार्टर
१।ऽ४॥ (एक मन साढ़े चौदहसेरका) १ हंडर
८२ पौण्डका १ मन

रास्तेका अंग्रेजी माप
१२ इञ्चका १ फिट
३ फिटका १ गज
१७६० गजका १ माइल

रास्तेका देशी माप
३ अंगुलकी १ मुष्टि
६ मुष्टिका १ हाथ
४ हाथका १ धनु
२००० धनुका १ कोस

जमीनका माप
५ हाथ लम्बा × ४ हाथ चौड़ा—४५ स्कायरफिटका १ छटाक
१४ छटाक या ७२० स्कायरफिटका १ कट्ठा
२० कट्ठा या १४४०० स्कायरफिटका १ बीघा
३ $\frac{1}{4}$ बीघाका—१ एकड़

समय
६० अनुपलका १ विपल
६० विपलका १ पल
(६० सेकण्डका १ मिनट
६० पल या २४ मिनट) की १ घड़ी
२॥ घड़ीकी १ घण्टा
७॥ घड़ी या तीन घण्टेका १ पहर
८ पहरका १ दिनरात
७ दिनका एक सप्ताह
२ सप्ताहका १ पक्ष
२ पक्षका १ महीना
१२ महीनेका १ वर्ष

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

माप तौलकी सूची

कपड़ेका माप

८ जौ या पौन इञ्चकी १ अंगुल

३ अंगुल या २। इञ्चकी १ गिरह

८ गिरह या १८ इञ्चका १ हाथ

२ हाथ या ३६ इञ्चकी १ गज

१२ इञ्चकी १ फिट

१॥ फिट या १८ इञ्चका १ हाथ

३ फिट या ३६ इञ्चका १ गज

वजन

१ रुपये भरका १ तोला

५ तोलेकी १ छटाक

२ छटाक या १० तोले का आध पाव

२० तोलेका १ पाव

२ पावका आधसेर

४ पाव या दो आध-सेरका १ सेर

५ सेरकी एक पसेरी

८ पसेरीका १ मन

अंग्रेजी सिक्का

४ फार्दिंगकी १ पेनी

१२ पेनीका १ शिलिंग

२० शिलिंगका १ पाउण्ड = रु० १५)

अंग्रेजी वजन

८ ड्रामका १ औंस

१६ औंसका १ पौण्ड

२८ पौंडका १ कार्टर

४ कार्टरका १ हंडरवेट

२० हंडरवेट (हंडर)का १ टन = २७। मन

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

सूईंकी नोकमें पिरोकर रोगीके नाकमें उसका धूआं दे।

सिरदुखना-पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूंघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा सा गरम करके लेप करे, अफीम बहुत थोड़ा डाले।

वात-आधी छटाक धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलका मालिस करे।

प्रदर-मुलेठी २ तोला, चीनी २ तोला, चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके काथसे भी प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव-रज बहुत पड़ता हो तो नागकेशरकी फांकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठण्डे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र-पुराने गुड़के साथ काले तिल भूंजकर लड्डू बना ले, रोज वो लड्डू खाय।

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

खांसी–तेजपत्ता, काली मिरच, मुलेठी तीन तीन तोले आधसेर पानीमें आगपर चढ़ाकर आध पाव रहनेपर छानकर शामके वक्त पी ले। मिश्री भी मिला सकते हैं। अदरखके रसके साथ शहद मिलाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

श्वास–मोरपंखकी भस्म एक आना, शहद एक आना मिलाकर चाटे।

किसी जगह कट जानेपर–बरफ या पानीकी पट्टी रक्खे या गेंदेके फूल पीसकर बांधनेसे खून बन्द हो सकता है।

खुजली–दो रत्ती शुद्ध गन्धक रोज सेवन करे। चावलमोगरेका तेल लगाये। नीमपत्तोंके जलसे धोये।

दाद–माजूफलका चूर्ण आठ तोला, इमलीकी छाल-की भस्म १ तोला, नारियलके तेलमें मिलाकर लगावे।

फोड़ा–चिकनी मिट्टी पानीमें सानकर उसे फोड़े-पर बांध ले, या अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे।

मेह–कच्ची हलदीका रस आधी छटाक रोज पीवे।

हिचकी और मूर्छा–पांच सात काली मिरच

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

मन्दाग्नि–सैन्धव नमकके साथ, हींग भूंजकर प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, मात्रा दोनों एक एक आना भर। भोजनके कुछ पहिले नमकके साथ थोड़ीसी अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त–सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर, मात्रा १ तोला अथवा इसबगोलके साथ मिश्री मिलाकर फाँक ले। मात्रा एक एक तोला। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि–विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले, या नीमके पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा–दो आना भर कपूर, दहीमें घोलकर कुछ दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन हो तो घबराये नहीं।

बवासीर–खून पड़ता हो तो, दूबका रस १ छटांक चीनी मिलाकर या नागकेशर एक तोला चीनी मिला कर पीसकर ले। दर्दमें भांगकी धूंई दे। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोले गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके जलसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी–थोड़ासा कपूर खाना और सूंघना चाहिये।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

घरेलू नुसखे

सर्दीका बुखार-तुलसीके पत्ते १० काली मिरच १० खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला आध सेर पानीमें चढ़ाकर, आध पाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

बुखारमें जलन-पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अन्दाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर कांसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊंचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दस मिनिटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर-(काली) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ बुखार चढ़े रहने और उतरने पर भी। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बांधनी चाहिये। तुलसीके २० पत्ते २० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

उदरामय-सौंफ तवेपर सेककर १ भर और कच्ची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना-नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

२–प्रेसके लिये ४८ शब्दके साधारण तारका ॥), जल्दी जानेवालेका १) लगता है, ४८ से अधिक शब्दोंका प्रति ६ शब्दका दर -) और =) है।

३–डाक और तारकी शिकायतें, पोष्टमास्टर जनरल को करनी चाहिये। शिकायती चिट्ठी बैरङ्ग जा सकती है।

अदालत-दावाका रसूम ५) रुपये तक।=), १००) तक प्रति ५) का।=) की दरसे, १०००) तक प्रति १०) का ॥।), ५०००) तक प्रति १००) का ५), १००००) तक प्रति २५०) का १०), २००००) तक प्रति ५००) का १५), ३००००) तक प्रति हजारका २०) की दरसे लगता है।

इनकम टैक्सकी दर

सालाना २०००) से कम आमदनीपर टैक्स नहीं लगता। सालाना २०००) से ४९९९) तक प्रति रुपया पांच पाई, ५०००) से ९९९९) तक प्रति रुपया छः पाई यानी दो पैसे, १००००) से १४९९९) तक प्रति रुपया नौ पाई यानी तीन पैसे, १५०००) से १९९९९) तक प्रति रुपया दस पाई २००००) से २९९९९) तक तेरह पाई। ३००००) से ३९९९९) तक प्रति रुपया सोलह पाई। ४००००) से ऊपर १९ पाई ५००००) से ऊपर सुपर टैक्स अलग लगता है।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड डाकघरकी सर्टिफिकेट लेकर भेजे जा सकते हैं। एक पैसेमें पारसल ६ और चिट्ठी, कार्ड, पैकट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११-वी०पी०-रजिष्ट्री पारसल, रजिष्ट्री चिट्ठी वी० पी०से जा सकती है। जिनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोष्टआफिस मनीआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। इसकी दर १०) तक =), १०)से २५) तक ।) इसके बाद हर १०) ज्यादा तक =) और फिर हर २५)तक ।); वी०पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। वी० पी० खर्च भेजनेवालेका नहीं लगता।

वी० पी० की बीमा भी बिकती है, बीमा वी० पी०की कीमतसे ज्यादाकी भी बिक सकती है।

तार-१२ शब्दके साधारण तारका ॥।), जल्दी जानेवालेका १॥) लगता है, १२से अधिक शब्दोंका दर-) और=) लगता है। जवाबी तारके लिये पहलेका ॥।) और दूसरेका १॥) और अधिक लगता है। जवाबी फारम काममें न लाया जाय, तो दो महीने तक (तार डाइरेक्टर जनरल, कलकत्तासे) दाम वापिस मंगा सकते हैं। भारत और वर्मांके तारका एक ही नियम है।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

३–पुस्तक या पत्रादि, पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुला पैक करके भेजनेसे तथा नमूनेका पैकेट बन्द करके भेजनेसे भी प्रति ५ तोला)॥ लगता है। नमूनेका पैकेट २०० तोले तक जा सकता है।

४–रजिष्ट्री किये हुए सामयिक पत्रोंका ८तोलेतक)।, २० तोले तक)॥, इसके बाद प्रति २० तोले या उससे कमपर भी)॥ लगता है।

५–बैरंग होनेसे दूना महसूल लगता है।

६–बीमा करानेके प्रति १००) का या उससे कमतीके भी =) अलग लगते हैं। बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होता। दो (चपड़ीकी) मोहरोंके बीचमें २ इञ्चसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये।

७–रजिष्ट्री करानेके =) अलग लगते हैं और जवाबी रजिष्ट्रीके ≡) लगते हैं।

८–पार्सलके २०तोले तक =), ४०तोले तक ≡), इसके बाद ४४०तोले तक प्रति ४० तोले ≡), इसके बाद ८०० तोले तक प्रति ४० तोले।) लगते हैं।

९–मनिआर्डरकी दर १०)रुपये तक =),२५)तक ।), ३५) तक ।=), ५०) तक॥), १००) की १) है।

१०–सर्टिफिकेटका नियम–बिना रजिष्ट्रीका

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

कुछ जानने योग्य बातें

रेल–रेल-यात्रामें प्रत्येक १०० मीलके बाद २४ घंटे तक, कहीं भी ठहरकर, यात्री फिर उसी टिकटसे आगे जा सकता है।

२–बिछौनेको छोड़कर, पहिले दरजेका यात्री १॥ मन, दूसरेका १ मन, डेवढ़ेका ३० सेर और तीसरेका २५ सेर असबाव बिना किराये साथ ले जा सकता है। ज्यादा हो तो तौलाकर महसूल दे देना चाहिये।

३–रेल कर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता। अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा पढ़ी करके वापस ले सकते हैं।

४–यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे, तो उसी लाइनके डिस्ट्रिक्टट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट या ट्राफिक मैनेजरसे शिकायत करनी चाहिये।

डाक–२॥तोलेतककी चिट्ठीपर-)का, इसके बाद प्रति २॥ तोले या उससे कम पर भी -) का टिकट अधिक लगाना पड़ता है। भारत, बर्मा और सीलोन तीनोंके लिये एक ही नियम है।

२–पोस्टकार्डपर दाहिनी तरफके आधेमें पानेवालेके पतेके सिवा और कुछ भी न लिखना चाहिये।

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

किसीको कष्ट न देना, यथार्थ और प्रिय भाषण, अपना अपकार करनेवालेपर भी क्रोधका न होना, कर्मोंमें कर्तापनके अभिमानका त्याग, अन्तःकरणकी उपरामता अर्थात् चित्तकी चञ्चलताका अभाव, किसीकी भी निन्दादि न करना, सब भूत प्राणियोंमें हेतुरहित दया, इन्द्रियोंका विषयोंके साथ संयोग होनेपर भी आसक्तिका न होना, कोमलता, लोक और शास्त्रके विरुद्ध आचरणमें लज्जा और व्यर्थ चेष्टाओंका अभाव।" गी० १६।२

५—"तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर-भीतरकी शुद्धि, किसीमें भी शत्रु-भावका न होना, अपनेमें पूज्यताके अभिमानका अभाव। हे अर्जुन! यह सब दैवी-सम्पदाको प्राप्त हुए पुरुषके लक्षण हैं।" गी० १६।३

६—"काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकारके नरकके द्वार आत्माका नाश करनेवाले हैं अर्थात् अधोगतिमें ले जानेवाले हैं। इससे इन तीनोंको त्याग देना चाहिए।" गी० १६।२१

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

इन्द्रियोंसहित शरीरको वशमें किये हुए, मेरेमें दृढ़ निश्चयवाला है, वह मेरेमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझे प्रिय है।"—गीता अ० १२। १३-१४

२—"जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोच करता है, न कामना करता है और जो शुभ-अशुभ सम्पूर्ण कर्मोंके फलका त्यागी है, वह भक्तियुक्त पुरुष मुझे प्रिय है"—गीता १२। १७

३—"सर्वथा भयका अभाव, अन्तःकरणकी अच्छी प्रकारसे स्वच्छता, तत्त्वज्ञानके लिये ध्यानयोगमें निरन्तर दृढ़ स्थिति, सात्त्विक दान, इन्द्रियोंका दमन, भगवत्-पूजा और अग्निहोत्रादि उत्तम कर्मोंका आचरण, वेद-शास्त्रोंके पठन-पाठनपूर्वक भगवत्के नाम और गुणोंका कीर्तन, स्वधर्म-पालनके लिये कष्ट सहन करना, शरीर और इन्द्रियोंसहित अन्तःकरणकी सरलता।" गी० १६।१

४—"मन, वाणी, शरीरसे किसी प्रकार भी

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

शान्ति-सन्देश !

सारे संसारको शान्ति, समत्व और एकत्वका उपदेश देनेवाली दिव्य-दुन्दुभि, विश्व-ज्ञान-प्रबोधिनी गुटिका, मोहन-मुरलीसे मुखरित सर्वोपनिषत्-सार-संगीत, सर्वशास्त्र-मयी, भगवान्‌की साक्षात् वाङ्मयी-मूर्ति ऐसे भावी विश्व-धर्मके एकमात्र सर्वोत्तम धर्मग्रन्थ–

'श्रीमद्भगवद्गीता'

का अभ्यास, पठनपाठन प्राणीमात्रको अवश्य ही करना चाहिये।

उसकी दिव्य-वाणीका नमूना देखिये।

१–"जो सब भूतोंमें द्वेषभावसे रहित, स्वार्थरहित सबका प्रेमी, हेतुरहित दयालु, ममतासे रहित, अहंकारसे रहित, सुख-दुःखोंकी प्राप्तिमें सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करनेवालेको भी अभय देनेवाला है तथा जो ध्यानयोगमें युक्त हुआ निरन्तर :लाभ-हानिमें सन्तुष्ट, मन और

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

दुनिया दोषी बतलावे तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु मनमें दोष रखकर बाहरसे निर्दोष कहलाना हानिकारक है।

(१८) चाहे जैसी प्रतिकूल, विकट और विपत्तिकी अवस्थामें भी जो न घबराकर अपने साधु-प्रयत्नको जारी रखता है और भगवान्‌से प्रार्थना करता है, उसकी प्रार्थना भगवान् अवश्य सुनते हैं।

(१९) संसारका काम करते हुए उस कामका बुरा मालूम होना केवल वैराग्य नहीं है, इसमें हरामीपन भी है, यदि केवल वैराग्य ही होता तो संसारका कुछ भी काम न करनेके समय निरन्तर भजन ध्यान ही हुआ करता।

(२०) मनुष्यको समयकी कीमत जाननी चाहिये, समय क्षण क्षणमें घट रहा है। मनुष्य-शरीरका समय अमूल्य है, इसे भजन, ध्यान, सत्संगरूप अमूल्य कामोंमें ही लगाना चाहिये। जिनका समय केवल पेट-पालनेमें ही जाता है वे तो महान्‌पशु हैं।

(२१) धनकी प्राप्तिके उद्देश्यसे काम करनेपर मन संसारमें रम जाता है, इसलिये सांसारिक कार्य बड़ी सावधानीसे करना चाहिये। इस प्रकारसे भी अधिक कार्य नहीं करना चाहिये, कार्यकी अधिकतासे उद्देश्यमें परिवर्तन हो जाता है।

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

शरीरका अंश देकर भी उस छेदको भर देता है। इसी प्रकार दूसरेके छिद्रोंको भर देनेके लिये अपना शरीर अर्पण कर दो, पर छिद्र न करो, धागा बनो सुई नहीं।

(१४) अपने हृदयको सदा टटोलते रहना ही साधकका कर्तव्य है, उसमें घृणा, द्वेष, हिंसा और वैर, मान, अहंकार, कामना आदि अपना डेरा न जमा लें! बुरा कहलाना अच्छा है परन्तु अच्छा कहलाकर बुरा बने रहना बहुत ही बुरा है।

(१५) किसीके मुंहसे कोई बात अपने विरुद्ध सुनते ही उसे अपना विरोधी मत मान बैठो, विरोधका कारण ढूँढ़ो और उसे मिटानेकी सच्चे हृदयसे चेष्टा करो, हो सकता है तुममें ही कोई दोष हो, जो तुम्हें अब तक न दीख पड़ा हो अथवा वही बिना बुरी नियतके भी किसी परिस्थितिके प्रवाहमें बह गया हो, ऐसी स्थितिमें शान्ति और प्रेमसे काम लेना चाहिये।

(१६) कर्तव्यमें प्रमाद न करना ही सफलताकी कुंजी है और उसीपर परमात्माकी कृपा होती है, आलसी और कर्तव्यविमुख लोग उसके योग्य नहीं।

(१७) बाहरसे निर्दोष कहलानेका प्रयत्न न कर मनसे निर्दोष बनना चाहिये। मनसे निर्दोष मनुष्यको

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

(७) भक्तका हृदय ही जब पापोंसे शून्य होता है तब उसकी शारीरिक क्रियाओंमें तो पापको स्थान ही कहाँ है ? जो रातदिन पापमें लगे रहकर भी अपनेको भक्त समझते हैं वे या तो जगत्‌को ठगनेके लिये ऐसा करते हैं अथवा स्वयं अपनी विवेकहीन बुद्धिसे ठगे गये हैं।

(८) भक्त और साधु बनना चाहिये, कहलाना [illegible] लिये भक्त बनना चाहते हैं, वे पापोंसे ठगे जाते हैं, ऐसे लोगोंपर सबसे पहला आक्रमण दम्भका होता है।

(९) भक्ति अपने सुखके लिये हुआ करती है, दुनियाको दिखलानेके लिये नहीं, जहाँ दिखलानेका भाव है वहीं कृत्रिमता है।

(१०) शरीरका नाश तो होगा ही फिर कोई ऐसी मौत क्यों न ढूँढ़ लो, जिससे किसी दूसरेका उपकार हो।

(११) जो आत्माको अमर नहीं जानते, वही मृत्युसे काँपा करते हैं।

(१२) पराये पापोंके प्रायश्चित्तकी चिन्ता न करो, पहिले अपने पापोंका प्रायश्चित्त करो।

(१३) दूसरेके पापोंको प्रकाश करनेके बदले, सुहृद् बनकर उनको ढको, सुई छेद करती है, पर धागा अपने

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

याद रखनेकी बातें

(१) दुःख मनुष्यत्वके विकाशका साधन है। सच्चे मनुष्यका जीवन दुःखमें ही खिल उठता है। सोनेका रङ्ग तपानेपर ही चमकता है।

(२) सर्वत्र परमात्माकी मधुर मूर्ति देखकर आनन्दमें मग्न रहो, जिसको उसकी मूर्ति सब जगह दीखती है वह तो स्वय[redacted]

(३) शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामनारूप डाकिनीका आवेश उतरा कि शान्तिके दर्शन हुए। वैराग्यके महामन्त्रसे कामनाको भगा दो, फिर देखो सर्वत्र शान्तिकी शान्त मूरति।

(४) परमात्मापर विश्वास रखकर अपनी जीवन-डोर उसके चरणोंमें बाँध दो, फिर निर्भयता तो तुम्हारे चरणोंकी दासी बन जायगी।

(५) बीते हुएकी चिन्ता न करो, जो अब करना है उसे विचारो और विचारो यही कि बाकीका सारा जीवन केवल उस परमात्माके ही काममें आवे।

(६) भक्त वही है जिसका अन्तःकरण समस्त पापतापोंसे रहित होकर केवल अपने इष्टदेव परमात्मा-का नित्य निकेतन बन गया है।

Swami Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delh

राम भजनमें एकसे, वर्षं चार नर-नार।
जड़ मूरख भी हों तुरत, भवसागरसे पार॥

—रामदासजी

'सब सुखदाता राम हैं, दूसर नाहिंन कोइ।
कहु नानक सुनु रे मना! तेहि सुमिरत गति होइ॥'

—गुरु नानक

'...जो शान्तिकी खोजमें है, उसको तो अवश्य राम-नाम पारसमणि बना सकता है। ...देहधारीके लिये नामका सहारा अत्यावश्यक है। ...नाम-महिमा बुद्धिवादसे सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धासे अनुभवसाध्य है।'

—महात्मा गांधी

'...व्याकुल होकर उसका नाम अवश्य लेते रहो। बस, नामकी शक्तिसे अपने आप निरपराध बन जाओगे, कुछ आँसू तो अवश्य खर्च करने पड़ेंगे। ...नामके प्रतापसे ही भक्तिका आविर्भाव होता है। ...पर सावधान! अपना भजन दुनियाको दिखाते मत फिरना।'

—श्रीभूपेन्द्रनाथ संन्याल

mi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGan

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Dell

हरिनामसे परम-शान्ति

रसना सांपिनि, बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम।
तुलसी प्रेम न रामसों, ताहि बिधाता बाम॥
राम नाम रति राम गति, राम नाम बिस्वास।
सुमिरत शुभ मंगल कुशल, चहुँ दिशि तुलसीदास॥
प्रीति प्रतीति सुरीतिसों, राम नाम जपु राम।
तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिणाम॥
राम नाम अवलम्ब बिनु, परमारथकी आस।
बरषत बारिद बूंद गहि, चाहत चढ़न अकास॥

—तुलसीदासजी

नारायण हरि भजनमें, तू जिन देर लगाय।
का जाने या देरमें, श्वास रहे की जाय॥
नारायण तू भजन कर, कहा करेंगे कूर।
अस्तुति निन्दा जगत्की, दोउनके शिर धूर॥

—नारायणस्वामी

राम नाम केवल जपै, करै न कछु श्रम और।
सदा सम्हालें राम तेहिं, रक्षक प्रभु सब ठौर॥

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

Vidwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Delhi

२ क्षमा-अपना अपराध करनेवालेको किसी प्रकार भी दण्ड देनेका भाव न रखना, ३ दम-मनको वशमें रखना, ४ अस्तेय-किसी प्रकार भी चोरी न करना, ५ शौच-बाहर और भीतरकी पवित्रता, ६ इन्द्रिय-निग्रह-सब इन्द्रियोंका वशमें होना, ७धी-परमात्मामें लगनेवाली सात्त्विक बुद्धि, ८ विद्या-अध्यात्मविद्या, ९ सत्य-अन्तःकरण और इन्द्रियोंद्वारा जैसा निश्चय किया गया हो, वैसाका वैसा ही प्रिय शब्दोंमें कहना, १० अक्रोध-क्रोधका कारण उपस्थित होनेपर भी क्रोध न करना।

यम नियम ये हैं-

१ अहिंसा-मन, वाणी, शरीरसे किसीको किसी प्रकार कष्ट न पहुंचाना, २ सत्य, ३ अस्तेय, ४ ब्रह्मचर्य-आठ प्रकारके मैथुनोंका त्याग करना, ५ अपरिग्रह-ममत्व बुद्धिसे संग्रह न करना, ६ शौच, ७ सन्तोष-तृष्णाका सर्वथा अभाव, ८ तप-स्वधर्म पालनके लिये कष्ट सहना, ९स्वाध्याय-अध्यात्मग्रन्थों-का अध्ययन और भगवान्‌का नाम-गुण कीर्तन करना, १०ईश्वरप्रणिधान-भगवान्‌को आत्मसमर्पण करना।

Shri Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGangotri

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य

हमारा उद्देश्य है सच्चे सुखको पाना, सच्चा सुख एक परमात्माके सिवा और किसी भी वस्तुमें नहीं है। जब परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है तब जगत्की सब वस्तुओंमें भी परमात्मा व्याप्त दीखते हैं, इस अवस्थामें भक्तको सारा ही जगत् सुखमय प्रतीत होता है। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये चोरी, व्यभिचार, झूठ, कपट, छल, हिंसा, अभक्ष्यभोजन और प्रमाद आदि शास्त्र-विरुद्ध नीच कर्मोंको मन, वाणी और शरीरसे त्यागकर, मनु-कथित दश धर्म अथवा पतञ्जलि-कथित दश यम-नियमादिका पालन करते हुए अपने अपने मतके अनुसार भगवान्को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, एकमात्र जगदीश्वर जानकर उनके साकार या निराकार रूपकी भक्ति करनी चाहिये। और साथ ही वर्णाश्रमके अनुसार अपने सारे कर्म निष्काम-भावसे भगवान्के लिये उनकी आज्ञा समझकर करने चाहिये! सर्वव्यापी भगवान्की अपने स्वकर्मोंके द्वारा निष्काम-भावसे पूजा करना ही जीवनके इस उद्देश्यकी पूर्तिका सहज उपाय है।

मनु महाराजके बतलाये हुए दश धर्म—

१ धृति—भारी विपत्तिमें भी विचलित न होना,

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New De

प्रथम वर्ष सं० १९८४, ५०००
द्वितीय वर्ष सन् १९२८, ५०००
तृतीय वर्ष सन् १९२९, ८०००
चतुर्थ वर्ष सन् १९३०, १००००
पञ्चम वर्ष सन् १९३१, ७२५०

मुद्रक तथा प्रकाशक
घनश्यामदास
गीताप्रेस, गोरखपुर

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New De

गीता-दैनन्दिनी

[गीताडायरी]

सन् १९३१ ई०

मूल्य ।) सजिल्द ।-)

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

सन् १९३१	जनवरी					फरवरी						मार्च					
रविवार	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	०	१	८	१५	२२	२९	०
सोमवार	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	०	२	९	१६	२३	३०	०
मंगलवार	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०	३	१०	१७	२४	३१	०
बुधवार	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	४	११	१८	२५	०	०
बृहस्पतिवार	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	५	१२	१९	२६	०	०
शुक्रवार	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	६	१३	२०	२७	०	०
शनिवार	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	०	७	१४	२१	२८	०	०

	अप्रैल					मई						जून					
रविवार	०	५	१२	१९	२६	०	३	१०	१७	२४	३१	०	७	१४	२१	२८	०
सोमवार	०	६	१३	२०	२७	०	४	११	१८	२५	०	१	८	१५	२२	२९	०
मंगलवार	०	७	१४	२१	२८	०	५	१२	१९	२६	०	२	९	१६	२३	३०	०
बुधवार	१	८	१५	२२	२९	०	६	१३	२०	२७	०	३	१०	१७	२४	०	०
बृहस्पतिवार	२	९	१६	२३	३०	०	७	१४	२१	२८	०	४	११	१८	२५	०	०
शुक्रवार	३	१०	१७	२४	०	१	८	१५	२२	२९	०	५	१२	१९	२६	०	०
शनिवार	४	११	१८	२५	०	२	९	१६	२३	३०	०	६	१३	२०	२७	०	०

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

संवत् १६८७ माघ शुक्लपक्ष

२	३	४	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	❀
मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	❀
अ	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	❀

संवत् १६८७ फाल्गुन शुक्लपक्ष

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
श	पू	उ	रे	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	पू

संवत् १६८८ चैत्र शुक्लपक्ष

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	❀
शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	❀
उ	रे	अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	❀

संवत् १६८८ वैशाख शुक्लपक्ष

१	१	२	३	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा

संवत् १६८८ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	❀
चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	❀
कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	ऽनु	❀

संवत् १६८८ प्रथम आषाढ़ शुक्लपक्ष

३०	१	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं
मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	ऽनु	ज्ये	मू	पू

i Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

idwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New Del

संवत् १९८७ माघ कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
वार	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	[illegible]
नक्षत्र	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू	पू

संवत् १९८७ फाल्गुन कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वार	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं
नक्षत्र	आ	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र

संवत् १९८७ चैत्र कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४
वार	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु
नक्षत्र	उ	ह	चि	स्वा	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	श

संवत् १९८८ वैशाख कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वार	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु
नक्षत्र	ह	चि	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	श	पू	उ

संवत् १९८८ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वार	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
नक्षत्र	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे	अ	अ

संवत् १९८८ प्रथम आषाढ़ कृष्णपक्ष

[illegible]	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध	श	पू	पू	उ	रे	अ	भ	[illegible]

hi Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitization eGa

[illegible]dwat Varkala Shri Radha Krishna Dharmika Samsthan, New De[illegible]

भारत [illegible]

[illegible]ध्य[illegible]

सन् १[illegible]५[illegible] ई०

[illegible]Amrit Vagbhav Acharya Collection, New Delhi. Digitizatio[illegible] eGa[illegible]